RNI-MPHIN/2018/75526

वर्ष-08 | अंक-277 | पृष्ठ 08 | मूल्य 02/-

दैनिक

कालप्रिया

सच वही जो दिखे...

भोपाल, मंगलवार

14 जुलाई 2026

Email.kalpriyanews72@gmail.com

ÃrÿÀç कृष्ण पक्ष-3Ì&ÃõÀýQö', विक्रम संवत् 208V

पेज-6

3डी मैपिंग से हुई पहचान

धार की जिस मूर्ति को सब समझते थे सरस्वती, वह देवी गायत्री की

भोपाल, ब्यूरो

मध्य प्रदेश के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्र स्थित धार से प्राप्त 12वीं शताब्दी की लाल बलुआ पत्थर की एक प्रसिद्ध प्रतिमा की पहचान को लेकर करीब 900 वर्षों से चला आ रहा भ्रम अब समाप्त हो गया है। लंबे समय तक विद्वानों द्वारा इस प्रतिमा को देवी सरस्वती के रूप में माना जाता रहा, लेकिन नए वैज्ञानिक अध्ययन के बाद इसे देवी गायत्री की प्रतिमा के रूप में चिन्हित किया गया है। भोपाल स्थित राज्य संग्रहालय में संरक्षित इस प्रतिमा का हाल ही में डिजिटल डॉक्यूमेंटेशन और हाई-रिजॉल्यूशन 3å¸मैपिंग की गई। इस विस्तृत अध्ययन के दौरान पुरातत्वविदों को प्रतिमा से जुड़े ऐसे आइकनोग्राफिक संकेत मिले, जो पहले कभी स्पष्ट रूप से सामने नहीं आए थे। विशेष रूप से वीणा की अनुपस्थिति और अन्य कलात्मक विशेषताओं ने इसकी वास्तविक पहचान स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शिल्पशास्त्र से मिला पहचान का आधार

पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय संचालनालय से जुड़े पुरातत्वविद् रमेश यादव के अनुसार, इस प्रतिमा की विशेषताएं शिल्पशास्त्रों में वर्णित देवी गायत्री के स्वरूप से मेल खाती हैं। उनके मुताबिक, प्रतिमा के स्वरूप और उसमें मौजूद प्रतीकों का अध्ययन इस निष्कर्ष का प्रमुख आधार बना है।

धार भोजशाला मामले पर सुनवाई के लिए तैयार सुप्रीम कोट

हाई कोर्ट फैसले के खिलाफ दायर याचिकाएं सुनेगा सीजेआई ने कहा- याचिकाओं की कमियां सुधारें

भोपाल। मध्य प्रदेश के धार जिले के ऐतिहासिक और विवादित भोजशाला परिसर मामले में एक बड़ा कानूनी मोड़ आया है। सुप्रीम कोर्ट सोमवार को मध्य प्रदेश हाई कोर्ट के उस फैसले को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करने के लिए तैयार हो गया है, जिसमें इस विवादित परिसर को देवी सरस्वती का मंदिर घोषित किया गया था।

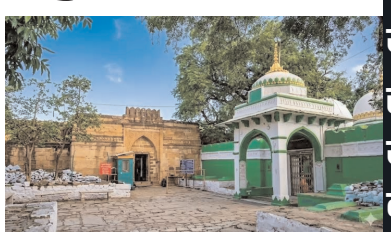

याचिकाओं की कमियों को दूर करें

मामले की गंभीरता को देखते हुए मुस्लिम पक्ष की ओर से पेश वरिष्ठ वकील हुज़ेफ़ा अहमदी और वकील निज़ाम पाशा ने अदालत से इसे तुरंत सूचीबद्ध करने का अनुरोध किया। इस पर मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने वकीलों को याचिकाओं में मौजूद हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ मुस्लिम पक्ष (याचिकाकर्ताओं) की ओर से कई याचिकाएं एक साथ (समूह में) दायर की गई हैं।

हाई कोर्ट ने रद्द किया था 21 साल पुराना आदेश

इसी साल 15 मई 2026 को मध्य प्रदेश हाई कोर्ट की इंदौर पीठ ने इस मामले में एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया था। हाई कोर्ट ने विवादित भोजशाला-कमाल मौला मस्जिद परिसर को स्पष्ट रूप से देवी सरस्वती (वाग्देवी) का मंदिर माना था। इसके साथ ही कोर्ट ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अप्रैल 2003 के उस 21 साल पुराने आदेश को पूरी तरह से रद्द कर दिया था।

जंग की आग: पिघल रहे सिल्वर-गोल्ड?

165 दिन में चांदी 1.69 लाख सोना 34 हजार रुपए तक टूटा

नई दिल्ली। ईरान-अमेरिका युद्ध की आग में सोना-चांदी भी पिघल रहे हैं। घरेलू वायदा बाजार में सोमवार, 13 जुलाई को एमसीएक्स पर गोल्ड 141977 रुपए प्रति 10 ग्राम पर था। यह पिछले बंद की तुलना में 1578 रुपए सस्ता है। वहीं चांदी 217400 रुपए प्रति किलो पर खुली। इसमें 5280 रुपए की भारी गिरावट है।

ऐसे आई गिरावट

	31/12/25	29/01/26	आज	गिरावट
सोना	1.33 लाख	1.76 लाख	1.42 लाख	34 हजार
चांदी	2.30 लाख	3.86 लाख	2.17 लाख	1.69 लाख

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव 3.0 का किया शुभारंभ

एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव 3.0 में लगभग 40 हज़ार करोड़ के निवेश हुए प्राप्त: मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव 3.0 में 51 प्रमुख गतिविधियाँ संपन्न हुई इन गतिविधियों से लगभग 40 हजार करोड़ रूपये का निवेश और 34 हजार से अधिक रोजगार अवसरों का मार्ग प्रशस्त्र हुआ है। एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव 3.0 की यात्रा में राज्य सरकार ने अपने सभी संकल्पों को पूरा किया है। पिछले 2 टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव के माध्यम से प्रदेश को 46 हजार करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं और ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2025 के बाद से टेक्नोलॉजी क्षेत्र में 12 हजार करोड़ रुपये से अधिक का निवेश धरातल पर आया है।

28 हजार 200 करोड़ से अधिक की विदेशी निवेश परियोजनाएँ धरातल पर साकार

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि मध्यप्रदेश में विदेशी निवेश अब केवल एमओयू तक सीमित नहीं रहकर धरातल पर साकार हो रहा है। स्पेन, कनाडा, अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, जापान, दक्षिण कोरिया, आयरलैंड और इंडो-जर्मन सहयोग सहित 8 देशों की 10 प्रमुख कंपनियों की 28 हजार 200 करोड़ रुपये से अधिक की निवेश परियोजनाएँ प्रदेश में ग्राउंडब्रेकिंग चरण में हैं। इनमें स्पेन की सबमर इंडिया प्रा.लि. द्वारा भोपाल में लगभग 20 हजार करोड़ रुपये के एआई-रेडी डेटा सेंटर की स्थापना, कनाडा की मैक्केन फूड की 3,800 करोड़ रुपये की फूड प्रोसेसिंग इकाई, यूनाइटेड किंगडम की हेलियन (जीएसके) की 3 हजार करोड़ रुपये की फार्मास्यूटिकल्स परियोजना, जापान की टोपान स्पेशियलिटी फिल्म्स की 1,100 करोड़ रुपये की स्पेशियलिटी फिल्म्स इकाई शामिल है।

सबमर ग्रुप 2 बिलियन डॉलर से बनाएगा एआई-रेडी डेटा सेंटर

स्पेन का सबमर ग्रुप मध्यप्रदेश में 2 बिलियन अमेरिकी डॉलर (लगभग 19,000 करोड़ रुपये) के निवेश से एआई-रेडी डेटा सेंटर स्थापित करेगा। सबमर इंडिया प्राइवेट लिमिटेड के सीईओ श्री पैट्रिक स्मेल्ट्स ने एमपी टेकग्रोथ कॉन्क्लेव 3.0 में कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश भारत और वैश्विक उद्योगों के बीच रणनीतिक साझेदारी का सशक्त केंद्र बनकर उभरा है। उन्होंने कहा कि एमपी टेक ग्रोथ कॉन्क्लेव केवल निवेश आकर्षित करने का मंच नहीं, बल्कि राज्य सरकार की दीर्घकालिक विकास संबंधी दूरदर्शी सोच का भी परिचायक है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष जुलाई 2025 में स्पेन के बार्सिलोना में मुख्यमंत्री डॉ. यादव के साथ हुई सकारात्मक चर्चाओं और निवेश समझौतों के परिणामस्वरूप आज प्रदेश में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डेटा सेंटर और आईटी क्षेत्र में निवेश निरंतर बढ़ रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की प्रमुख घोषणाएं

इंदौर के सुपर कॉरिडोर क्षेत्र में 3 एकड़ में अत्याधुनिक आईटी पार्क विकसित किया जाएगा। लगभग 3 लाख वर्ग फीट निर्मित क्षेत्र वाले इस परिसर में जीसीसी, आईटी एवं डिजिटल सेवा कंपनियों के लिए विश्वस्तरीय कार्यालय उपलब्ध कराए जाएँगे।प्रदेश में सेमीकंडक्टर सेंटर ऑफ एक्सीलेंस की स्थापना की जाएगी, जो कौशल विकास, अनुसंधान, उद्योग सहयोग एवं क्षमता निर्माण को प्रोत्साहित करेगा। भोपाल आईटी पार्क में नया आईटी टॉवर विकसित किया जाएगा, जिससे जीसीसी, आईटी एवं डिजिटल सेवा कंपनियों के लिए अतिरिक्त प्लग-एंड-प्ले कार्यालय उपलब्ध कराए जाएँगे।

रूस का सबसे सीक्रेट प्लेन ईरान पहुंचा

हवा में रहकर जंग कंट्रोल कर सकता है अमेरिका का 24 घंटे में 140 ईरानी ठिकानों पर हमला

तेल अवीव। अमेरिका, ईरान और इस्राइल के बीच तनाव लगातार बढ़ रहा है। इसी बीच रूस का एक खास विमान के ईरान पहुंचने की खबर सामने आई है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, रूस ने अपना TU-214PU एयरबोर्न कमांड एयरक्राफ्ट तेहरान भेजा है। यह कोई आम विमान नहीं है। इसे युद्ध या बड़े संकट के समय देश की कमान संभालने के लिए बनाया गया है। इसी वजह से इसे कई बार डूम्सडे प्लेन यानी प्रलय का विमान भी कहा जाता है। रक्षा मामलों के जानकारों का मानना है कि इस कदम से रूस ने दुनिया, खासकर अमेरिका को यह संदेश देने की कोशिश की है कि वह ईरान के साथ खड़ा है। हालांकि रूस ने इस मिशन को लेकर आधिकारिक तौर पर ज्यादा जानकारी नहीं दी है।

ईरान का पलटवार, जंग पूरे क्षेत्र में फैली

खामेनेई की मौत के बाद ईरान ने मिसाइल और ड्रोन से जवाबी हमले शुरू किए। इस्राइल के अलावा खाड़ी क्षेत्र में मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों को भी निशाना बनाया गया। इसी दौरान ईरान ने दुनिया के सबसे अहम समुद्री रास्तों में से एक होर्मुज जलडमरूमध्य पर दबाव बढ़ाया, जिससे वैश्विक तेल बाजार में हलचल मच गई। लगातार हमलों के बीच अमेरिका, ईरान और मध्यस्थ देशों की कोशिशों से अप्रैल में अस्थायी युद्धविराम हुआ।

झमाझम बारिश की वापसी की पटकथा लिखेगा बंगाल की खाड़ी का नया सिस्टम

वर्षा चक्र कमजोर: अल नीनो की धमक 'बावी' की चाल और मानसून हुआ बेहाल

शुष्क हवाओं ने थामी मानसून की रफ्तार, 18-25 जुलाई में वापसी के मिल रहे संकेत

विशेष प्रतिनिधि ■ भोपाल

पूर्वी भारत को छोड़कर मध्यप्रदेश सहित देश के अधिकांश हिस्सों में मानसून फिलहाल 'ब्रेक फेज' में है। लगातार सक्रिय रहने वाला वर्षा चक्र कमजोर पड़ गया है और कई क्षेत्रों में बारिश की गतिविधियां थम-सी गई हैं। इसकी मुख्य वजह उत्तर-पश्चिम से आ रही शुष्क हवाएं, अल नीनो का बढ़ता प्रभाव और पश्चिमी प्रशांत महासागर में सक्रिय टाइफून 'बावी' को माना जा रहा है। हालांकि मौसम विशेषज्ञों को उम्मीद है कि यदि पश्चिमी प्रशांत में विकसित हो रही मौसम प्रणालियां बंगाल की खाड़ी तक पहुंचती हैं, तो 18 से 25 जुलाई के बीच मानसून एक बार फिर सक्रिय हो सकता है।

मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून की कोर हीटिंग कमजोर पड़ने के साथ ही पश्चिमी प्रशांत में सक्रिय टाइफून बावी का प्रभाव बढ़ने लगा है। यही कारण है कि देश के बड़े हिस्से में मानसून ब्रेक की स्थिति बनी हुई है। विशेषज्ञों का कहना है कि प्रशांत महासागर और भारतीय मानसून के बीच ऊर्जा और ऊष्मा का आदान-प्रदान अत्यंत जटिल होता है। ऐसे में यह अनुमान लगाना अभी जल्दबाजी होगी कि बावी का प्रभाव मानसून ब्रेक की अवधि कितनी बढ़ाएगा। फिलहाल विस्तारित अवधि के मौसम मॉडल और वैश्विक पूर्वानुमानों का लगातार विश्लेषण किया जा रहा है।

मौसम मॉडल और वैश्विक पूर्वानुमानों का विश्लेषण

तो दोबारा बढ़ सकती है नमी की आपूर्ति

इस बीच राहत की उम्मीद भी बनी हुई है। पश्चिमी प्रशांत महासागर में कई निम्न दाब और चक्रवाती परिसंचरण अनुकूल स्थिति में विकसित हो रहे हैं। यदि इनमें से कुछ सिस्टम बंगाल की खाड़ी तक पहुंचते हैं या वहां नए निम्न दबाव क्षेत्र के निर्माण में मदद करते हैं, तो नमी की आपूर्ति दोबारा बढ़ सकती है। इससे 18 से 25 जुलाई के बीच मानसून के पुनर्जीवित होने की संभावना बन रही है। हालांकि इस स्थिति के बनने में अभी लगभग एक सप्ताह का समय है, इसलिए फिलहाल इसे संभावित परिदृश्य के रूप में ही देखा जा रहा है। भारत मौसम विज्ञान विभाग के विस्तारित पूर्वानुमान भी इसी ओर संकेत कर रहे हैं। विभाग के अनुसार मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में 20 जुलाई के बाद मानसूनी गतिविधियों में फिर से तेजी आने की संभावना है। यदि बंगाल की खाड़ी में अनुकूल मौसम प्रणाली विकसित होती है, तो प्रदेश में वर्षा का नया दौर शुरू हो सकता है।

60 से 70 प्रतिशत हिस्से में दिख रहा हवाओं का असर

मौसम विशेषज्ञों के अनुसार वर्तमान में उत्तर-पश्चिम दिशा से आने वाली शुष्क हवाएं अरब सागर, मध्य भारत और दक्षिण भारत तक फैल चुकी हैं। इनका प्रभाव पश्चिम, मध्य और दक्षिण भारत के लगभग 60 से 70 प्रतिशत हिस्से पर दिखाई दे रहा है। शुष्क वायु के इस व्यापक प्रवेश ने वातावरण में नमी घटा दी है। परिणामस्वरूप बादलों का विकास सीमित हो गया है, आसमान अपेक्षाकृत साफ रहने लगा है और अधिकांश क्षेत्रों में वर्षा की गतिविधियां कमजोर पड़ गई हैं।

वैज्ञानिकों की नजर बंगाल की खाड़ी पर

इसके विपरीत, पूर्वोत्तर भारत अभी भी अपेक्षाकृत बेहतर वर्षा प्राप्त कर रहा है। वहां मानसूनी ट्रफ की अनुकूल स्थिति के कारण नमी बनी हुई है, जिससे बारिश का सिलसिला जारी है। अगले कुछ दिन भारतीय मानसून की दिशा तय करने वाले साबित हो सकते हैं। मौसम वैज्ञानिकों की नजर अब पूरी तरह बंगाल की खाड़ी और पश्चिमी प्रशांत महासागर में बनने वाली नई मौसम प्रणालियों पर टिकी है, क्योंकि इन्हीं के आधार पर देश में मानसून की अगली सक्रिय अवस्था निर्धारित होगी।

विशेष तथ्य

एक जून से 11 जून तक की स्थिति में मध्यप्रदेश,उत्तरप्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्य में बारिश की स्थिति

मध्यप्रदेश

कुल बारिश- 241. 3 मिलीमीटर सामान्य या इससे अधिक/ कम- एक प्रतिशत अधिक

जिलों की स्थिति

- 44 जिलों में सामान्य या इससे अधिक बारिश
- 11 जिलों में सामान्य से कम बारिश

छत्तीसगढ़

कुल बारिश-252.9 मिलीमीटर सामान्य या इससे अधिक/ कम- 21 प्रतिशत कम

जिलों की स्थिति-

- 18 जिलों में सामान्य या इससे अधिक बारिश
- 15 जिलों में सामान्य से कम या बहुत कम बारिश

उत्तरप्रदेश

कुल बारिश- 159.6 मिलीमीटर सामान्य या इससे अधिक/कम बारिश- 16 प्रतिशत कम

जिलों की स्थिति

- 37 जिलों में सामान्य या इससे अधिक बारिश
- 38 जिलों में सामान्य से कम बारिश

बीजेपी की सभा में नरोत्तम के आंसू छलके

बोले- आशुतोष को जिताने एक-एक घर के सामने शीश नवाऊंगा, हम सब साथ खड़े

भोपाल। मध्य प्रदेश के दतिया उपचुनाव को लेकर भाजपा प्रत्याशी आशुतोष तिवारी का नामांकन दाखिल हो गया। सोमवार को भाजपा के दिग्गजों की मौजूदगी में ये नामांकन भरा गया है। मंच पर उस वक्त हर किसी की नजर नरोत्तम मिश्रा पर टिक गई, जब वे भावुक हो गए और रोने लगे। पास बैठे सीएम मोहन यादव और प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने उन्हें संभाला। बता दें कि भाजपा प्रत्याशी आशुतोष तिवारी ने दतिया उपचुनाव के लिए अपना नामांकन दाखिल कर दिया है। इस दौरान उनके साथ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल, पूर्व गृह मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा मौजूद रहे। आशुतोष तिवारी के नामांकन के बाद दतिया के किला चौक पर भाजपा की सभा आयोजित की गई। इसमें सभी शीर्ष नेता मौजूद रहे। सभा में प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि भाजपा की जीत दतिया से पक्की है। वहीं पूर्व गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा ने कहा कि कांग्रेस ने भाजपा में फूट की बात कही है, लेकिन इस मौके पर हम सब एक साथ हैं।

टिकट कटते ही मचा था बवाल

गौरतलब है कि 10 जुलाई को दतिया विधानसभा उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी के नाम की घोषणा होते ही जिला रणक्षेत्र में बदल गया था। पार्टी द्वारा आशुतोष तिवारी के नाम पर मुहर लगाते ही पूर्व गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा के समर्थकों ने हाईवे पर मोर्चा खोल दिया था। करीब 12 घंटे तक चले इस हंगामे में पुलिस और प्रशासन को आंसू गैस चलानी पड़ी थी। 11 जुलाई सुबह भारी पुलिस बल मौके पर पहुंचा।

ट्रैक्टर ने ऑटो को टक्कर मारी, 3 की मौत

मुरैना में मंदिर से घर लौट रहे थे; 5 घायलों में 3 की हालत गंभीर

मुरैना। मुरैना जिले के माता बसैया थाना क्षेत्र में पत्थर लोड ट्रैक्टर-ट्रॉली ने श्रद्धालुओं से भरे ऑटो रिक्शा को टक्कर मार दी। हादसे में महिला और दो पुरुषों समेत तीन की मौके पर मौत हो गई। मरने वालों में ऑटो ड्राइवर भी शामिल है। ऑटो में कुल 8 लोग सवार थे। 5 लोग घायल हैं। तीन की हालत गंभीर बताई जा रही है। जानकारी के मुताबिक ये लोग बानमौर विजय पुरा से माता बसैया के पास स्थित भूमिया बाबा मंदिर दर्शन के लिए गए थे। लौटते समय पारासर की तेवरिया के पास हादसा हो गया। टक्कर इतनी तेज थी कि ऑटो के परखच्चे उड़ गए। घटना की सूचना मिलते ही माता बसैया थाना पुलिस मौके पर पहुंची। स्थानीय लोगों की मदद से सभी घायलों को जिला अस्पताल भिजवाया गया। माता बसैया थाना प्रभारी विवेक तोमर के अनुसार हादसा सुबह साढ़ें 10 बजे हुआ।

संक्षिप्त समाचार

श्रीमती आशा निगम का निधन कायस्थ समाज ने जताया शोक

सतना। कायस्थ समाज के वरिष्ठ पदाधिकारी सेवानिवृत्त जिलाशिक्षा अधिकारी बी.के.निगम की धर्मपत्नी श्रीमती आशा निगम का स्वर्गवास हो गया है। कायस्थ समाज के राष्ट्रीय महासचिव विष्णु प्रकाश श्रीवास्तव, प्रदेश अध्यक्ष आनन्द कुमार श्रीवास्तव, जिला अध्यक्ष दीपक निगम, पुरुषोत्तम श्रीवास्तव रावेद्र बबलू श्रीवास्तव, डॉ.डी.के. निगम, संजय निगम, रमेश निगम, कमलेश निगम, चंद्र कुमार निगम, उमेश चंद्र श्रीवास्तव,सतोष श्रीवास्तव, पवन खरे, बृजेश निगम, सतीश निगम, राज श्रीवास्तव, सुधीर निगम,प्रदीप निगम, उमाकान्त निगम, अरविन्द निगम, आलोक खरे, जय श्रीवास्तव, जीतेन्द्र कुमार, पिंकी निगम, संजू निगम, उमेश निगम, राजीव अर्गल, पवन श्रीवास्तव, सुधीर निगम, सजय श्रीवास्तव, दीपक श्रीवास्तव, सचिन श्रीवास्तव, अनुपम खरे, प्रदीप श्रीवास्तव, संजय निगम, सुभाष श्रीवास्तव, सुयश निगम, दीपांकर खरे, अंकित खरे, सृजन निगम, सुमित श्रीवास्तव, किशन श्रीवास्तव, धर्मेन्द्र खरे, राजेश खरे, निर्भय श्रीवास्तव, राजीव श्रीवास्तव, अनिरूद्ध श्रीवास्तव, संदेश श्रीवास्तव, कमलेश निगम, आशीष निगम, आदेश सक्सेना, राजू सक्सेना, अनिल सक्सेना, हिमाशु श्रीवास्तव, अजय श्रीवास्तव ने श्रद्धाजलि दी।

सीएमए के फेरुमल अध्यक्ष व संदीप जैन बने मंत्री

सतना। क्लॉथ मर्चेंट एसोसिएशन (सीएमए) का 57वां वार्षिक अधिवेशन एवं आमसभा रविवार को रीवा रोड स्थित सीएमए कार्यालय मे चेम्बर अध्यक्ष सतीश सुखेजा के मुख्य आतीथ्य एवं चेम्बर महामंत्री मनोज कटारे के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ। सीएमए मंत्री संदीप कुमार जैन ने बताया की चुनाव अधिकारी पवन जैन एवं सह चुनाव अधिकारी गुणवन्त शाह व अमर भागवानी की देखरेख मे सत्र 2026-28 के लिए नवीन कार्यकारिणी का गठन हुआ। सभी चुनाव निर्विरोध संपन्न हुए। नवीन कार्यकारिणी में अध्यक्ष पद पर फेरुमल तोलवानी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष राजेश लालचंदानी, कनिष्ट उपाध्यक्ष अनिल सेनानी, मंत्री संदीप जैन, वरिष्ठ उपमंत्री पवन जैन, कनिष्ट उपमंत्री केशव माखीजा, कोषाध्यक्ष कमल जानवानी चुने गए। कार्यकारिणी में गुणवन्त शाह, पवन दुदानी, कपिल शाह, अमर भागवानी, रितेश मेहता, धीरज माखीजा, गंगाराम सचदेव, किशोर सेवानी चुने गए।

सतेन्द्र दुबे बनाए गए प्रदेश उपाध्यक्ष

सतना। भारतीय जनता मजदूर ट्रेड यूनियन काउंसिल मध्य प्रदेश के प्रदेश अध्यक्ष राजेन्द्र नामदेव की सहमति से सतेन्द्र कुमार दुबे को मध्य प्रदेश के प्रदेश उपाध्यक्ष के पद का दायित्व सौंपा गया और जिला के विस्तार व गतिविधियों की रूपरेखा तैयार करने का प्रभार सौंपा गया। उक्त नियुक्ति ब्रजेश शर्मा राष्ट्रीय अध्यक्ष भारतीय जनता मजदूर ट्रेड यूनियन काउंसिल द्वारा की गई है। श्री दुबे इसके साथ ही सतना, रीवा, कटनी, मैहर व पन्ना जिले में संगठन विस्तार का काम भी देखेंगे।

[मौसम] दो दिनों से नहीं गिरी बूंदे, नक्षत्रों का भी नहीं चल रहा खेल

मानसूनी सिस्टम पर लगा ब्रेक बादलों ने दिखाई बेरुखी

नगर संवाददाता ■ सतना

मौसम विभाग के अनुसार जिले में अगले कुछ दिनों तक बारिश की संभावना नजर नहीं आ रही है। बताया गया कि बंगाल की खाड़ी में बना सिस्टम राजस्थान के रास्ते पाकिस्तान की ओर निकल गया है जिस वजह से जबतक अब न्या सिस्टम एकिटव नहीं होता तक तक अभी बारिश की संभावना नजर नहीं आ रही है। अभी जिले में कहीं - कहीं पर जो खंड वर्षा हो रही है वह लोकल बादलों की वजह से हो रहा है। जिले में अभी नए सिस्टम का कोई असर नहीं देखा जा रहा है।

क्या कहता है ज्योतिषियों का गणित- पं. संजय पाठक के अनुसार जुलाई के प्रथम सप्ताह में जलीय ग्रह गुरु और शुक्र कर्क राशि में जल तत्व के नवंशा मीन में गोचर करते हुए उत्तर भारत के राज्यों में भारी बारिश करेंगे। पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश और पश्चिमी राजस्थान में जुलाई के पहले हफ्ते में खूब बारिश होने के योग थे। किन्तु जुलाई के दूसरे हफ्ते में शुक्र सिंह राशि में प्रवेश करेंगे जो की एक शुष्क राशि होने के कारण मानसून के रफ्तार में कुछ कमी लाएगी।जुलाई के तीसरे हफ्ते की शुरूआत में 14 जुलाई को गुरु सिंह राशि में शुक्र के साथ आकर फिर से संयोग कर रहा है जिससे अच्छी बरसात हो सकती है। जुलाई के आखिरी सप्ताह में बुध जलीय राशि कर्क में सूर्य के साथ आकर मानसून की रफ्तार को सामान्य रखेंगे।

किसानों को सताने लगी चिंता

किसानों का कहना है कि अगर तीन-चार दिन में बारिश नहीं हुई तो धान के पौधे खराब हो जाएगी मिट्टी में नमी नहीं के कारण फसल के खराब होने की आशंका रहती है। अगर मौसम की अनिश्चितता इसी प्रकार बनी रही तो धान की फसल में दवा आदि का छिड़काव नहीं हो पाएगा। जिससे फसलों के खराब होने की संभावना बनी रहेगी। जिस तरह से जिले में मानसून की बेरुखी दिख रही है उससे किसानों को चिंता सता रही है।

गत वर्ष से कम हुई बारिश

जिले में इस वर्ष 1 जून से 11 जुलाई तक 242.7 मिलीमीटर औसत वर्षा दर्ज की गई है। वहीं गत वर्ष अब तक करीब 407 मिलीमीटर बारिश रिकार्ड की गई थी। अधीक्षक भू-अभिलेख सतना से प्राप्त जानकारी के अनुसार अब तक जिले की सतना (रघुराजनगर) तहसील में 343.6 मि.मी., सोहावल (रघुराजनगर) में 242.6 मि.मी., बरौंधा (मझगवां) में 265.9 मि.मी, बिरसिंहपुर में 332.9 मि.मी., रामपुर बाघेलान में 254.6 मि.मी., नागौद में 232.8 मि.मी., जसो (नागौद) में 78.7 मि.मी. एवं उचेहरा में 190.5 मि.मी. औसत वर्षा अब तक दर्ज की जा चुकी है। जिले की औसत सामान्य वर्षा 891.7 मि.मी. है।

[कार्यक्रम] स्वर्णकार समाज ने किया पौधरोपण व सम्मान समारोह का आयोजन

एएस विवेकानंद विद्यालय परिसर में लगाए 51 छायादार पौधे, उपलब्धियों पर जताया गर्व

नगर संवाददाता ■ सतना

स्वर्णकार समाज सतना द्वारा समाज के अध्यक्ष केदार सोनी एवं ए.एस. विवेकानंद विद्यालय के संचालक अमित कुमार सोनी के मार्गदर्शन में पौधरोपण एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए विद्यालय परिसर में 51 छायादार पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित समाजजनों ने कहा कि वृक्ष मानव जीवन का आधार हैं और इनके बिना जीवन की कल्पना संभव नहीं है। सभी ने पौधों की नियमित देखभाल एवं संरक्षण का संकल्प लेते हुए पर्यावरण संवर्धन में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया।

समाज की उपलब्धियों पर व्यक्त की खुशी- सम्मान समारोह के दौरान स्वर्णकार समाज सतना के सचिव संतोष कुमार सोनी ने समाज की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए समाज की बेटी मोनी सोनी के जिला महामंत्री पद पर मनोनीत होने पर हर्ष व्यक्त किया तथा उन्हें शुभकामनाएं दीं। उपस्थित समाजजनों ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए इसे समाज के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि बताया।

सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने का आह्वान- कार्यक्रम में वक्ताओं ने समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं अनावश्यक खर्चों पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि दहेज प्रथा एवं विवाह समारोहों में होने वाले फिजूलखर्ची पर अंकुश लगाना समय की आवश्यकता है। समाज को शिक्षा, संस्कार और सामाजिक एकता को बढ़ावा देते हुए सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

इनकी रही प्रमुख उपस्थिति

कार्यक्रम में अमित कुमार सोनी, केदार सोनी, सुरेश कुमार सोनी, रामखेलावन सोनी, मनोज कुमार सोनी, संतोष कुमार सोनी, डॉ. विवेकेंद्र सोनी, संयम सोनी, राजेंद्र सोनी, लालबाबू सोनी, पवन सोनी, चंचल सोनी, सुनील सोनी, ईश्वर सोनी, लक्ष्मीकांत सोनी, आकाश सोनी, प्रयाग सोनी, विकास सोनी, मालीलाल सोनी, छोटेलाल सोनी, धनश्याम सोनी, प्रदीप सोनी, संतोष पनबुद्धा सोनी, बैजनाथ सोनी, उपेन्द्र सोनी, दयाराम सोनी, रामबाबू सोनी, महेश सोनी तथा कृष्णकुमार सोनी सहित बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे।

दो लोगों की अंधेरी दुनिया में उजियारा भर गए अशोक चमड़िया

■ भारत विकास परिषद के माध्यम से हुआ नेत्रदान

नगर संवाददाता ■ सतना

नगर के प्रतिष्ठित चाय व्यवसायी अशोक चमड़िया का शनिवार को दुखद निधन हो गया। वे स्व. सीताराम चमड़िया के सुपुत्र थे। अशोक चमड़िया के निधन पश्चात भारत विकास परिषद के माध्यम से श्री सद्गुरु सेवा संघ नेत्र चिकित्सालय आई बैंक की तकनीकी टीम द्वारा रात्रि 8:30 बजे उनके निवास में परिजनों की सहमति से नेत्र दान संपन्न हुआ।

नेत्रदान में उनके परिजन राम अवतार चमड़िया, शारदा चमड़िया, तरुण चमड़िया, पुत्र हर्षित चमड़िया, केतन चमड़िया, सहित परिषद परिवार के मार्गदर्शक जितेंद्र जैन, राजेश अग्रवाल टीटू, सुकुमाल जैन की उपस्थिति रही तथा इस नेक काम में अभिषेक कामदार, हिमांशी सिंह अरोरा, यश पंजवानी, विशाल सोई, अर्पित जैन, मनोहर वाधवानी, तरुण ठक्कर का सराहनीय योगदान रहा। नेत्रदान प्रकल्प संयोजक पुरुषोत्तम अग्रवाल एवं संजय गुप्ता ने कहा कि स्वर्गीय अशोक चमड़िया के लोकोपकारी दान से दो लोगों की अंधेरी दुनिया रोशन होगी एवं वे लोग इस सुंदर संसार को उनकी आंखों से पुनः देख सकेंगे। भारत विकास परिषद परिवार ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए नेत्र दाता परिजनों के प्रति साधुवाद ज्ञापित किया है।

सतना की बेटी मान्या पाण्डेय ने फिर बढ़ाया जिले का मान

■ गोल्ड के साथ बनीं बेस्ट फीमेल फाइटर

नगर संवाददाता ■ सतना

जिले की उभरती हुई ताइक्कांडो खिलाड़ी मान्या पाण्डेय ने एक बार फिर शानदार प्रदर्शन करते हुए सतना का नाम रोशन किया है। रविवार को सतना के जयपुरिया स्कूल में आयोजित 5वीं डिस्ट्रिक्ट ताइक्कांडो चैंपियनशिप-2026 में मान्या ने सब-जूनियर वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। इतना ही नहीं उन्हें प्रतियोगिता की बेस्ट फीमेल फाइटर ट्रॉफी से भी सम्मानित किया गया। प्रतियोगिता में पांच जिलों के करीब 130 खिलाड़ियों ने भाग लिया जहां कड़े मुकाबलों के बीच मान्या ने बेहतरीन तकनीक, आत्मविश्वास और संघर्षशील खेल का प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। गौरतलब है कि मान्या पाण्डेय इससे पहले 14 जून को सागर जिले में आयोजित राज्य स्तरीय ताइक्कांडो चैंपियनशिप में भी अपनी श्रेणी में गोल्ड मेडल जीत चुकी हैं। लगातार मिल रही सफलताएं यह साबित करती हैं कि वह आने वाले समय में प्रदेश और देश स्तर पर भी बड़ी उपलब्धियां हासिल करने की क्षमता रखती हैं। मान्या पिछले डेढ़ वर्षों से सतना मार्शल आर्ट अकादमी में संस्थापक एवं कोच संदीप भारती के मार्गदर्शन में ताइक्कांडो का प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। उनकी मेहनत अनुशासन और लगन का परिणाम आज पूरे जिले के सामने है। मान्या की इस शानदार उपलब्धि पर खेल जगत से जुड़े लोगों, प्रशिक्षकों, खिलाड़ियों और शुभचिंतकों ने उन्हें बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी हैं। उनकी सफलता जिले के अन्य बच्चों और युवा खिलाड़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन रही है। सतना की इस होनहार बेटी ने यह साबित कर दिया है कि मेहनत, समर्पण और सही मार्गदर्शन के बल पर कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं होता।

'वी क्लब' ने आयोजित किया शपथ ग्रहण समारोह

नगर संवाददाता ■ सतना

वी क्लब सतना का शपथ ग्रहण समारोह गरिमामय माहौल में डिस्ट्रिक्ट प्रेसिडेंट वी ज्योति प्रधान के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। शपथ अधिकारी के रूप में डिस्ट्रिक्ट प्रेसिडेंट ने रचना अवस्थी को अध्यक्ष, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सावित्री गुप्ता, आभा चौरसिया, सीमा अग्रवाल सचिव विनीता शर्मा कोषाध्यक्ष मीना तिवारी, बबली चौरसिया सह सचिव पी आर ओ अर्चना अग्रवाल, सह कोषाध्यक्ष साधना राय व सभी संचालक मंडल को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई।

शपथ ग्रहण कार्यक्रम की थीम पर्यावरण संरक्षण रही। इस अवसर पर क्लब कैंपस में पौधा रोपण किया गया एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए पौधों का वितरण गमले सहित किया गया। कार्यक्रम में कई सेवाभावी संस्थाओं के पदाधिकारी एवं वी क्लब के सदस्य उपस्थित रहे।

लायंस क्लब विन्ध्य ने आयोजित किया स्वास्थ शिविर

नगर संवाददाता ■ सतना

सुरक्षित मातृत्व एवं महिलाओं के सम्पूर्ण स्वास्थ के लिए लायंस क्लब सतना विन्ध्य ने रविवार को विशेष शिविर का आयोजन शहर के अमृत वाटिका में आयोजित किया। शिविर में निःसंतान एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. उत्तरा गुप्ता द्वारा निःशुल्क सेवाए दी जिससे काफी संख्या में महिलाओं ने अपनी स्वास्थ समस्या के बारे में बताया जिसका उपचार चिकित्सकों के द्वारा बताया गया। इस दौरान मरीजों को जरूरत होने पर बीपी, शुगर की फ्री में जां भी की गई। शिविर में सतना के कई अन्य लायंस क्लब राज, उड़ान, घुमराह बादल के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। डॉ उत्तरा गुप्ता ने सलाह दी की महिलाएं पूरे परिवार का ध्यान रखती हैं पर अपने स्वास्थ का ध्यान नही रखती हैं और बड़ी बीमारी का शिकार हो जाती हैं इसलिए समय समय पर अपनी जांच कराते रहना चाहिए। कार्यक्रम संयोजक राजेश अग्रवाल ने सभी का आभार प्रकट किया।

ये रहे मौजूद

विन्ध्य अध्यक्ष हर किशन अग्रवाल, सचिव राजेश अग्रवाल, मंजू गुप्ता, सुधा पाठक, योगेंद्र सिंह, सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव, आशुतोष गुप्ता, अनिल तिवारी, लायंस क्लब सतना से गीता सिंह, नितिन राज नेमा, लायंस क्लब उड़ान से अध्यक्ष शिवा सिंह, लायंस क्लब राज से अध्यक्ष राजेश खत्री, लायंस क्लब गुमराह बादल से पूर्व अध्यक्ष संजय सिंह आदि उपस्थित रहे।

एकेएस ने सितपुरा में चलाया खेत बचाओ अभियान

■ किसानों को प्राकृतिक एवं वैज्ञानिक खेती का दिया व्यावहारिक प्रशिक्षण

नगर संवाददाता ■ सतना

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के दिशा-निर्देशों के अनुरूप संचालित ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव (रावे) एवं कृषि औद्योगिक संलग्नता (एआईए)-2026 कार्यक्रम के अंतर्गत नैक प्रत्यायित एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से मान्यता प्राप्त एकेएस विश्वविद्यालय, सतना के कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संकाय के कृषि प्रसार शिक्षा विभाग द्वारा ग्राम सितपुरा में खेत बचाओ अभियान के तहत किसान संगोष्ठी, व्यावहारिक कृषि प्रशिक्षण एवं पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रावे कार्यक्रम का उद्देश्य कृषि विद्यार्थियों को ग्रामीण परिवेश में रहकर किसानों के साथ प्रत्यक्ष कार्य करने का अवसर प्रदान करना, उनकी समस्याओं को समझना तथा वैज्ञानिक एवं नवीन कृषि तकनीकों का खेत स्तर तक प्रभावी प्रसार करना है, जिससे कृषि शिक्षा और ग्रामीण समाज के बीच सशक्त समन्वय स्थापित हो सके। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के डॉ. डी.पी. चतुर्वेदी, डॉ.विष्णु ओमर, अंशुल आसरे एवं अनूप शुक्ला ने किसानों को प्राकृतिक खेती, खरीफ फसलों की वैज्ञानिक तैयारी, मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जल संरक्षण, फसल सुरक्षा, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन तथा आधुनिक कृषि तकनीकों के व्यावहारिक उपयोग की जानकारी दी। उन्होंने किसानों को रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के विवेकपूर्ण उपयोग, जैविक एवं प्राकृतिक विकल्पों को अपनाने, खेतों की उर्वरता बनाए रखने तथा पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिकाधिक पौधरोपण करने का संदेश दिया।

[परेशानी] कम हुआ सोयाबीन का व्यापार तो घट गई मंडी की आमदनी

जिले में सिमट गई सोयाबीन की खेती, कना, खली पर आश्रित हो गए प्लांट

नगर संवाददाता ■ सतना

जिले के किसान सोयाबीन की खेती से तेजी से मुंह मोड़ रहे है। पिछले कुछ साल के अंदर ही सोयाबीन का रकबा घटता जा रहा है। जहां पहले लाखों हेक्टेयर में किसान सोयाबीन की पैदावार करते थे वह अब महज एक - दो हजार हेक्टेयर के करीब पहुंच गया है। ऐसे में सबसे अधिक असर मंडी की आमदनी पर भी देखने को मिल रहा है। जहां पहले यहां पर प्रतिदिन दस से पन्द्रह हजार क्विंटल सोयाबीन सीजन में आता था वहीं अब यह दस से बीस बोरा में सिमट कर रह गया हे।

इसके साथ ही संकट उन सोया प्लांटों पर नजर आ रहा है जिन्हें सोयाबीन के लिए अब दूसरे जिलों एवं प्रदेशों पर निर्भर होना पड़ रहा है। सोयाबीन नहीं मिलने के कारण सोया प्लांट में अब अन्य विकल्प भी उपयोग में लाए जा रहे हैं।

पंसद आने लगी धान की खेती- पिछले कई वर्षों से जिले के किसानों को धान की खेती ज्यादा रास आ रही है। कुछ साल पहले जहां किसान लाखों हेक्टेयर में सोयाबीन की पैदावार करते थे वही अब दो हजार हेक्टेयर में सिमट कर रह गई है। खरीफ सीजन में पहले किसान सबसे ज्यादा किसान सोयाबीन की खेती करते थे, लेकिन सोयाबीन की तुलना में दूसरी फसलें किसानों को अधिक मुनाफा दे रही थीं, इसीलिए जिले के अधिकांश किसान धान की खेती करने लगे हैं। सोयाबीन का रकबा हर साल घटता जा रहा है।

लगातार घाटा होने से बेरुखी

सोयाबीन की खेती में लगातार घाटा होने के कारण जिले के किसान सोयाबीन की खेती से तेजी से मुंह मोड़ रहे है। किसानों को हजारों रुपए खर्च कर बीज खरीदना पड़ता है इसके बाद खाद, दवाइयों में अलग से खर्च करना पड़ता है। लेकिन जब फसल तैयार होती है तो प्राकृतिक आपदा के चलते दाने मर जाते हैं और किसानों को सही दाम नहीं मिल पाता है। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है सोयाबीन की फसल पकने के बाद पानी गिरने से दाने खराब हो जाते है जिससे किसानों को अच्छी कीमत नहीं मिल पाती थी जिस वजह से किसानों ने सोयाबीन से मुंह मोड़ लिया।

25 सौ हेक्टेयर में सिमटा टारगेट

कृषि विभाग द्वारा बताया गया कि इस साल जिले में सोयाबीन की बोनी का लक्ष्य महज 25सौ हेक्टेयर के करीब रखा गया है। जिले के कुछ इलाकों में जहां पानी की उपलब्धता कम रहती है वहीं पर किसान थोड़ा बहुत सोयाबीन की खेती कर रहे हैं। हालांकि यह रकबा पहले की तुलना में अब ऊंट के मुंह में जीरा जैसा है।

प्लांट संचालकों को नुकसान

जिले में सोयाबीन बंपर खेती के दौरान यहां पर स्थानीय कारोबारी द्वारा सतना नदी के पास बड़ेरिया सोया प्लांट लगाया गया था इसके बाद बैतूल के उद्योगपति द्वारा कैमा स्टेशन के करीब बैतूल आयल मिल नाम से एक बड़ा सोया प्लांट लगाया गया। कुछ साल पहले मटेहना में एक बड़ा प्लांट विद्यासागर सिफाइनरी के नाम से स्थापित किया गया है। लेकिन अब पर्याप्त मात्रा में सोयाबीन उपलब्ध नहीं होने के कारण ये प्लांट अन्य विकल्पों जैसे कना, खली पर आश्रित रह गए हैं। जबकि पहले इन प्लांटों के लिए ही सतना मंडी से काफी मात्रा में सोयाबीन की खरीदी की जाती थी।

भारतीय सिंधु सभा महिला शाखा ने हर्षोल्लास से मनाया सावन पर्व

नगर संवाददाता ■ सतना

भारतीय सिंधु सभा महिला शाखा द्वारा सावन पर्व बड़े ही श्रद्धा, उत्साह एवं पारंपरिक उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ भगवान श्री झूलेलाल के पूजन एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। इसके पश्चात महिलाओं ने सावन के पारंपरिक गीत गाए, झूला झूला तथा भक्ति एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से सावन माह की खुशियों का आनंद लिया। यह कार्यक्रम पायल केसवानी के संयोजन में किया गया। इस अवसर पर प्रदेश सचिव राखी होतचंदानी अध्यक्ष सिमरन होतचंदानी महामंत्री बबीता गंगवानी कोषाध्यक्ष जिया आहूजा ने 14 जुलाई से प्रारंभ होने वाले श्री झूलेलाल चालिया महोत्सव में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने का भी अनुरोध किया। इस अवसर पर उपस्थित महिलाओं ने भगवान श्री झूलेलाल से समाज में सुख, शांति, समृद्धि एवं आपसी प्रेम-सौहार्द की कामना की एवं कार्यक्रम में सभी ने एक-दूसरे को सावन पर्व की शुभकामनाएँ देते हुए भारतीय संस्कृति एवं सिंधी परंपराओं को जीवंत बनाए रखने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में रेशमा दुसेजा कशिश नागदेव दीपिका हरवानी मुस्कान चंदानी रोशनी सेवानी जानवी गंगवानी काशवी मिताली सीमा सुखदानी मीत ईरानी एवं कई महिलाएं शामिल रही।

संक्षिप्त समाचार

चंदा चोर गैंग की सपा पर हैं निगाहें: शिव सिंह

रीवा। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एड शिव सिंह ने बिना किसी का नाम लिए चंदा चोर गैंग पर निशाना साधते हुए कहा कि चंदा चोर गिरोह की निगाहें अब सपा पर हैं। शिव सिंह ने यह भी कहा कि हमारे नेताओं एवं जनप्रतिनिधियों को तमाम हथकंडे अपनाने के बाद भी जब गैंग के लोग तोड़ नहीं पाए तब अब सपा के जनक मुलायम सिंह यादव एवं सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव के खिलाफ अनर्गल टिप्पणी कर रहे हैं। शिव सिंह ने चोर गिरोह को चेतावनी देते हुए कहा कि गिरोह के प्रमुख लोग हमारे सब्र और शालीनता की परीक्षा न लें। शिव सिंह ने यह भी कहा कि देशभर में जितने भी लोग चोर गैंग के सदस्य हैं सबने भगवान राम के नाम पर चंदा वसूली चंदा चोरी की है। राम जी के यहां सबकी फाइलें खोली जा रही हैं। सरकारें बदलने पर उत्तर प्रदेश सहित देश के हर जिले में अलग से जेलें बनाई जाकर उन जेलों का नाम मंदिर चंदा चोर जेल रखा जाएगा जिसमें देश भर के मंदिरों में चोरी करने वाले आरोपियों को रखा जाएगा।

रब बॉय आदर्श के घर घुस रहा पानी, प्रशासन से लगाई गुहार

रीवा। रीवा के रबर बॉय आदर्श पांडे ने बताया कि उनके निवास क्षेत्र रवड़बाह में हर बारिश के दौरान जलभराव की गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाती है। मई माह में भी उन्होंने संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को आवेदन देकर समस्या से अवगत कराया था, लेकिन अब तक कोई स्थायी समाधान नहीं हुआ। हाल ही में हुई बारिश में एक बार फिर उनके घर में पानी भर गया, जिससे खाने-पीने का सामान खराब हो गया और उन्हें काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। इस संबंध में उन्होंने मुख्यमंत्री को भी पत्र भेजकर नाली निर्माण एवं जलनिकासी की उचित व्यवस्था कराने की मांग की है, लेकिन अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है। रबर बॉय आदर्श ने प्रशासन से जल्द से जल्द समस्या का समाधान कराने की मांग की है, ताकि भविष्य में उन्हें और क्षेत्र के अन्य लोगों को इस परेशानी का सामना न करना पड़े।

स्कूली बच्चों को वितरित किया गया अध्ययन सामग्री

रीवा। भारत विकास परिषद के 64 वा स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में चल रहे 'सेवा पखवाड़ा' के अंतर्गत रविवार को शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय दोही में सामग्री वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कक्षा 1 से 8 तक के बच्चों को पुस्तक, स्कूल बैग, कॉपी, पेन, पेंसिल, कटर और रबड़ वितरित किए गए। सामग्री पाकर बच्चों के चेहरे खिल उठे और उनमें काफी उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम में अतिथियों ने बच्चों को शिक्षा के महत्व के बारे में बताया और नियमित पढ़ाई करने के लिए प्रेरित किया। भारत विकास परिषद के पदाधिकारियों ने कहा कि सेवा पखवाड़ा के तहत पूरे जिले में ऐसे सामाजिक कार्य किए जाएंगे।

निकट भविष्य में 5 हो सकती है इम्पैनल्ड अस्पतालों की संख्या

स्टेशन मुख्यालय की टीम ने ईसीएचएस रीवा का किया निरीक्षण

■ सुविधाओं के विस्तार के लिए मदद का दिया गया आश्वासन

÷Ùø संवाददाता ■ रीवा

जबलपुर स्टेशन मुख्यालय की टीम जिसमें कर्नल स्वप्निल वीटी एडम कमांडेन्ट स्टेशन सेल, लेफ्टिनेंट कर्नल बिजेन्द्र सिंह ओआईसी स्टेशन सेल और मेजर कार्तिकेश चिकित्सा अधिकारी मिलिट्री हॉस्पिटल शामिल रहे,द्वारा बीते दिनों ईसीएचएस चिकित्सालय रीवा का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। टम्भ द्वारा पॉलीक्लीनिक में पूर्व से उपलब्ध सुविधाओं सहित भूतपूर्व सैनिकों की बढ़ती संख्या के अनुकूल सुविधाओं का अवलोकन करते हुए पॉलीक्लीनिक में सुविधाओं के विस्तार एवं सुधार कार्य की दिशा में उठाये गये कदम की जानकारी प्राप्त की गयी। पॉलीक्लीनिक में सुविधाओं के विस्तार के लिए आवश्यक व अपेक्षित मदद का आश्वासन कर्नल स्वप्निल द्वारा दिया गया। उन्होंने ईसीएचएस पॉलीक्लीनिक के प्रभारी अधिकीर एवं स्टाफ सहित मौजूद पूर्व सैनिकों को अवगत कराया कि पॉलीक्लीनिक रीवा की श्रेणी टाइप सी करने के संबंध में पत्राचार प्रारंभ है। उन्होंने अन्य प्रशासनिक सुधारों जैसे कैन्टीन विस्तार आदि की आवश्यकता पर अपना सकारात्मक रूख व्यक्त करते हुए टीम के साथ प्रस्तावित योजनाओं पर भी विचार विमर्श किया। उक्त दौरान प्रभारी अधिकारी कर्नल ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह,कैप्टन प्रदीप सिंह कैन्टीन मैनेजर,सूबेदार मेजर ज्ञानेन्द्र सिंह और सूबेदार अमित सिंह सहित स्टाफ के अन्य लोग उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि पूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों को बाह्य रोगी(ओपीडी) चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए ईसीएचएस पॉलीक्लीनिक रीवा में चिकित्सकीय परामर्श के लिए रीवा,मऊगंज,सीधी एवं सिंगरौली जिले के पूर्व सैनिक एवं उनके आश्रित आते हैं।

इम्पैनल्ड शहर के चार अस्पताल

आवश्यकता होने पर मरीजों को सेना अस्पतालों या फिर ईसीएचएस से संबद्ध(इम्पैनल्ड) अस्पतालों में विशेष उपचार एवं भर्ती के लिए पॉलीक्लीनिक से रेफर किया जाता है। रीवा शहर में सुपर स्पेशिलिटी हॉस्पिटल एवं निजी अस्पताल विहान हॉस्पिटल, रीवा हॉस्पिटल,विन्ध्या हॉस्पिटल ईसीएचएस रीवा से इम्पैनल्ड हैं। निकट भविष्य में अपोलो हॉस्पिटल रीवा के भी जुड़ने की संभावना है। पूर्व में जब रीवा के एक भी हॉस्पिटल इम्पैनल्ड नहीं थे तब पूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों को जबलपुर सहित अन्य बड़े शहर की ओर जाना पड़ता था।

संभाग के 4 जिलों से आते हैं मरीज

जानकारी अनुसार ईसीएचएस रीवा के कार्यक्षेत्र वाले चार जिले रीवा,मऊगंज,सीधी एवं सिंगरौली से औसतन 200 से अधिक मरीज पॉलीक्लीनिक रीवा की ओपीडी में पहुंचते हैं। लगभग 10 हजार रजिस्टर्ड ईसीएचएस कार्ड संख्या है। पूर्व सैनिकों के आश्रितों को शामिल करने पर यह आंकड़ा 35 हजार के पार पहुं जाता है। पूर्व सैनिकों की संख्या लगातार बढ़ते क्रम में है,फलस्वरूप ईसीएचएस पॉलीक्लीनिक रीवा में सुविधाओं के विस्तार की आवश्यकताओं को नकारा नहीं जा सकता है।

7 दिवसीय सिविल डिफेंस वालंटियर्स प्रशिक्षण सम्पन्न

मानव सेवा व आपदा राहत कार्यों के लिए सदैव तैयार रहने का किया आह्वान

÷Ùø संवाददाता ■ रीवा

जिला होमगार्ड एवं नागरिक सुरक्षा संगठन द्वारा आयोजित सात दिवसीय सिविल डिफेंस वालंटियर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम का शनिवार को समापन हुआ। समापन समारोह में संभागीय सेनानी एम.के.पंन्द्रे एवं जिला सेनानी मीनाक्षी चौहान की उपस्थिति में प्रशिक्षित स्वयंसेवकों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। अधिकारियों ने स्वयंसेवकों से प्राप्त प्रशिक्षण का नियमित अभ्यास करने तथा मानव सेवा और आपदा राहत कार्यों के लिए सदैव तैयार रहने का आह्वान किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम 5 जुलाई से प्रारंभ हुआ था। सात दिनों तक स्वयंसेवकों को बाढ़, भूकंप, अग्निकांड, जल प्रलय, भूस्खलन, हवाई एवं ड्रोन हमले जैसी संभावित आपदाओं के दौरान राहत एवं बचाव कार्यों का प्रशिक्षण दिया गया। इसके साथ ही मेडिकल इमरजेंसी से निपटने, प्राथमिक उपचार, सीपीआर, चोकिंग, जलने पर उपचार, विभिन्न प्रकार की पट्टियां बांधने, घायल की स्थिति का आकलन कर उसे स्थिर स्टेबलाइज करने सहित अन्य महत्वपूर्ण तकनीकों का व्यावहारिक अभ्यास कराया गया। समापन दिवस पर प्रशिक्षण मॉड्यूल के अनुसार स्वयंसेवकों को पीड़ित को सुरक्षित स्थिति में लाने, हीट एवं कोल्ड स्ट्रोक से बचाव, विभिन्न प्रकार की बैंडेज, बर्न्स मैनेजमेंट, स्ट्रेचर ड्रिल तथा घायल को सुरक्षित तरीके से उठाने और ले जाने की विधियों का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के अंत में स्वयंसेवकों की लिखित एवं व्यावहारिक परीक्षा भी आयोजित की गई। समारोह के दौरान जिला सेनानी मीनाक्षी चौहान ने मुख्य अतिथि संभागीय सेनानी एम. के.पंन्द्रे का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। मुख्य प्रशिक्षण प्रभारी प्लाटून कमांडर विकास पाण्डेय ने सात दिवसीय प्रशिक्षण की रूपरेखा एवं गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रशिक्षित सिविल डिफेंस वालंटियर्स को प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

वार्डों में चलाया गया स्वच्छता के प्रति जागरूकता अभियान

÷Ùø संवाददाता ■ रीवा

स्वच्छ सर्वेक्षण 2026 के अंतर्गत 1 जुलाई से 31 जुलाई तक चलाए जा रहे सफाई अपनाओ बीमारी भगाओ अभियान के तहत एवं निगम आयुक्त अक्षत जैन के निर्देशानुसार नगर निगम की स्वच्छता टीम द्वारा वार्ड क्रमांक 38, 22, 30 एवं 7 में व्यापक स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। अभियान के दौरान नगर निगम की आईईसी टीम द्वारा रहवासियों क्षेत्रों एवं प्रमुख सार्वजनिक स्थलों पर पहुंचकर नागरिकों को स्वच्छता के महत्व से अवगत कराया।

साथ ही टीम ने लोगों को अपने घरों, प्रतिष्ठानों एवं आसपास के क्षेत्रों की नियमित साफ-सफाई बनाए रखने, गीले एवं सूखे कचरे का पृथक्करण करने तथा एवं कचरा केवल कचरा संग्रहण वाहन में ही देने के लिए प्रेरित किया। साथ ही सार्वजनिक स्थानों पर कचरा न फेंकने एवं स्वच्छता बनाए रखने की अपील की। साथ ही नागरिकों को वर्षा ऋतु में होने वाली बीमारियां जैसे डेंगू, मलेरिया एवं अन्य मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए जानकारी देते हुए अपने घरों के आस पास जलभराव न होने देने एवं मच्छरों के प्रजनन स्थलों को समाप्त करने के संबंध में आवश्यक जानकारी प्रदान की गई। साथ ही साफ पानी के पात्रों को ढंककर रखने, नियमित सफाई रखने तथा व्यक्तिगत स्वच्छता अपनाने की सलाह दी गई।

संस्कृतभारती महाकोशल प्रांत की प्रान्त संगोष्ठी आयोजित

संगठन विस्तार और वार्षिक कार्ययोजना पर हुआ मंथन

÷Ùø संवाददाता ■ रीवा

संस्कृतभारती महाकोशल प्रांत की प्रान्तसंगोष्ठी रविवार को रीवा में आयोजित की गई। संगोष्ठी में संगठन विस्तार, आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तथा वर्ष 2026 की कार्ययोजना के प्रभावी क्रियान्वयन को लेकर विस्तृत चर्चा हुई। संगोष्ठी में प्रांत संगठन मंत्री डॉ. मनोज पाण्डेय ने कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन करते हुए संगठन की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने और निर्धारित समय पर सभी कार्यक्रमों के सफल आयोजन का आह्वान किया। मध्य क्षेत्र के क्षेत्र पत्राचार प्रमुख डॉ. कीर्ति कुमार त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति रही। संस्कृतभारती रीवा के जिला अध्यक्ष डी.पी. सिंह परिहार ने संगठन के विस्तार पर विस्तार से चर्चा करते हुए प्रत्येक जिले एवं नगर तक संगठनात्मक गतिविधियों को सशक्त बनाने पर बल दिया। बैठक में निर्णय लिया गया कि जुलाई एवं अगस्त 2026 के दौरान महाकोशल प्रांत के प्रत्येक जिले में वृहद संगोष्ठियों का आयोजन किया जाएगा। साथ ही प्रांत के कार्यकर्ताओं को जिला एवं स्थानीय स्तर पर नियमित बैठकें आयोजित कर वार्षिक कार्ययोजना का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। इस अवसर पर प्रांत सदस्य डॉ. शिवकुमार दुबे, प्रांत प्रचार प्रमुख डॉ. विजय तिवारी, प्रांत प्रशिक्षण प्रमुख दिलीप पाण्डेय, डॉ. कृष्णमणि शुक्ल, डॉ. राजेश शुक्ला,संदीप मिश्रा, धर्मेंद्र शुक्ला एवं पुष्पेंद्र अहिरवार सहित प्रांत के सभी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

भाजपाईयों को सद्बुद्धी देने किया सुन्दरकाण्ड का पाठ

÷Ùø संवाददाता ■ रीवा

अयोध्या राम मंदिर के चढ़ावे चोरी पर चोरों को चिन्हित कर उन्हें पकड़ने की कार्यवाही के लिए महिला कांग्रेस शहर की श्रीमती तारा त्रिपाठी एवं ग्रामीण अध्यक्ष श्रीमती सीमा सिंह के नेतृत्व में भाजपा नेताओं की सद्बुद्धि के लिए एक दिवसीय धरना उपवास का कार्यक्रम सुंदरकांड पाठ के साथ स्थानीय बोदाबाग शिव हनुमान मंदिर में रखा गया। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं गुढ़ विधानसभा के पूर्व विधायक राजेन्द्र मिश्र ने बताया कि सुबह 11 से प्रारंभ होकर 60 दोहे के साथ समापन किया गया। इस अवसर पर मुझे भी सुंदरकांड में सम्मिलित होने और चंदा चोरों के नाम उजागर कर उन्हें सजा मिले इसकी प्रार्थना और उपासना करने का, भगवान से प्रार्थना करने का अवसर मिला। श्री मिश्र ने कहा कि चूंकि सरकार डबल इंजन की है इसलिए धरती में मनुष्य जाति से न्याय मिलने की उम्मीद कम है, इसलिए आशुतोष अवधर दानी भगवान शिव एवं हनुमान जी के मंदिर प्रांगण में यह प्रार्थना और उपवास का कार्यक्रम स्थानीय लोगों ने मिलकर बड़े उत्साह से किया।

कैमरा हटाने को लेकर उठा विवाद थाने तक पहुंचा, शिकायत दर्ज

■ कोतवाली थाना के फोर्ट रोड स्थित शिव मंदिर समीप का मामला

÷Ùø संवाददाता ■ रीवा

शहर के फोर्ट रोड स्थित शिव मंदिर के पास रहने वाले एक युवक ने अपने पड़ोसी पर गाली-गलौज, जान से मारने की धमकी देने और पुलिस द्वारा शिकायत पर एफआईआर दर्ज नहीं किए जाने का आरोप लगाते हुए पुलिस अधीक्षक से कार्रवाई की मांग की है। शिकायतकर्ता सुमित सोनी ने पुलिस अधीक्षक को दिए आवेदन में बताया है कि उन्होंने अपने घर की सुरक्षा के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए हैं। आरोप है कि 2 जुलाई 2026 की रात पड़ोसी अजय तामेर ने घर के बाहर खड़े होकर कैमरा हटाने के लिए अभद्र भाषा का प्रयोग किया और गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी। आवेदन में यह भी उल्लेख किया गया है कि उसी रात आरोपी की पत्नी ने भी कथित रूप से कैमरा हटाने को लेकर धमकी दी। शिकायतकर्ता का कहना है कि 3 जुलाई को उन्होंने घटना की लिखित शिकायत और सीसीटीवी फुटेज स्थानीय सिटी कोतवाली थाना में प्रस्तुत की, लेकिन उनकी एफआईआर दर्ज नहीं की गई। उनका आरोप है कि शिकायत के बाद भी उन्हें लगातार धमकियां मिल रही हैं तथा घर के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरे को नुकसान पहुंचाने की बात कही जा रही है। फिलहाल शिकायत के बाद सिटी कोतवाली पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

डाक जीवन बीमा के लिए डायरेक्ट सेल्स एजेंटों का चयन

■ 27 से 31 जुलाई तक होंगे वॉक-इन-इंटरव्यू

÷Ùø संवाददाता ■ रीवा

अधीक्षक डाकघर रीवा ने बताया कि कार्यालय अधीक्षक डाकघर, रीवा संभाग में डाक जीवन बीमा (पीएलआई) एवं ग्रामीण डाक जीवन बीमा (आरपीएलआई) के व्यवसाय अर्जन के लिये डायरेक्ट सेल्स एजेंटों का चयन किया जाएगा। इसके लिए 27 जुलाई से 31 जुलाई तक प्रतिदिन प्रातः 11 बजे से शाम 4 बजे तक वॉक-इन-इंटरव्यू आयोजित किए जाएंगे। इच्छुक अभ्यर्थी निर्धारित तिथि एवं समय पर अपना आवेदन पत्र तथा बायोडाटा लेकर कार्यालय अधीक्षक डाकघर, रीवा संभाग (प्रधान डाकघर परिसर, सिरमौर चौक के सामने) में उपस्थित हो सकते हैं। डायरेक्ट सेल्स एजेंट के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता 10वीं उत्तीर्ण या राज्य/केंद्रीय बोर्ड से समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण होना आवश्यक है। अभ्यर्थी की आयु 18 से 50 वर्ष के बीच होनी चाहिए। अधिकतम आयु सीमा में नियमानुसार छूट भी प्रदान की जा सकती है। साथ ही अभ्यर्थी को कम्प्यूटर का ज्ञान एवं स्थानीय क्षेत्र की जानकारी होना आवश्यक है।अधीक्षक डाकघर रीवा ने स्पष्ट किया है कि चयनित उम्मीदवारों को उनके कार्य के आधार पर इंसेंटिव दिया जाएगा।

मैरहा टोला स्कूल में बाल सभा आयोजित

÷Ùø संवाददाता ■ रीवा

शासकीय विद्यालय मैरहा टोला महसांव रीवा में पुण्योदय प्रकल्प' कार्यक्रम के तहत बाल सभा का आयोजन किया गया। जन शिक्षक रामकृष्ण द्विवेदी एवं विशाल शुक्ला ने विद्यार्थियों को शैक्षणिक कार्य के साथ-साथ सांस्कृतिक एवं सह शैक्षणिक गतिविधियों के आयोजन के महत्व के बारे में संवाद किया गया। विद्यार्थियों को इस अवसर पर नोटबुक्स वितरित कर उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। विद्यालय के कार्यक्रम में प्रभारी श्रीमती रेनू वर्मा,अभिभावक एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

उपायुक्त ने वार्ड 7 की स्वच्छता व्यवस्था का लिया जायजा

सड़क व फुटपाथों के अतिक्रमण को हटाने के दिए निर्देश

÷Ùø संवाददाता ■ रीवा

नगर पालिक निगम रीवा के उपायुक्त एवं नोडल स्वच्छ भारत मिशन प्रकाश द्विवेदी ने रविवार को वार्ड क्रमांक 7 का निरीक्षण कर स्वच्छता एवं नागरिक सुविधाओं की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने वार्ड में संचालित सफाई कार्यों, कचरा संग्रहण व्यवस्था, अतिक्रमण की स्थिति तथा प्रमुख व्यावसायिक क्षेत्रों का अवलोकन किया तथा संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्देश दिए कि वार्ड में नियमित रूप से सफाई कार्य सुनिश्चित किए जाएं। साथ ही जिन गलियों में कचरा संग्रहण वाहन नहीं पहुंच रहा है, उनकी जानकारी लेकर व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाया जाए, जिससे वार्ड में शत-प्रतिशत कचरा संग्रहण सुनिश्चित हो सके तथा नागरिकों को स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण उपलब्ध कराया जा सके। उन्होंने विशेष रूप से बाजार एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में स्वच्छता बनाए रखने तथा सड़कों एवं नालियों की व्यापक सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान सड़क एवं फुटपाथों पर पाए गए अतिक्रमणों को चिन्हित कर संबंधित व्यक्तियों को उन्हें तत्काल हटाने के निर्देश दिए तथा पुनः अतिक्रमण पाए जाने पर चालानी कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए। साथ ही उपस्थित सभी नागरिकों एवं व्यापारियों से अपने प्रतिष्ठानों के आसपास स्वच्छता बनाए रखने तथा अतिक्रमण न करने की अपील की।

जनसहभागिता अत्यंत आवश्यक

वार्डवासियों एवं व्यापारियों से संवाद कर उन्हें अपने घरों, दुकानों एवं व्यावसायिक संस्थानों के आसपास नियमित सफाई रखने, कचरे को निर्धारित डस्टबिन में डालने तथा नगर निगम के स्वच्छता अभियानों में सक्रिय सहभागिता निभाने के लिए प्रेरित किया। उपायुक्त श्री द्विवेदी ने कहा कि नगर निगम शहर को स्वच्छ, सुव्यवस्थित एवं अतिक्रमणमुक्त बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। इसके लिए जनसहभागिता अत्यंत आवश्यक है। साथ ही उन्होंने निर्देश दिए कि वार्डों एवं सार्वजनिक स्थानों का नियमित निरीक्षण करते हुए स्वच्छता एवं कचरा संग्रहण व्यवस्था की सतत निगरानी की जाए, ताकि नागरिकों को बेहतर नगरीय सेवाएं उपलब्ध कराई जा सकें।

कारगिल विजय दिवस समारोह की तैयारी बैठकसम्पन्न

÷Ùø संवाददाता ■ रीवा

अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद की तैयारी बैठक जिला सैनिक विश्राम गृह मे आयोजित की गई। बैठक में राष्ट्रीय सचिव सार्जेंट रमेश पाण्डेय उपस्थित रहे थे। बैठक में राष्ट्रीय सचिव ने बताया कि आगामी 25 व 26 जुलाई की प्रतिनिधि सभा एवं राष्ट्रीय पर्व कारगिल विजय दिवस समारोह में शामिल होने के लिए राष्ट्रीय अध्यक्ष, उपाध्यक्ष,पालक अधिकारी और उत्तर और मध्य क्षेत्र के संगठन सचिव के अलावा सभी चारो प्रांतों के प्रतिनिधि 24 जुलाई के दोपहर से आना प्रारंभ हो रहा है जो 25 की सुबह 8 बजे तक सभी पहुंच जाएंगे। कार्यक्रम को सुचारू रूप से व्यवस्थित संपन्न होने के लिए जिला पदाधिकारियों की समितियां गठित कर दी गई है। बैठक में जो संगठन में कार्यरत सक्रिय हैं और तीनों युद्ध में भाग लिया है उम्र 85 वर्ष के ऊपर है तो उनको भी सम्मानित किया जाएगा। पर्यावरण के दिशा मे कार्य करते हुए एक पेड़ शहीदों के नाम जिला सैनिक कल्याण कार्यालय रीवा के परिसर में सभी प्रतिनिधियों के द्वारा 26 जुलाई को सुबह लगाए जाएंगे। कारगिल युद्ध के अलावा अन्य युद्धों और आतंकवादी घटनाओं में जिले के वीर सपूतों ने अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान दिया है उनकी वीर- नारियों और वीर माता- पिता का भी सम्मान किया जाएगा,साथ ही गणमान्य नागरिक जो समाज सेवा में समर्पित है उन्हें भी सम्मानित किया जाएगा। बैठक में कैप्टन संत राज सिंह,एस के शुक्ल, जे के तिवारी, सुबेदार मेजर मान सिंह,आर एन सिंह, राघवेन्द्र पाण्डेय, संतोष तिवारी, सुबेदार अनुज प्रताप सिंह, नरेन्द्र त्रिपाठी,पीओ गोपीनाथ पटेल, मोहन सिंह यादव, सहित अन्य इकाइयों के पदाधिकारी उपस्थित रहे थे।

संपादकीय

विनाशकारी बाध्यता

युद्ध के बढ़ते तनाव के बीच ऐसी संभावनाएं और आशंकाएं जताई जा रही हैं कि ईरान अब परमाणु बम बनाने की सोचने लगा है। वह परमाणु अप्रसार सन्धि से भी बाहर आ सकता है। रक्षा विशेषज्ञ भी इन संभावनाओं और आशंकाओं को ही परमाणु बम बनाने का आधार मान रहे हैं। रूस ने भी कई बार बयान दिया है कि हालात ईरान को एटम बम बनाने को बाध्य कर रहे हैं। इस संदर्भ में रक्षा विशेषज्ञ ईरान की तुलना उत्तर कोरिया से कर रहे हैं। उत्तर कोरिया 1985 में एनपीटी का सदस्य था। फिर भी उसने रहस्यमयी परमाणु परीक्षण किए और छोटे-छोटे बम भी बना लिए। उसने 2003 में एनपीटी को छोड़ दिया। आज वह सरेआम विनाशक मिसाइलों के परीक्षण कर रहा है। उसके पास कितने परमाणु बम हैं, उसका सत्यापित हिसाब किसी के पास भी नहीं है, लेकिन अमरीका और यूरोपीय देश उससे आशंकित रहते हैं।

क्या यह युद्ध ऐसे मुकाम पर पहुंच गया है कि ईरान 'उत्तर कोरिया' बन सकता है? वैसे ईरान के पास करीब 440 किग्रा संवर्धित यूरेनियम बताया जाता है। यह संवर्धन 60 फीसदी से अधिक है, जिससे छोटे एटम बम बनाए जा सकते हैं! जब तक अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) ईरान के परमाणु कार्यक्रम का निरीक्षण कर रही थी, उसके आधार पर अब भी आकलन किए जा रहे हैं कि ईरान ने परमाणु बम नहीं बनाया है। दिवंगत सुप्रीम लीडर खामेनेई भी घोषित रूप से परमाणु बम बनाने के पक्ष में नहीं थे, लेकिन मौजूदा सुप्रीम लीडर मुज्तबा खामेनेई की इस बाबत सोच अभी तक अस्पष्ट है। ईरान के सबसे बड़े और प्रमुख परमाणु केंद्र 'नतांज' सहित फोर्डो और इस्फहान परमाणु केंद्रों में यूरेनियम संवर्धन अब भी जारी है, ऐसी खबरें आती रही हैं। ये जमीन के बहुत नीचे और सुरक्षित परमाणु केंद्र हैं, जिन्हें अमरीका और इजरायल अभी तक नष्ट करने में नाकाम रहे हैं। अमरीकी सेना ने जिस बुशहर परमाणु प्लांट के निकट अभी हवाई हमले, बम विस्फोट किए हैं, वह ईरान का एकमात्र सक्रिय परमाणु बिजलीघर है। इस 1000 मेगावाट के संयंत्र को जर्मनी ने बनाना शुरू किया था, लेकिन वह अधूरा छोड़ कर भाग गया। फिर रूस ने इसे अंतिम रूप दिया। यह ईरान का सर्वाधिक संवेदनशील परमाणु प्लांट है। राष्ट्रपति ट्रंप ने बिजली संयंत्रों और महत्वपूर्ण पुलों पर हमले करने का ऐलान किया है। बीते गुरुवार को अमरीकी हमले में उन रेल पुलों को तबाह किया गया है, जो तेहरान और मशहद को जोड़ते हैं। मशहद में ही खामेनेई को सुपुर्द-ए-खाक किया गया है। अमरीकी हमलों में पहली बार चाबहार बंदरगाह के ट्रैफिक कंट्रोल टॉवर और आईआरजीसी के इमाम अली बेस को निशाना बनाया गया है। जाहिर है कि नुकसान भी हुआ है। इस बंदरगाह को विकसित करने में भारत ने भी 1400 करोड़ रुपए का निवेश कर रखा है, लिहाजा हमारा भी नुकसान हुआ है। बहरहाल बीते दिनों एक खबर आई थी कि बुशहर में ही करीब 2100 किग्रा प्लूटोनियम का भंडार है। बेशक इससे 200 परमाणु बम बनाए जा सकते हैं। यह खबर फोर्ब्स के अलावा रॉयटर्स और गूगल ने भी जारी की थी। व्याख्या की गई कि ईरान यथाशीघ्र परमाणु शक्ति बनना चाहता है। अस्तित्व बचाने का यही आखिरी विकल्प उसे लगता है। इसे ईरान 'आत्मरक्षा का कवच' करार देता है, लिहाजा उसने परमाणु केंद्रों और ठिकानों पर सैन्य तैनाती करना भी शुरू कर दिया है। 'नतांज' केंद्र के तहत यूरेनियम जमीन के 300 फुट नीचे दबा है। जो सवंर्धित किया जा रहा है, उसे अन्यत्र शिफ्ट किया जा रहा है। संवर्धित यूरेनियम और प्लूटोनियम को मिला कर ईरान के पास करीब 2550 किग्रा विस्फोटक सामग्री है। इस मात्रा से वह व्यापक नरसंहार कर सकता है और परमाणु बम के विकिरण से कितनी पीढ़ियां 'विकलांग' होंगी, इसका अनुमान लगाना संभव नहीं है।

विशेषज्ञों का अध्ययन दूर करेगा इथेनॉल के भ्रम

इथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल को तेज़ी से बढ़ावा देने की सरकारी नीति हाल के हफ़्तों में लोगों की कड़ी आलोचना का निशाना है, हालांकि, यह नीति 2022 से लागू है। 20 प्रतिशत इथेनॉल मिश्रण का मूल लक्ष्य 2030 तक हासिल करना था, लेकिन समयपूर्व 2025 कर दिया गया। इस नीति के फ़ायदों के बारे में कई दावे किए जा रहे हैं- ऊर्जा सुरक्षा और विदेशी मुद्रा की बचत से लेकर किसानों के कल्याण तक। फिर भी, वाहन मालिक इंजन खराब होने और माइलेज कम होने की शिकायत कर रहे हैं। अपने बचाव में, सरकार का कहना है कि यह नीति सबूतों पर आधारित है और डेटा समर्थित है, जिसमें अधिकांशतः पेट्रोलियम संगठनों के बेनामी और अप्रकाशित अध्ययनों का हवाला दिया गया है।

वाहनों पर इथेनॉल-मिश्रित ईंधन के असर के दावों को साबित करने के लिए कोई स्वतंत्र अथवा विशेषज्ञों द्वारा जांचा-परखा अध्ययन मौजूद नहीं है। अगर इथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल का इस्तेमाल करने वाली कारों की फ़्यूल एफ़िशिएंसी (ईंधन दक्षता) कम है-जैसा कि अब कार निर्माता भी मान रहे हैं-और इंजन खराब हो रहे हैं-जैसा कि वाहन मालिक शिकायत कर रहे हैं-तो इससे आर्थिक लागत बढ़ेगी। इसके अलावा, कृषि एवं खाद्य विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि इथेनॉल मिश्रण से खाद्य सुरक्षा पर असर पड़ेगा, क्योंकि किसान खाद्य फ़सलों के बजाय ज़्यादा पानी खर्च करने वाली गन्ने की खेती की ओर बढ़ रहे हैं। इथेनॉल की बढ़ती मांग के मद्देनजर निर्माता कंपनियां मक्का और चावल का इस्तेमाल कच्चे माल के तौर पर कर रही हैं। सरकार को नीति के लक्ष्यों के बारे में स्पष्ट होना जरूरी है और इसके फ़ायदों के बारे में ठोस सबूत पेश करने चाहिए, न कि आलोचकों पर गलत इरादे का आरोप मढ़ देना या इसके नकारात्मक प्रभावों को लेकर लोगों के गुस्से को नज़रअंदाज़ करना।

लोग अक्सर ब्राज़ील का उदाहरण देते हैं, जहां 1980 के दशक में इथेनॉल मिश्रण शुरू किया गया था। इसके दीर्घकालीन असर अब जाकर सामने आ रहे हैं। यह नीति 1970 के दशक में चीनी के फालतू उत्पादन का सीधा नतीजा थी और इसे चीनी लॉबी के दबाव में शुरू किया गया था। पिछले चार दशकों में, इसने वहां ज़मीन के इस्तेमाल में भारी बदलाव किया है, नतीजतन, ईंधन फ़सलों के लिए जगह बनाने के वास्ते अमेज़न के जंगलों की कटाई के कारण भारी मात्रा में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन हुआ है। वैसे भी, बड़े पैमाने पर ऊर्जा फ़सलों की खेती के लिए भारत की जलवायु और मिट्टी की स्थिति ब्राज़ील जैसी नहीं है। किसी भी नई तकनीक की तरह, ग्रीन तकनीक को भी- चाहे वह इथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल हो या इलेक्ट्रिक गाड़ियां-व्यापक पैमाने पर लागू करने पर अनचाहे बुरे असर हो सकते हैं। जैसे किसी नई वैक्सीन या दवा को लाने से पहले क्लिनिकल ट्रायल किए जाते हैं, वैसे ही सभी नई तकनीकों का अलग-अलग स्थितियों में कुछ समय तक फील्ड-टेस्ट किया जाना चाहिए, और उससे मिले डेटा का विश्लेषण करवाने को स्वतंत्र विशेषज्ञों को दिया जाए। परिवहन अर्थव्यवस्था का एक अहम अंग है, और किसी भी नई तकनीक को लागू करने से पहले उसकी कई पहलुओं से जांच होनी चाहिए और सिर्फ़ वाहन निर्माता ही नहीं, बल्कि सभी हितधारकों के साथ उस पर चर्चा होनी चाहिए।

यह काफी चौंकाने वाली बात है कि सरकार ने अपने बचाव में वाहन निर्माता कंपनियों को उन शिकायतों का जवाब देने के लिए बुलाया-जो वाहन का उपयोग करने वाले कह रहे हैं-जैसे कि माइलेज में कमी और गाड़ियों के धातु एवं रबर पुर्जों का खराब होना। दुनिया भर में वाहन निर्माता डेटा में हेरफेर करने के लिए कुख्यात हैं, जैसा कि 2015 में अमेरिका में फॉक्सवैगन एमिशन स्कैंडल में यह सामने आया था। कार बनाने वाली इस कंपनी ने अपनी कारों के डीज़ल इंजन को कुछ इस तरह प्रोग्राम किया था कि टेस्टिंग के दौरान उत्सर्जन सीमा नियंत्रण में दिखे ताकि नियामक मानकों पर खरा उतरता दिखाई दे; नतीजतन, 40 गुना ज़्यादा प्रदूषण पैदा करने वाली कारों को भी मानकों के भीतर पाया मानकर स्वीकृति दे दी गई। अगर पेट्रोलियम मंत्री के दावे के मुताबिक इथेनॉल नीति वाकई वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है, तो सरकार को उन तमाम अध्ययनों के नतीजे सार्वजनिक करने चाहिए, जो ईंधन की क्षमता, अलग-अलग पुर्जों और इंजन पर मिश्रित ईंधन के दीर्घकालीन प्रभाव और अलग-अलग तरह की गाड़ियों पर अलग-अलग परिचालन स्थितियों में परीक्षण डेटा को जांचने के लिए किए गए हों।

इसके अलावा, हमें इथेनॉल-मिश्रित ईंधन के पर्यावरण के अनुकूल होने के बारे में वैज्ञानिक सुबूत चाहिए, जो कि इथेनॉल के संपूर्ण पर्यावरणीय एवं कार्बन फुटप्रिंट पर आधारित हो- यानी कच्चे ईंधन के उत्पादन से लेकर कारों में वास्तविक इस्तेमाल होने तक। फिर, हमें मिश्रित ईंधन के इस्तेमाल करने पर लागत-लाभ विश्लेषण की ज़रूरत है। यह इसलिए ज़रूरी है क्योंकि माइलेज गिरने की चिंताएं हैं। अगर माइलेज 5 प्रतिशत भी कम हो जाती है और कार उपयोग करने वालों को ज़्यादा पेट्रोल खरीदना पड़ता जाए, तो आर्थिक फ़ायदों और विदेशी मुद्रा की बचत के दावे हवा हो जाते हैं।

दिल्ली सरकार की इलेक्ट्रिक व्हीकल (ईवी) पॉलिसी के मामले में भी ऐसी ही बातें लागू होती हैं। यह पॉलिसी मुख्यतः दुपहिया और तिपहिया केंद्रित है। इसमें पेट्रोल से चलने वाली नई मोटरसाइकिलों और आटो-रिक्शा के पंजीकरण को बंद करने की समय-सीमा तय कर दी गई है। मुख्यमंत्री के दावे में इस कदम को सही ठहराने के लिए चुनिंदा डेटा का सहारा लिया है। दरअसल, दिल्ली में कुल गाड़ियों में दुपहिया का अंश 62 फीसदी है, लेकिन वाहन चालन से पैदा होने वाले पार्टिकुलेट मैटर (पीएम 2.5) उत्सर्जन में उनका अंश मात्र 15 प्रतिशत है। नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़, बेंगलुरु के गुफ़रान बेग द्वारा प्रकाशित 2025 नीति सारांश अनुसार, हल्के और भारी व्यावसायिक वाहनों का अंश परिवहन उत्सर्जन में 39 प्रतिशत है, जबकि शहर की कुल गाड़ियों में उनकी हिस्सेदारी 3 फीसदी से भी कम है। अतः व्यावसायिक वाहनों और बसों से पैदा होने वाले उत्सर्जन को कम करने से पर्यावरण और इंसानी सेहत को सबसे ज़्यादा फ़ायदा होगा। सार्वजनिक नीतियों में तथ्य आधारित क्रमबद्ध व्यवस्था का होना जरूरी होता है।

दिनेश सी. शर्मा
लेखक विज्ञान संबंधी विषयों के विशेषज्ञ हैं

पर्यावरण पर संसदीय स्थायी समिति ने नीति के टुकड़ों में बंटे हुए नज़रिए के खिलाफ़ चेताया था और सुझाव दिया था कि राज्य स्तर के बजाय एयरशेड स्तर पर उपाय किए जाएं। अगर ऐसा तरीका नहीं अपनाया गया, तो दिल्ली में ईवी अपनाने से पर्यावरण को उतना फ़ायदा नहीं होगा जितना कि होना चाहिए; क्योंकि दिल्ली के प्रदूषण फैलाने वाले वाहन पड़ोसी राज्यों में चले जाएंगे और वहां से आने वाली साझा हवा में प्रदूषण बढ़ाते रहेंगे। सार्वजनिक हित नीति बनाने का काम भरोसेमंद और प्रासंगिक प्रमाण आधारित हो, न कि राय, अल्पकालिक लाभ, संकीर्ण राजनीतिक और कारोबारी हितों या विचारधारा पर। नीति से जुड़े फ़ैसले पारदर्शी और निष्पक्ष होने चाहिए और उनका एकमात्र मकसद जनहित हो।

विधिक बिरादरी के लिए 'वेकअप कॉल'

डॉ. सुधीर कुमार
लेखक कुरुक्षेत्र वि.वि. के विधि विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं।

कानून स्थिर नहीं है, यह जीवित है और समय के साथ बदलता रहता है। एक वकील के लिए उसकी डिग्री केवल एक प्रवेश द्वार है, लेकिन असली परीक्षा अदालत के फर्श पर हर दिन होती है। सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में 'अजय विज बनाम इंडियन बैंक्स एसोसिएशन' (2026) मामले में जो टिप्पणी की, वह महज एक न्यायिक आदेश नहीं है, बल्कि भारतीय विधिक बिरादरी के लिए एक अत्यंत गंभीर 'वेकअप कॉल' है। यह मामला केवल एक वकील का निजी विवाद नहीं, बल्कि भारतीय न्याय प्रणाली की एक गंभीर खामी को उजागर करने वाला एक ऐतिहासिक घटनाक्रम है। एक वकील की कानूनी राय को 'लापरवाही' मानकर उसे 'कॉशन लिस्ट' में डालना, वकील की बदलती भूमिका और उसकी व्यावसायिक जवाबदेही पर बड़े प्रश्नचिह्न लगाता है। यह निर्णय बताता है कि वकील अब केवल अपने मुवक्किल का पक्ष रखने वाला व्यक्ति नहीं रह गया है, बल्कि वह एक 'विशेषज्ञ' बन गया है, जिसकी एक छोटी-सी गलती भी पूरी न्याय व्यवस्था की साख पर सवाल खड़ा कर सकती है। आज के डिजिटल युग में, जहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और बदलता वैश्विक परिदृश्य कानून के स्वरूप को निरंतर नया आकार दे रहे हैं, क्या केवल पुरानी किताबों के ज्ञान से न्याय की रक्षा संभव है? सुप्रीम कोर्ट का यह निर्देश कि वकीलों के लिए 'कंटीन्यूइंग लीगल एजुकेशन' अनिवार्य हो और एक 'नेशनल लीगल एकेडमी' की स्थापना की जाए, भारतीय न्याय व्यवस्था की गुणवत्ता को वैश्विक स्तर पर ले जाने की दिशा में एक साहसी और दूरदर्शी कदम है। कानून का पेशा केवल बहस करना नहीं है, बल्कि यह एक 'पवित्र विश्वास' है, जिसे बनाए रखने के लिए निरंतर विकास अनिवार्य है। आज के इस 'ज्ञान युग' में, कानूनों, तकनीक और विनियामक ढांचों में इतनी तेजी से बदलाव हो रहे हैं कि वर्षों पहले अर्जित किया गया ज्ञान आज पूरी तरह अप्रासंगिक हो सकता है। इसके साथ ही, कानूनी क्षेत्र में तकनीकी पिछड़ापन एक बड़ी चुनौती बना हुआ है, जिसे दूर करना समय की मांग है। आज के आधुनिक वकील के लिए ई-कोर्ट्स, वर्चुअल हियरिंग, ऑनलाइन केस मैनेजमेंट और कानूनी डेटा विश्लेषण में दक्ष होना केवल कौशल का प्रदर्शन नहीं, बल्कि आवश्यकता है। इसके अलावा, अदालती शिष्टाचार, मुवक्किल के प्रति जवाबदेही और अनैतिक प्रथाओं पर अंकुश लगाने के लिए निरंतर नैतिक प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है, ताकि इस पेशे की गरिमा हमेशा बनी रहे।

अमेरिका और कनाडा जैसे देशों में 'मैन्डेटरी कंटीन्यूइंग लीगल एजुकेशन' लागू है। वहां वकीलों के लिए अपने लाइसेंस को बनाए रखने हेतु हर साल निश्चित घंटों की कानूनी शिक्षा या सेमिनार में भाग लेना अनिवार्य होता है। इसी तरह, सिंगापुर और ऑस्ट्रेलिया में बार एसोसिएशन और सरकार के सहयोग से 'निरंतर पेशेवर विकास' कार्यक्रमों को कड़ाई से लागू किया जाता है, जहां इन क्रेडिट्स को पूरा न करने पर वकील के अभ्यास करने के अधिकार को अस्थायी रूप से निलंबित तक किया जा सकता है। भारत में कानूनी पेशे का विस्तार तेजी से हुआ है, लेकिन गुणवत्ता उस अनुपात में नहीं बढ़ सकी है। आज देश में वकीलों की संख्या 20 लाख के आंकड़े को पार कर गई है और हर वर्ष हजारों युवा कानून की डिग्री लेकर इस क्षेत्र में आ रहे हैं। दूसरी ओर, भारतीय अदालतों में लंबित मामलों का बोझ 5 करोड़ से भी अधिक हो चुका है। वकीलों की संख्या में अनियंत्रित वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति 'प्रोफेशनल स्किल डेवलपमेंट' के अवसर सीमित हो गए हैं। 'नेशनल लीगल एकेडमी' का उद्देश्य केवल वकीलों की संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि उन्हें निरंतर प्रशिक्षण और कौशल उन्नयन के माध्यम से 'सक्षम वकीलों की फौज' में बदलना है। यह एकेडमी नए वकीलों के लिए एक 'मेंटरशिप हब' के रूप में कार्य करेगी, जहां वरिष्ठ अधिवक्ता अपने व्यावहारिक अनुभव साझा करेंगे। इस प्रयास से किताबी ज्ञान और अदालती हकीकत के बीच की खाई मिटेगी और मुकदमों के जल्द निस्तारण की दर में 15 से 20 प्रतिशत तक की महत्वपूर्ण वृद्धि संभव हो सकेगी। बार काउंसिल ऑफ इंडिया को कानूनी पेशे के मानकों को ऊंचा उठाने के लिए एक 'सुपर-रेगुलेटर' के रूप में अपनी भूमिका को सशक्त बनाना होगा। इसके कार्यान्वयन हेतु सबसे पहले वकीलों के लिए एक अनिवार्य क्रेडिट-आधारित प्रणाली लागू की जानी चाहिए, जिसके तहत हर वकील के लिए प्रतिवर्ष 20 से 30 घंटे का प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य हो। इस शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए एक हाइब्रिड लर्निंग मॉडल अपनाना आवश्यक है, जहां नेशनल लीगल एकेडमी को ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों माध्यमों से जोड़कर दूरदराज के क्षेत्रों के वकीलों तक पहुंचाया जा सके। एकेडमी की सफलता के लिए 'सार्वजनिक-निजी भागीदारी' का मॉडल सबसे प्रभावी होगा। इसमें शीर्ष लॉ फर्मों और अनुभवी वकीलों को 'गेस्ट लेक्चरर' के रूप में जोड़कर व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया जा सकता है। न्यायिक प्रणाली में 'नेशनल लीगल एकेडमी' की स्थापना एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जो कानूनी पेशे को केवल 'पढ़ाई' तक सीमित न रखकर इसे एक 'थिंक टैंक' में बदल सकती है। बार काउंसिल ऑफ इंडिया को इसे अधिकारों के हनन के बजाय 'अधिकारों के विस्तार' के रूप में देखना चाहिए।

ताला-चाबी सब बेकार, जब चौकीदार हो गुनहगार

इस बार हाथी घोड़े नहीं आये, न ही तलवारें चमकीं। न मंदिर टूटे। न ही देवमूर्तियां लूटी गईं। सोना-चांदी और अशर्फियों को ऊंटों व घोड़ों पर लादकर सीमाओं के पार भी नहीं ले जाया गया। पर नोटों की गड्डियां गिनते-गिनते ही लुप्त हो गईं। सोना-चांदी ऊपर ही ऊपर हुर्रफुर्र हो गया। अब चोरी भी आत्मनिर्भर हो गई है, बाहर वालों को तकलीफ देने की जरूरत ही नहीं रही। इतिहास की किताबों में हम सदियों से उन आक्रान्ताओं को कोसते आ रहे हैं कि विदेशी लुटेरे आये और हमारे मंदिरों से धन-सम्पदा लूट ले गये। जब मंदिर की चौखट पर खड़ा व्यक्ति ही मंदिर की पवित्रता को कलंकित कर दे तो विदेशी लुटेरों को गालियां देने से क्या फायदा? प्रभु चरणों में जो चढ़ावा अर्पित होता है, वह केवल मुद्रा नहीं है। वह किसी मां की मनौती होती है, किसी किसान की पहली कमाई होती है, किसी वृद्ध की जीवनभर की बचत होती है, किसी बच्चे की गुल्लक होती है। कहावत तो है कि राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट। बस इन्हें 'लूटना' शब्द याद रह गया और लूट लिया। मंदिर में आने वाला भक्त जूते बाहर छोड़ता है और विश्वास भीतर रखकर जाता है। लेकिन जब भीतर ही विश्वास की जेब कट जाए तो फिर भगवान भी क्या करें? सबसे बड़ा नुकसान चोरी हुए सामान का नहीं बल्कि उस विश्वास का होता है जो लाखों लोग अपने साथ लेकर मंदिर की चौखट तक आते हैं। सोना-चांदी फिर आ जाएगा, लेकिन भरोसे की मरम्मत किसी सुनार के बस की बात नहीं। कहते हैं कि 'घर का भेदी लंका ढाए' लेकिन अब तो हालत यह हो गई है कि घर का भेदी सीधे मंदिर का दानपात्र ही साफ कर देता है। पहले चोर रात के अंधेरे में आते थे, अब वे ड्यूटी पर आते हैं। पहले ताले तोड़े जाते थे, अब भरोसा तोड़ा जाता है। हमारे देश में समितियां बनाना सबसे आसान काम है। घटना हुई नहीं कि जांच समिति बैठ गई। समिति रिपोर्ट देगी, रिपोर्ट पर समिति बनेगी, फिर उस समिति की रिपोर्ट की समीक्षा के लिए एक और समिति। आखिर में निष्कर्ष निकलेगा कि व्यवस्था को और मजबूत करने की आवश्यकता है। यह वाक्य सरकारी फाइलों का वही अमर प्रसाद है जो हर जगह चढ़ जाता है।

– शमीम शर्मा

पारिवारिक त्याग की अनदेखी कर आजादी की चाह

क्षमा शर्मा
लेखिका वरिष्ठ पत्रकार हैं।

फरीदाबाद में राहुल नाम के लड़के ने आत्महत्या कर ली। इससे पहले उसने वीडियो बनाया और कहा कि वह घर के सारे काम करता है, व्यापार भी करता है, फिर भी उसकी पत्नी उसे मारती-पीटती है। दूसरा किस्सा पुणे के केतन का है, कहा गया कि उसकी मंगेतर सिया ने अपने मित्र चेतन की मदद से उसे लोहागढ़ पहाड़ी से धक्का दे दिया। सिया इस रिश्ते से खुश नहीं थी क्योंकि केतन के सिर पर बाल नहीं थे और वह हकलाता भी था। इन दोनों मामलों में युवाओं ने जान गंवाई। इनके घर वालों, परिजनों पर क्या गुजरी, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है। मगर अफसोस की बात ये है कि इन दोनों की मृत्यु को स्त्री अधिकारों के नाम पर सेलिब्रेट किया गया। कहा गया कि अब तक स्त्रियां सहती रही हैं, मगर अब वे बदला ले रही हैं। मुस्कान सोनी नाम की दांतों की डॉक्टर ने तो बाकायदा केतन की मौत का मजाक उड़ाया कि उसके साथ तो ऐसा होना ही था और हा-हा-हा करते वीडियो पोस्ट किया। हालांकि बाद में इस डॉक्टर ने माफी भी मांगी।

जब हम अधिकारों की बात करते हैं, तो उनका अर्थ हमारे दैनंदिन जीवन की सुविधाओं से जुड़ा होता है। छोटे, बड़े की भावना को खत्म करने की बात होती है। लेकिन मृत्यु पर हंसना, मीम्स बनाना, कहना कि वक्त आ गया है कि अब स्त्रियों को अपने प्रति किए गए हर अपराध का बदला लेना चाहिए, कितना दुखद है। अंग्रेजी की एक बड़ी लेखिका और एक बड़े लेखक ने तो यह तक कहा कि सिया ने केतन को मारा, इसके लिए सिर्फ वह ही नहीं, बल्कि हमारे परिवारों का ढांचा जिम्मेदार है। जहां लड़कियों को कुछ करने की आजादी नहीं। वे न अपनी मर्जी से शादी कर सकती हैं, न देर रात लौट सकती हैं, न शराब पी सकती हैं। ऐसा कहने वाले वे लोग हैं, जो बहुत अच्छी आर्थिक स्थिति वाले हैं। जिनके इर्द-गिर्द सेवकों और सिक्योरिटी गार्ड्स की पूरी फौज है, लेकिन ज्ञान वे उन आम लड़कियों को दे रहे हैं, जो अमूमन अपराध की जद में होती हैं। 'अपनी सुरक्षा अपने हाथ' वाली कहावत इन पर चरितार्थ होती है। फिर देर रात तक पार्टी करना या शराब पीना आम लड़कियों का जीवन नहीं है। और क्या स्त्रियों के लिए शराब पीना इतनी अच्छी बात है। फिर ऐसा क्यों है कि अक्सर महिलाएं अपने घर के आसपास शराब के ठेके खुलने का विरोध करती हैं। शराबबंदी की मांग करती हैं क्योंकि शराब के कारण ही उनके पति तरह-तरह की हिंसा करते हैं। यदि वे पैसे भी कमाएं, तो उनके पैसे शराब पीने के लिए छीन लिए जाते हैं। उन्हें घर से बाहर निकाल दिया जाता है।

गांधी जी जिन्होंने कहा था कि शराब आत्मा का नाश करती है, उनकी इस शिक्षा को भी लोग भूल गए हैं। डाक्टरों

की सलाह भी याद नहीं रखते, जो कहते हैं कि शराब पीने से शरीर के तमाम अंगों पर प्रभाव पड़ता है। मानसिक स्वास्थ्य भी खराब होता है। यदि इन लोगों की मानें तो देश में चलने वाले जितने नशा मुक्ति केंद्र हैं, उन्हें बंद कर देना चाहिए। लेकिन 'माई लाइफ और माई च्वाइस' का विचार एलीट स्त्री-पुरुषों के मन में इतना बसा हुआ है कि वे अपनी शर्तों को दूसरों पर लाद रहे हैं और इन्हें ही दूसरों की च्वाइस बता रहे हैं। वे सिया का बचाव करते हुए उसके घर वालों और हर एक के घर वालों को दोष दे रहे हैं। पश्चिम का उदाहरण बार-बार दिया जा रहा है कि वहां देखो स्त्रियों को कितनी आजादी है। क्या सचमुच!

अपने यहां माता-पिता बच्चों को हमेशा बच्चा मानते हुए, उनकी सुरक्षा की चिंता करते हैं। उनकी पढ़ाई-लिखाई का खर्चा उठाते हैं। पढ़ने के लिए विदेश भेजते है। करोड़ों रुपये का लोन लेते हैं, उसे खुद चुकाते हैं। बच्चों के लिए घर बनाते हैं। यानि कि अपनी उम्र और सारे संसाधन वे बच्चों के लिए लगा देते हैं, जिससे उनका जीवन आसान हो सके। माता-पिता के सारे संसाधन चाहिए, लेकिन जीवन अपनी शर्तों पर जीना है। कौन रोकता है, लेकिन फिर संसाधन भी खुद जुटाइए। माता-पिता की जमीन-जायदाद में भी हिस्सा मत मांगिए। बीमारी-हारी में भी अपनी मदद खुद कीजिए। ड्रीम वैडिंग करना हो, तो खुद पैसे जुटाइए। उनके सम्पर्कों का भी लाभ मत उठाइए। अधिकार बिना कर्तव्यों के नहीं मिलते। सिर्फ कर्तव्य ही नहीं, अधिकारों की कीमत भी चुकानी पड़ती है। लेकिन आजादी के नाम पर कीमत कोई चुकाना नहीं चाहता। हां मन की बात न हो, तो हत्या की जा सकती है। अतिवादी लोग इसे जायज ठहराने के लिए झंडा बुलंद कर सकते हैं। विदेश में लोन लेकर पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता इस कर्ज को नहीं चुकाते। विदेशों में कई ऐसे आदमियों से मिली, जिनकी उम्र पचास के पार है, लेकिन अभी तक वे अपनी पढ़ाई के लिए उठाए गए कर्ज को चुका रहे हैं। भारत में तो माता-पिता की हालत ये है कि ताउम्र खटते भी हैं और पिटते भी हैं। बातें बनाते रहिए कि बुजुर्गों के लिए क्या-क्या होना चाहिए।

विमर्शों की नकारात्मकता कितनी है कि जहां मौत का भी जश्न मनाया जाए। जाति, धर्म, लिंग देखकर शोक और खुशी प्रकट की जाए, इससे यही पता चलता है कि हमारा वैचारिक आधार कितना पोला है, जहां हम किसी मरने वाले की जाति या जेंडर देख रहे हैं। उसके राजनीतिक विचारों के आधार पर उसकी मौत की खुशी या दुःख मना रहे हैं। इसका पहली बार अहसास पत्रकार रोहित सरदाना की मौत पर हुआ। जब एक मशहूर इनफ्लुएंसर ने कहा कि यह अकेला क्यों मर गया, इसके बीवी -बच्चे क्यों नहीं मर गए। यह एक तरह से वही हिटलरी विचार है, जिसकी आलोचना करते-करते ऐसे लोग दुबले हुए जाते हैं। यदि बच्चों को अपनी पसंद से विवाह करने दिया जाए तो भी उनका जीवन सुचारु रूप से चलेगा, इसकी क्या गारंटी है। अपनी पसंद से शादी करने के बाद भी इन दिनों कितने मामले ऐसे आते हैं, जहां पत्नी ने पति को मार दिया, पति ने पत्नी को, गर्लफ्रेंड ने बॉयफ्रेंड को और बॉयफ्रेंड ने गर्लफ्रेंड को। चर्चित घटना में भरत तिवारी की मौत के मामले में तो बहुत से नेता भी कूद पड़े और कहने लगे कि उसके वर्ग ने जो किया है, वह तो उन्हें भुगतना ही पड़ेगा। कोई सवर्ण, कोई दलित, कोई स्त्री, कोई पुरुष, किसी की भी मृत्यु हंसने और आनंद मनाने के लिए कैसे हो सकती है। तमाम सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर एक से एक नफरती विचारों की होड़ लगी है। सोचते तो ये थे कि तकनीक बढ़ेगी, तो तमाम तरह के नफरत फैलाने वाले विचार अपने आप खत्म हो जाएंगे। लेकिन हुआ इसका उलटा है। नफरत और बदले की भावना की फसल लहलहा रही है। लोग भूल रहे हैं कि नफरत से नफरत उपजती है और बदले से बदला।

कोई प्रत्याशी समाज तो कोई पार्टी देकर मांग रहा वोट

महंगा होता चेंबर चुनाव

नगर संवाददाता ■ ग्वालियर

मप्र चेंबर ऑफ कॉमर्स के चुनाव में कुछ प्रत्याशी लगातार पार्टियां देकर अपना वोट बैंक पक्का मान रहे हैं। वहीं समाज के नाम पर बैठकें की जा रही हैं ताकि अपने समाज के वोट पुख्ता हो सकें।

अध्यक्ष पद की सर्वाधिक चर्चा

चुनाव में इस बार अध्यक्ष पद का चुनाव बेहद रोचक है, क्योंकि क्रिएटिव हाउस ने प्रत्याशी नहीं उतारा है। ऐसे में व्हाइट हाउस के पारस जैन के सामने पुराने धुरंधर डॉ. प्रवीण अग्रवाल मैदान में हैं। पारस की ओर से हाउस के अलावा व्यक्तिगत रूप से प्रचार किया जा रहा है तो डॉ अग्रवाल अपने साथियों के साथ अभियान चला रहे हैं। दोनों प्रत्याशियों के बीच कुछ मुद्दों पर आरोप-प्रत्यारोप भी चले हैं। खास बात यह है कि पारस के लिए जहां व्हाइट हाउस के डॉ. वीरेन्द्र गंगवाल एवं अरविंद अग्रवाल ने मोर्चा संभाल रखा है और रविवार को रंगमहल गार्डन में दाल-बाटी की पार्टी देकर ताकत दिखाई है। उनके लिए यह चुनाव प्रतिष्ठा का विषय बना हुआ है। वहीं प्रवीण अग्रवाल हाउस वाद एवं पीढ़ियों की परंपरा को तोड़ने की बात कर रहे हैं। उन्हें भरोसा है कि आम व्यापारी उनके साथ है। यही कारण है कि इस बार अध्यक्ष चुनाव की सर्वाधिक चर्चा है।

व्हाइट हाउस की पार्टी में क्रिएटिव के उप संयोजक

व्हाइट हाउस द्वारा रविवार को रंगमहल गार्डन में आयोजित दाल-बाटी की पार्टी में क्रिएटिव हाउस के तमाम सदस्य भी पहुंचे। इनमें क्रिएटिव हाउस के उप संयोजक ओमप्रकाश अग्रवाल ने पहुंचकर पारस जैन को शुभकामनाएं दी। श्री अग्रवाल का कहना है कि वह डॉ वीरेंद्र गंगवाल एवं पारस जैन के बुलावे पर गए थे। वैसे भी क्रिएटिव हाउस ने अध्यक्ष पद का प्रत्याशी नहीं उतारा है। इसलिए जैन के समर्थन में जाने में कोई बुराई नहीं है। उन्होंने कहा कि यदि अन्य पांच प्रत्याशियों की पार्टी होती तो वह नहीं जाते। वहीं

अध्यक्ष प्रत्याशी पारस जैन ने सोशल मीडिया पर एक पोस्टर साझा किया है जिसमें रिषि आयल मिल के संचालक ओमप्रकाश अग्रवाल द्वारा उन्हें जिताने की अपील की गई है। यानी कि दोनों हाउसों में कही न कही दूसरे हाउस के लोगों को मदद की जा रही है।

पमनानी को समाज का समर्थन

संयुक्त सचिव पर व्हाइट हाउस के दीपक पमनानी की ओर से लगातार पार्टियां दी जा रही हैं और सिंधी समाज भी उनके पक्ष में उतरा हुआ है। उनका जमीन का कारोबार ग्वालियर से लेकर इंदौर तक फैला हुआ है। वीनस बैंक्विट में दी गई कॉकटेल पार्टी में सिंधी और पंजाबी समाज के सदस्य बड़ी संख्या में मौजूद रहे। जबकि उनके सामने राकेश अग्रवाल गारमेंट के लिए यह पहला चुनाव है, वे संयुक्त अध्यक्ष पद के प्रत्याशी सुरेश बंसल के साथ लगातार व्यापारियों से संपर्क कर प्रचार अभियान चला रहे हैं। उन्हें भरोसा है कि यदि पमनानी को सिंधी समाज ने जिताने का संकल्प लिया है तो उनके साथ अग्रवाल समाज है। उपाध्यक्ष पद पर क्रिएटिव हाउस के संदीप नारायण अग्रवाल द्वारा व्यापारियों से लगातार संपर्क बनाए रखा गया, जहां तक कि कार्यकारिणी की 42 बैठकों में शत प्रतिशत सहभागिता से वह व्यापारियों में लोकप्रियता बनाने में सफल रहे। जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी सुनील अग्रवाल सनी दूसरी बार चुनाव लड़ रहे हैं, पहले वह संयुक्त सचिव पद का चुनाव लड़ चुके हैं। कोषाध्यक्ष पद पर रोचक स्थिति है। इस पद पर क्रिएटिव ने अजय गोयल को प्रत्याशी बनाया है जो पूर्व अध्यक्ष विजय गोयल के लघु भ्राता हैं। इसलिए विजय गोयल के लिए यह सीट निकालना प्रतिष्ठा बना हुआ है। उनके सामने मनोज अग्रवाल बाबा है जो लगातार दूसरी बार इसी सीट पर लड़ रहे हैं। संयुक्त अध्यक्ष पर क्रिएटिव के सुरेश बंसल के सामने व्हाइट हाउस के विनोद जैन है। श्री बंसल पूर्व में पदाधिकारी रहे हैं और अग्रवाल महासभा के अध्यक्ष हैं जबकि विनोद जैन के लिए पहला चुनाव है। व्हाइट हाउस ने काफी मशक्कत के बाद उन्हें प्रत्याशी घोषित किया था।

स्वास्थ्य शिविर में 550 मरीजों का परीक्षण हुआ

नगर संवाददाता ■ ग्वालियर

मोहना स्थित किरार धर्मशाला में रविवार को एक निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं दवा वितरण शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर सेवानिवृत्त कर्मचारी किरार क्षत्रिय समिति एवं किरार क्षत्रिय समाज समिति मोहना के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया था, जिसमें क्षेत्र के 550 से अधिक ग्रामीणों व जरूरतमंदों ने अपना स्वास्थ्य परीक्षण करवाकर शिविर का लाभ प्राप्त किया। शिविर में ग्वालियर के विभिन्न प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों व सुपर स्पेशलिटी अस्पतालों के विशेषज्ञ डॉक्टरों ने अपनी सेवाएं दीं। मरीजों की सुविधा के लिए पैथोलॉजिस्ट द्वारा ब्लड प्रेशर और शुगर की भी निःशुल्क जांचें की गईं। जिसमें डॉ. सुरेन्द्र सिंह, डॉ. घनश्याम वर्मा, डॉ. सुरजीत सिंह धाकरे, डॉ. शशांक सिंह, डॉ. वीरपाल सिंह, डॉ. पुष्पेंद्र सिंह, डॉ. रुचिका धाकरे, डॉ. मोनिका यादव, डॉ. हितेंद्र सिंह, डॉ. सतीष जाटव, डॉ. दिनेश यादव एवं डॉ. लाखन सिंह शामिल थे।

ओडिशा की तर्ज पर निकलेगी शहर में रथयात्रा

हाइड्रोलिक रथ में बैठकर निकलेंगे भगवान जगन्नाथ

नगर संवाददाता ■ ग्वालियर

ओडिशा की तर्ज पर शहर में इस्कॉन के तत्वावधान में 18 जुलाई को शाम 4:30 भगवान जगन्नाथ हाइड्रोलिक रथ में बैठकर निकलेंगे और अपने भक्तों को दर्शन देंगे। भगवान की इस यात्रा में विदेशी कीर्तनकार भजनों की प्रस्तुति देंगे। भगवान जगन्नाथ की यात्रा 18 जुलाई शनिवार को शाम 4:30 बजे जीवाजी क्लब से आरंभ होगी जो अचलेश्वर मंदिर, इंदरगंज चौराहा, दाल बाजार, नया बाजार, लोहिया बाजार, ऊंट पुल, दौलतगंज, महाराज बाड़ा, सराफा बाजार, नई सड़क, हनुमान चौराहा होते हुए गोयल वाटिका में संपन्न होगी। यात्रा का मुख्य आकर्षण पुरी की तर्ज पर तैयार किया गया विशाल हाइड्रोलिक रथ होगा, जिसमें भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा विराजमान होंगे।

भगवान को खाने में दलिया और खिचड़ी दी जा रही है

भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और बहन सुभद्रा इस समय एकांतवास पर चले गए हैं। पुजारियों द्वारा इनका उपचार कर भोग में दलिया और खिचड़ी दी जा रही है। साथ ही आयुर्वेदिक दवाओं को भी भगवान को दिया जा रहा है।

कायस्थ समाज के अब तक डेढ़ हजार रिश्ते तय

64 वां युवक-युवती परिचय सम्मेलन आयोजित

कायस्थ वैवाहिक परिचय मंच द्वारा 64 वां युवक-युवती परिचय सम्मेलन रविवार को आयोजित किया गया। चित्रगुप्त धाम सर्वदेव मंदिर कायस्थ छात्रावास दौलतगंज में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता हकीम देवी प्रसाद रामप्यारी न्यास के अध्यक्ष अभय चौधरी ने की। संस्था के सचिव अरुण कुलश्रेष्ठ ने बताया कार्यक्रम में अब तक लगभग डेढ़ हजार से अधिक रिश्ते हो चुके हैं। कार्यक्रम भगवान चित्रगुप्त जी की आरती कर पंडित राजेश्वर राव ने प्रारंभ कराया। युवक-युवती परिचय सम्मेलन में ग्वालियर के आसपास के शहरों से भी कायस्थ बंधु अपने विवाह योग्य बच्चों के साथ आए। वर्तमान समय में एकल परिवार होने के कारण विवाह योग्य युवक युवतियों का आपस में संबंध होना कठिन हो गया है इसलिए इस तरह के कार्यक्रमों की अत्यधिक आवश्यकता महसूस होती रही है इसलिए हकीम देवी प्रसाद रामप्यारी न्यास भगवान श्री चित्रगुप्त धाम सर्वदेव मंदिर कायस्थ छात्रावास दौलतगंज द्वारा यह कार्य पिछले कई वर्षों से संपन्न कराया जा रहा है।

श्रीमद् भागवत कथा के लिए किया भूमिपूजन

लक्ष्मीगंज स्थित आराधना बैंक्वेट हॉल में 15 जुलाई से प्रारंभ होने वाली श्रीमद् भागवत कथा के लिए रविवार को संत कृपाल सिंह महाराज के सानिध्य में विधि-विधान एवं वैदिक मंत्रोच्चार के साथ भूमि पूजन संपन्न हुआ। भूमि पूजन के दौरान कथा की सफलता, विश्व कल्याण, सुख-समृद्धि एवं धर्म के प्रचार-प्रसार की मंगलकामना की गई। इस अवसर पर आयोजक परिवार सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन 15 जुलाई से 21 जुलाई तक प्रतिदिन सायं 4 बजे से रात्रि 8 बजे तक आराधना बैंक्वेट हॉल, हरे शिव गार्डन के पास, लक्ष्मीगंज में किया जाएगा। कथा परीक्षित शांति देवी एवं कथा आयोजक राजीव पांडेय, राजेश पांडेय, दिनेश पांडेय, अमिताभ पाण्डेय हैं।

जिले भर में पौधरोपण को जन आंदोलन बनाएं

एयरपोर्ट परिसर में रोपे पौधे

नगर संवाददाता ■ ग्वालियर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर प्रदेश भर में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में रविवार को जनप्रतिनिधियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने मिलकर एयरपोर्ट परिसर में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत पौधरोपण किया।

प्रदेश के जल संसाधन मंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री तुलसीराम सिलावट के साथ ही जनप्रतिनिधि एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने पौधरोपण में भागीदारी की। एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत एयरपोर्ट परिसर में किए गए पौधरोपण कार्यक्रम में प्रदेश भाजपा अध्यक्ष हेमंत खण्डेलवाल, क्षेत्रीय संगठन मंत्री अजय जामवाल, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष रणवीर रावत, सांसद भारत सिंह कुशवाह, विधायक भितरवार मोहन सिंह राठौर, भाजपा जिला अध्यक्ष जयप्रकाश राजौरिया, मेला प्राधिकरण के अध्यक्ष अशोक जादौन, साडा अध्यक्ष अशोक शर्मा, कमल माखीजानी, कौशल शर्मा सहित जिलाधीश रुचिका चौहान, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह, अपर आयुक्त टी प्रतीक राव ने भी भाग लिया। प्रभारी मंत्री सिलावट ने जिला प्रशासन एवं नगर निगम के अधिकारियों से कहा है कि बरसात के मौसम में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत जिले भर में वृहद पौधरोपण का कार्य हाथ में लिया जाए। उन्होंने कहा है कि सभी स्कूलों, कॉलेजों में पौधरोपण कर इसे जन आंदोलन बनाएं।

बसंत विहार में गंदगी, आवारा श्वानों और अंधेरे से रहवासी परेशान

■ शिकायतों के बाद भी नहीं जागा निगम

नगर संवाददाता ■ ग्वालियर

शहर की पॉश कॉलोनियों में शुमार बसंत विहार इन दिनों मूलभूत सुविधाओं की बदहाली का शिकार है। कॉलोनी में जगह-जगह फैली गंदगी, खाली प्लॉटों में जमा कचरा, आवारा श्वानों का बढ़ता आतंक और बंद पड़ी स्ट्रीट लाइटों ने रहवासियों का जीना मुश्किल कर दिया है। हालात यह हैं कि नगर निगम से कई बार शिकायत करने के बावजूद समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं हो सका है।

रहवासियों का कहना है कि कॉलोनी की नियमित सफाई नहीं होने से सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर कचरे के ढेर लगे रहते हैं। बरसात के मौसम में यह समस्या और विकराल हो जाती है। जलभराव और सड़ते कचरे से दुर्गंध फैल रही है, वहीं मच्छरों की संख्या बढ़ने से डेंगू, मलेरिया और अन्य संक्रामक बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है।

कॉलोनी में आवारा श्वानों की बढ़ती संख्या लोगों के लिए नई मुसीबत बन गई है। सुबह और शाम सड़कों पर श्वानों के झुंड घूमते नजर आते हैं। मॉर्निंग वॉक पर निकलने वाले लोग, स्कूली बच्चे और बुजुर्ग खुद को असुरक्षित महसूस करते हैं। कई लोगों ने श्वानों के पीछा करने और आक्रामक व्यवहार की शिकायत भी की है।

27 वर्षीय स्थानीय निवासी स्नेहा बताती हैं सबसे ज्यादा परेशानी रात में होती है। पुराने

रहवासियों की मांग

- कॉलोनी में विशेष स्वच्छता अभियान चलाया जाए।
- कचरे का नियमित उठाव सुनिश्चित किया जाए।
- आवारा श्वानों को पकड़ने के लिए विशेष अभियान चलाया जाए।
- पुराने सहारा अस्पताल के पास बंद स्ट्रीट लाइटों को तत्काल चालू कर नई लाइटें लगाई जाएं।

अब पूरी होगी पदोन्नति की आस

सरकारी विभागों में लंबे समय से अटकी पदोन्नति प्रक्रिया अब रफ्तार पकड़ने लगी है। विभिन्न विभागों में कर्मचारियों की गोपनीय चरित्रावली (सीआर) और अन्य आवश्यक दस्तावेजों का सत्यापन कर अंतिम सूची तैयार की जा रही है। कई कार्यालयों में अधिकारी-कर्मचारी देर रात तक इस कार्य में जुटे हैं, ताकि जल्द पदोन्नति आदेश जारी किए जा सकें। वर्षों से प्रमोशन का इंतजार कर रहे कर्मचारियों को अब राहत मिलने की उम्मीद है।

एलिवेटेड रोड के साथ बनेगा नया फ्लाईओवर, जाम से मिलेगी राहत

शिंदे की छावनी से मानसिक आरोग्यशाला तक 1.3 किमी लंबे पुल से सुधरेगा यातायात, अतिक्रमण हटेंगे

नगर संवाददाता ■ ग्वालियर

शहर की यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने के लिए अब एलिवेटेड रोड परियोजना के साथ एक और बड़े फ्लाईओवर का निर्माण किया जाएगा। शिंदे की छावनी से मानसिक आरोग्यशाला तिराहे तक प्रस्तावित करीब 1.3 किलोमीटर लंबे फ्लाईओवर के लिए रूट सर्वे का काम पूरा हो चुका है। अब इसकी डिजाइन और ड्राइंग तैयार की जा रही है। परियोजना को लेकर प्रशासन ने जमीन पर तैयारी भी शुरू कर दी है। फ्लाईओवर की जद में आने वाले मकानों और दुकानों पर लाल निशान लगाए जा चुके हैं, ताकि अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई जल्द शुरू की जा सके।

पहले इस फ्लाईओवर को सेतु बंधन परियोजना के तहत विकसित करने की योजना थी, लेकिन अब इसे शहर की महत्वाकांक्षी एलिवेटेड रोड परियोजना से जोड़ दिया गया है। अधिकारियों का मानना है कि दोनों परियोजनाओं के एक साथ क्रियान्वयन से निर्माण कार्य में तेजी आएगी और शहर के सबसे व्यस्त मार्गों में शामिल इस हिस्से पर जाम की समस्या से काफी हद तक राहत मिलेगी।

फ्लाईओवर बनने के बाद शिंदे की छावनी, मानसिक आरोग्यशाला, बहोड़ापुर, आनंद नगर, विनय नगर, शब्द प्रताप आश्रम और आसपास के क्षेत्रों से लश्कर की ओर आने-जाने वाले हजारों वाहन चालकों को सीधा और तेज मार्ग मिलेगा। वर्तमान में इस मार्ग पर हर दिन लंबे जाम की स्थिति बनती है, जिससे लोगों का समय और ईंधन दोनों बर्बाद होते हैं।

फाइल फोटो

रोड पर अवैध रूप से खड़े होते ठेले

इस रोड पर डिवाइडर है, लेकिन अवैध रूप से खड़े होने वाले ठेले और ऑटो के कारण ट्रैफिक के लिए पूरी सड़क उपयोग नहीं हो पाती। जिस वजह से यहां सुबह से रात तक ट्रैफिक जाम की समस्या बनी रहती है। फ्लाई ओवर के बाद मौजूदा सड़क पर ट्रैफिक आधे से भी कम रह जाएगा। इससे लोगों को ट्रैफिक जाम से राहत मिलेगी। जाम लगने का मुख्य कारण रोड सकरी होने के साथ ही आसपास काफी घनी बस्ती होना व मकान भी बने हुए है। ऐसे में इस मार्ग पर घनी बस्ती होने से सड़क का चौड़ीकरण कर पाना काफी मुश्किल है।

हर घंटे गुजरते हैं 3 हजार से ज्यादा वाहन

शिंदे की छावनी से मानसिक आरोग्यशाला तिराहे तक का मार्ग शहर के सबसे व्यस्त यातायात कॉरिडोर में शामिल है। मुरैना-आगरा रोड के साथ-साथ बहोड़ापुर, आनंद नगर, विनय नगर, शब्द प्रताप आश्रम और उपनगर ग्वालियर के कई इलाकों को लश्कर से जोड़ने वाले इस मार्ग पर हर घंटे तीन हजार से अधिक छोटे और बड़े वाहनों का दबाव रहता है। ट्रैफिक के इसी बढ़ते दबाव को देखते हुए यहां फ्लाईओवर निर्माण का निर्णय लिया गया है। अधिकारियों का दावा है कि परियोजना पूरी होने के बाद इस कॉरिडोर पर जाम की समस्या में उल्लेखनीय कमी आएगी और शहर की यातायात व्यवस्था को नई गति मिलेगी।

इनका कहना है

शिंदे की छावनी से मानसिक आरोग्यशाला तिराहे तक फ्लाई ओवर बनाया जाना है। इसकी डिजाइन और ड्राइंग लगभग तैयार है। इसके बनने से यातायात समस्या में काफी राहत मिलेगी।

जोगिंदर यादव
कार्यपालन यंत्री/ सेतु संभाग लोक निर्माण विभाग

पिलर से पानी का रिसाव, रेडियोलॉजी विभाग में जलभराव करोड़ों की इमारत की गुणवत्ता पर फिर उठे सवाल

नगर संवाददाता ■ ग्वालियर

अंचल के सबसे बड़े जयारोग्य अस्पताल समूह की करोड़ों रुपए की लागत से बनी न्यू जयारोग्य बिल्डिंग की निर्माण गुणवत्ता एक बार फिर सवालों के घेरे में आ गई है। रविवार को भवन के ए ब्लॉक स्थित रेडियोलॉजी विभाग में एक पिलर से अचानक भारी मात्रा में पानी रिसने लगा। देखते ही देखते कॉरिडोर में पानी भर गया और एक्सरे, सीटी स्कैन व अल्ट्रासाउंड कराने आए मरीजों तथा उनके परिजनों को पानी के बीच होकर गुजरना पड़ा। घटना ने निर्माण कार्य की गुणवत्ता और भवन के मेंटेनेंस की पोल खोलकर रख दी।

जानकारी के अनुसार न्यू जयारोग्य के रेडियोलॉजी विभाग में ग्वालियर ही नहीं, बल्कि आसपास के कई जिलों से भी मरीज जांच कराने पहुंचते हैं। रविवार को दो घंटे की ओपीडी के दौरान बड़ी संख्या में मरीज एक्सरे और अल्ट्रासाउंड के लिए पहुंचे थे। इसी दौरान सुबह अल्ट्रासाउंड ब्लॉक के प्रवेश द्वार के पास बने एक पिलर से अचानक पानी रिसना शुरू हो गया। कुछ ही देर में पानी कॉरिडोर में फैल गया और अल्ट्रासाउंड कक्ष से लेकर एक्सरे ब्लॉक तक पहुंचने लगा। स्थिति बिगड़ती देख अस्पताल प्रबंधन ने सफाई कर्मचारियों को बुलाकर पानी निकलवाया, लेकिन कुछ देर बाद फिर उसी पिलर से पानी बहने लगा। काफी प्रयासों के बावजूद यह पता नहीं चल सका कि पानी आखिर किस पाइपलाइन या स्रोत से रिस रहा है। इससे मरीजों और उनके परिजनों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। दरअसल, न्यू जयारोग्य बिल्डिंग के निर्माण कार्य और रखरखाव को लेकर पहले भी कई बार सवाल उठ चुके हैं। भवन में लगातार सामने आ रही तकनीकी खामियों को लेकर डीन से लेकर अधीक्षक तक निर्माण कंपनी को कई बार पत्र लिख चुके हैं, लेकिन इसके बावजूद स्थायी समाधान नहीं हो सका। अब पिलर से पानी निकलने की घटना ने एक बार फिर निर्माण एजेंसी की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

बंद कमरे में धूल खाती रही ऑडियोमेट्री मशीन, बिना उपयोग के ही हो गई कंडम

नगर संवाददाता ■ ग्वालियर

मुरार जिला अस्पताल परिसर में संचालित जिला हस्तक्षेप केन्द्र (डीआईसी) में लाखों रुपए की लागत से उपलब्ध कराई गई ऑडियोमेट्री मशीन बिना उपयोग के ही कंडम हो गई। वर्ष 2015 में शासन द्वारा उपलब्ध कराई गई यह मशीन कर्मचारियों की कमी और आवश्यक संसाधनों के अभाव में वर्षों तक बंद कमरे में पड़ी रही। बाद में जब इसे शुरू करने की कोशिश की गई तो पता चला कि मशीन संचालन के लिए आवश्यक साउंड प्रूफ कक्ष ही अस्पताल में मौजूद नहीं है। इससे मशीन लंबे समय तक अनुपयोगी रही और अंततः तकनीकी रूप से खराब होकर पूरी तरह बेकार हो गई। अब जिला हस्तक्षेप केन्द्र द्वारा नई ऑडियोमेट्री मशीन उपलब्ध कराने के लिए शासन को प्रस्ताव भेजा गया है।

जानकारी के अनुसार जिला हस्तक्षेप केन्द्र में सुनने संबंधी समस्याओं की जांच के लिए आधुनिक ऑडियोमेट्री मशीन उपलब्ध कराई गई थी, जिससे बच्चों और वयस्क मरीजों की श्रवण क्षमता की सटीक जांच की जा सके। लेकिन मशीन मिलने के बाद लंबे समय तक उसे संचालित करने के लिए प्रशिक्षित कर्मचारी ही उपलब्ध नहीं थे। जिस कारण मशीन कई वर्षों तक पैक बंद कमरे में रखी रही। बाद में जब शासन द्वारा संबंधित कर्मचारी की नियुक्ति की गई और मशीन शुरू करने की तैयारी की गई तो एक और बड़ी कमी सामने आई।

क्या है ऑडियोमेट्री मशीन

ऑडियोमेट्री मशीन एक विशेष जांच उपकरण है, जिसके माध्यम से व्यक्ति की सुनने की क्षमता का परीक्षण किया जाता है। इस जांच में अलग-अलग आवृत्ति और तीव्रता की ध्वनियां सुनाकर यह पता लगाया जाता है कि मरीज को किस स्तर तक आवाज सुनाई देती है। यह जांच कान संबंधी रोगों के निदान और उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

छायावादः भाव, सौंदर्य और सांस्कृतिक चेतना का स्वर्णिम अध्याय

हिन्दी साहित्य के इतिहास में छायावाद युग (1918 से 1936) को आधुनिक हिन्दी कविता का स्वर्णिम काल माना जाता है। इस युग ने कविता को केवल उपदेश, नीति और वर्णन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे मानवीय भावनाओं, आत्मानुभूति, कल्पना, प्रकृति-प्रेम और सौंदर्य-बोध से समृद्ध किया। छायावाद ने हिन्दी कविता को नई संवेदना, नई भाषा और नई कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की। इस युग के चार प्रमुख स्तंभ जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी शिनरालाश, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्माकृने अपनी कालजयी रचनाओं से हिन्दी साहित्य को अमूल्य धरोहर दी।

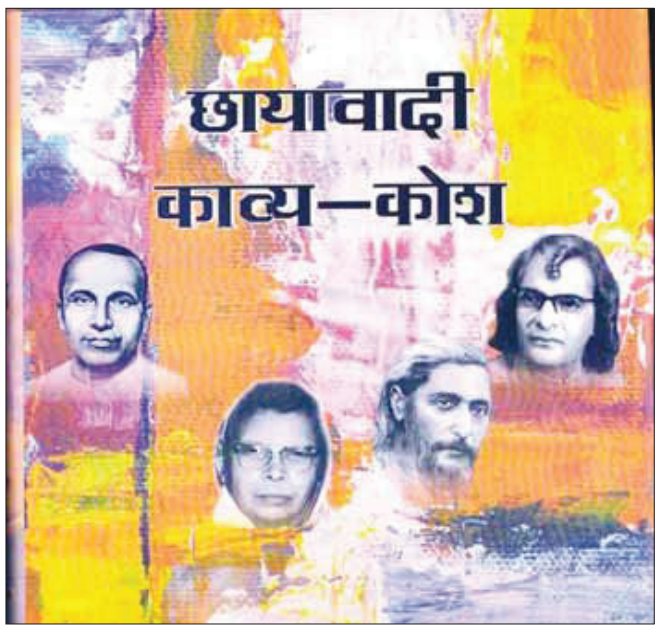

छायावाद का उद्भव और स्वरूप

द्विवेदी युग की उपदेशात्मक और तथ्यप्रधान काव्यधारा के बाद छायावाद का उदय हुआ। इसने कविता में व्यक्ति के अंतर्मन, संवेदनाओं और कल्पना को प्रमुख स्थान दिया। छायावादी कवियों ने जीवन के सूक्ष्म भावों, प्रेम, विरह, करुणा, आशा, निराशा और आध्यात्मिक अनुभवों को अत्यंत कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया। इस कारण छायावाद को हिन्दी का रोमांटिक युग भी कहा जाता है।

छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ

छायावाद की सबसे बड़ी विशेषता प्रकृति का मानवीकरण है। पर्वत, नदी, फू ल, चाँद, बादल और पवन जैसे प्राकृतिक तत्व कवियों की रचनाओं में जीवंत पात्र बनकर उभरते हैं। नारी को केवल सौंदर्य की वस्तु नहीं, बल्कि संवेदना, शक्ति, त्याग और गरिमा के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया। रहस्यवाद, सौंदर्य-चेतना, प्रतीकात्मकता, संगीतात्मक भाषा, लाक्षणिक शैली तथा कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति ने इस युग को विशिष्ट पहचान दी।

भारतीय संस्कृति और दर्शन का प्रभाव

छायावादी साहित्य पर भारतीय संस्कृति, वेद-उपनिषद, भक्ति साहित्य, बौद्ध एवं सूफी दर्शन का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। साथ ही, पाश्चात्य रोमांटिक साहित्य से भी प्रेरणा मिली। परिणामस्वरूप इस युग की रचनाओं में आध्यात्मिकता, मानवीय संवेदना, प्रकृति के प्रति अनुराग और आत्मचिंतन का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

हिन्दी साहित्य को मिला अमूल्य योगदान

छायावाद का सबसे महत्वपूर्ण योगदान खड़ी बोली हिन्दी को एक सशक्त, परिष्कृत और मधुर काव्य-भाषा के रूप में स्थापित करना था। इस युग ने हिन्दी कविता को कलात्मक ऊँचाइयाँ प्रदान कीं और साहित्य में मौलिक चिंतन तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्रतिष्ठित किया। राष्ट्रीय चेतना, सांस्कृतिक गौरव और स्वतंत्रता आंदोलन के सांस्कृतिक पक्ष को भी छायावादी साहित्य ने नई ऊर्जा दी। इस काल की रचनाओं ने पाठकों में आत्मविश्वास, देशप्रेम और सांस्कृतिक स्वाभिमान की भावना को सुदृढ़ किया।

आज के संदर्भ में छायावाद का महत्व

आज भी छायावादी साहित्य अपनी संवेदनशीलता, मानवीय मूल्यों और सौंदर्य-दृष्टि के कारण प्रासंगिक है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ के बीच यह साहित्य मनुष्य को प्रकृति, संस्कृति और अपने अंतर्मन से जोड़ने का संदेश देता है। इसकी भाषा, शैली और भाव-संपदा आज के रचनाकारों के लिए भी प्रेरणास्रोत बनी हुई है।

श्रद्धा पटेरिया
शिक्षक
हितकारिणी
चिल्ड्रन्स एकेडमी
गोरखपुर,
जबलपुर

भाषा के माध्यम से बाल-केंद्रित शिक्षा

आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखने का अवसर देती है भाषा

बदलते समय के साथ शिक्षा के स्वरूप में भी परिवर्तन आया है। आज बाल-केंद्रित शिक्षा को आधुनिक शिक्षा की सबसे प्रभावी पद्धति माना जाता है। इस पद्धति में शिक्षण का केंद्र शिक्षक नहीं, बल्कि बच्चा होता है। बच्चों की रुचि, आवश्यकता, क्षमता और सीखने की गति को ध्यान में रखते हुए उन्हें सीखने के अवसर दिए जाते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में भाषा सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है, क्योंकि भाषा ही बच्चों को अपने विचार व्यक्त करने, प्रश्न पूछने, संवाद स्थापित करने और ज्ञान अर्जित करने में सक्षम बनाती है।

बाल-केंद्रित शिक्षा में भाषा की भूमिका

बाल-केंद्रित शिक्षा में भाषा केवल संप्रेषण का साधन नहीं, बल्कि सीखने और सोचने का आधार है। जब बच्चे अपनी मातृभाषा या सहज भाषा में प्रश्न पूछते हैं, चर्चा करते हैं और अपने अनुभव साझा करते हैं, तब उनका सीखना अधिक प्रभावी और स्थायी बनता है। भाषा बच्चों को आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखने का अवसर देती है।

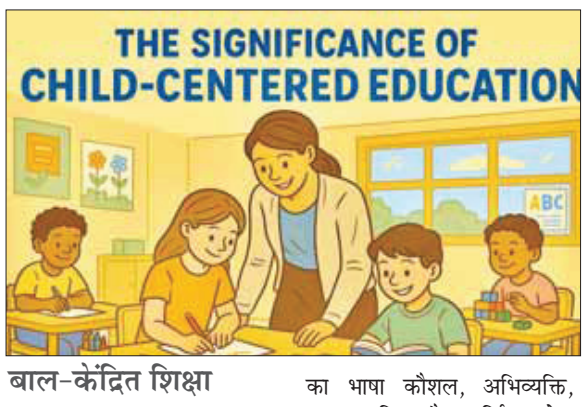

बाल-केंद्रित शिक्षा की अवधारणा

बाल-केंद्रित शिक्षा इस सिद्धांत पर आधारित है कि प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है और उसकी सीखने की शैली भी अलग होती है। इसलिए सभी बच्चों को एक जैसी पद्धति से पढ़ाने के बजाय उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। शिक्षक यहाँ ज्ञान देने वाला नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया का मार्गदर्शक और सहयोगी होता है।

भाषा आधारित शिक्षण गतिविधियाँ

बाल-केंद्रित शिक्षा में कहानी-कथन, कविता, संवाद, भूमिका-अभिनय, समूह चर्चा, परियोजना कार्य, खेल, प्रयोग, चित्र-वर्णन और रचनात्मक लेखन जैसी गतिविधियों का उपयोग किया जाता है। इन गतिविधियों से बच्चों का भाषा कौशल, अभिव्यक्ति, कल्पनाशक्ति और तार्किक सोच विकसित होती है।

शिक्षक की भूमिका

बाल-केंद्रित शिक्षा में शिक्षक बच्चों को स्वतंत्र रूप से सोचने, प्रश्न पूछने और अपने अनुभव साझा करने के लिए प्रेरित करता है। वह ऐसा भाषाई वातावरण तैयार करता है जहाँ प्रत्येक बच्चा बिना संकोच अपनी बात कह सके और सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में भाग ले सके।

वैष्णवी राय
शिक्षक
आदर्श
हितकारिणी
चिल्ड्रन
एकेडमी
गोविंदगंज,
जबलपुर

प्रभावी क्रियान्वयन के लिए पहल

शिक्षकों को बाल-केंद्रित एवं भाषा-आधारित शिक्षण का नियमित प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए। कक्षा में समृद्ध भाषाई वातावरण का निर्माण करना बेहद जरूरी है इसके साथ ही मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा को सम्मान देना होगा। गतिविधि आधारित एवं संवादात्मक शिक्षण को बढ़ावा देते हए बच्चों को पढ़ने, लिखने, बोलने और सुनने के पर्याप्त अवसर देना बेहद जरूरी है।

विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव

जब बच्चों को अपनी भाषा में विचार व्यक्त करने और प्रश्न पूछने का अवसर मिलता है, तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। भाषा के माध्यम से बच्चों में रचनात्मकता और कल्पनाशक्ति के भाव विकसित होते हैं, जो उनमें समस्याओं के समाधान खोजने की क्षमता विकसित करते हैं। समूह चर्चा, सहयोगात्मक कार्य और संवाद के माध्यम से बच्चे एक-दूसरे का सम्मान करना, टीम भावना और नेतृत्व कौशल सीखते हैं।

भाषा और बच्चों की जिज्ञासा, सीखने की पहली सीढ़ी

बच्चों की जिज्ञासा उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता होती है। जिज्ञासा का अर्थ है किसी नई बात को जानने, समझने और सीखने की इच्छा। इस जिज्ञासा को व्यक्त करने का सबसे प्रभावी माध्यम भाषा है। भाषा के द्वारा ही बच्चे अपने मन में उठने वाले प्रश्न पूछते हैं, अपने विचार व्यक्त करते हैं और नए ज्ञान की ओर बढ़ते हैं। इसलिए भाषा और जिज्ञासा का गहरा संबंध है।

भाषा से अभिव्यक्त होती है जिज्ञासा

बच्चे स्वभाव से अत्यंत जिज्ञासु होते हैं। वे अपने आसपास की हर वस्तु, घटना और व्यक्ति के बारे में प्रश्न पूछते हैं। जैसे आसमान नीला क्यों है? सूरज कहाँ से निकलता है? पक्षी कैसे उड़ते हैं? इन प्रश्नों के माध्यम से उनकी भाषा का विकास होता है और वे अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करना सीखते हैं।

भाषा सीखने का सशक्त माध्यम

जब बच्चों को उनके प्रश्नों के सरल और उचित उत्तर मिलते हैं, तो उनका ज्ञान बढ़ता है। कहानी, कविता, संवाद, पुस्तकें और बातचीत जैसी भाषाई गतिविधियाँ उनकी सोचने-समझने की क्षमता का विकास करती हैं। भाषा उन्हें नए शब्द, नए विचार और नए अनुभवों से परिचित कराती है।

जिज्ञासा और मानसिक विकास

जिज्ञासा बच्चों को नई खोज करने, प्रयोग करने और समस्याओं का समाधान ढूँढ़ने के लिए प्रेरित करती है। भाषा इस पूरी प्रक्रिया में मार्गदर्शक का कार्य करती है। वैज्ञानिकों, आविष्कारकों और महान व्यक्तियों की सफ लता के पीछे उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति के साथ-साथ प्रभावी भाषा और ज्ञान अर्जित करने की क्षमता भी महत्वपूर्ण रही है।

जिज्ञासा को सही दिशा देना

बच्चों की जिज्ञासा को सुरक्षित और सकारात्मक दिशा देना भी आवश्यक है। उन्हें सही और गलत का ज्ञान कराते हुए ऐसी गतिविधियों से जोड़ना चाहिए, जिनसे उनकी भाषा समृद्ध हो और वे अपने ज्ञान का उपयोग समाजहित में कर सकें।

सरिता नामदेव
शिक्षक
हितकारिणी चिल्ड्रन्स एकेडमी
डुमना, जबलपुर

माता-पिता और शिक्षकों की भूमिका

माता-पिता और शिक्षकों का कर्तव्य है कि वे बच्चों के प्रश्नों को ध्यानपूर्वक सुनें, धैर्यपूर्वक उत्तर दें तथा उन्हें प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों को पुस्तकें पढ़ने, चर्चा करने, कहानी सुनने, प्रयोग करने और नई बातें सीखने के अवसर देने चाहिए। इससे उनकी भाषा, रचनात्मकता और आत्मविश्वास तीनों का विकास होता है।

हिंदी पहेलियां

1. मैं स्वर भी हूँ और व्यंजन भी नहीं, फि र भी हिंदी में मेरा बहुत महत्व है। बताओ मैं कौन हूँ?
उत्तर - अनुस्वार

2. मैं बिना मुँह के बोलती हूँ, बिना कान के सुनाती हूँ। किताबों में रहती हूँ। बताओ मैं कौन हूँ?
उत्तर - भाषा

3. ऐसा कौन-सा शब्द है, जिसमें पाँच अक्षर हैं, लेकिन पढ़ने पर केवल दो अक्षरों की ध्वनि सुनाई देती है?
उत्तर - क्षमा
(यह संयुक्ताक्षर की अवधारणा पर आधारित है।)

4. मैं लिखने में छोटी हूँ, लेकिन मेरे बिना कोई वाक्य पूरा नहीं होता। मैं कौन हूँ?
उत्तर - पूर्ण विराम

प्रेम और भक्ति के अमर कवि रसखान

जिन्होंने श्रीकृष्ण को अपना सर्वस्व बना लिया

भारतीय भक्ति साहित्य में अनेक संत और कवियों ने अपनी रचनाओं से अमिट छाप छोड़ी है, लेकिन उनमें रसखान का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। मुस्लिम परिवार में जन्म लेने के बावजूद उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के प्रति ऐसी अनन्य भक्ति दिखाई कि उनका नाम कृष्ण-भक्त कवियों की अग्रिम पंक्ति में लिया जाता है। उनके काव्य में प्रेम, भक्ति, प्रकृति, वात्सल्य और ब्रज संस्कृति का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। रसखान की रचनाएँ आज भी पाठकों के हृदय को भक्ति और प्रेम से सराबोर कर देती हैं।

रसखान का जीवन परिचय

रसखान का वास्तविक नाम सैयद इब्राहीम माना जाता है। उनका जन्म लगभग 16वीं शताब्दी (लगभग 1548 ई.) में माना जाता है। उनके जन्मस्थान को लेकर मतभेद हैं, पर अधिकांश विद्वान उत्तर प्रदेश के पिहानी (जिला हरदोई) को उनका जन्मस्थान मानते हैं।

रसखान एक समृद्ध और शिक्षित परिवार से थे। उन्हें फारसी भाषा और साहित्य का अच्छा ज्ञान था। प्रारंभिक जीवन में वे सांसारिक वैभव और ऐश्वर्य से जुड़े रहे, किंतु बाद में श्रीकृष्ण की भक्ति से प्रभावित होकर उन्होंने अपना जीवन भक्ति और काव्य-साधना को समर्पित कर दिया।

कृष्ण भक्ति की ओर कैसे बढ़े?

लोककथाओं के अनुसार, श्रीकृष्ण की दिव्य लीलाओं और ब्रजभूमि की महिमा ने रसखान के हृदय को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने सांसारिक मोह त्यागकर वृंदावन को अपना निवास बना लिया। वहाँ उन्होंने कृष्ण की बाल-लीलाओं, रास, गोचारण और ब्रज की प्राकृतिक सुंदरता का अत्यंत मनोहारी चित्रण किया।

रसखान की प्रमुख रचनाएँ

- प्रेमवाटिका
- सुजान रसखान
- दान-लीला
- अष्टयाम

हिंदी साहित्य में योगदान

रसखान ने यह सिद्ध किया कि सच्ची भक्ति जाति, धर्म और संप्रदाय की सीमाओं से परे होती है। उन्होंने ब्रजभाषा को अपनी रचनाओं का माध्यम बनाकर हिंदी साहित्य को अमूल्य धरोहर दी। उनके काव्य ने प्रेम, समरसता और सांस्कृतिक एकता का संदेश दिया, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

आज के समय में रसखान की प्रासंगिकता

आज जब समाज में सौहार्द, प्रेम और आपसी सम्मान की आवश्यकता पहले से अधिक महसूस की जा रही है, तब रसखान का जीवन और साहित्य हमें यह सिखाता है कि प्रेम ही सबसे बड़ा धर्म है। उनकी रचनाएँ हमें भक्ति के साथ-साथ मानवता, सहिष्णुता और सांस्कृतिक एकता का भी संदेश देती हैं। रसखान केवल एक महान कवि ही नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक समन्वय के प्रतीक भी थे। उन्होंने अपने काव्य के माध्यम से यह संदेश दिया कि ईश्वर तक पहुँचने का सबसे सरल मार्ग प्रेम और भक्ति है। श्रीकृष्ण के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा और ब्रजभूमि के प्रति उनका अनुराग उन्हें हिंदी साहित्य के अमर कवियों की श्रेणी में स्थापित करता है। आज भी उनकी रचनाएँ प्रेम, भक्ति और मानवीय मूल्यों की प्रेरणादायी धरोहर बनी हुई हैं।

कैसे बदलते गए शब्द, कैसे बदलती गई भाषा

हम रोज सैकड़ों शब्द बोलते और सुनते हैं, लेकिन शायद ही कभी यह सोचते हैं कि इन शब्दों की अपनी भी एक कहानी होती है। कोई शब्द हजारों वर्ष पुराना है, कोई किसी विदेशी भाषा से आया है, तो कोई समय के साथ अपना अर्थ बदल चुका है। यही शब्दों की यात्रा भाषा को जीवंत और समृद्ध बनाती है।

कैसे शुरू होती है शब्दों की यात्रा- हर शब्द का जन्म किसी न किसी आवश्यकता से होता है। जब समाज में कोई नई वस्तु, विचार या परिस्थिति आती है, तो उसके लिए नया शब्द बनता है या किसी पुराने शब्द को नया अर्थ मिल जाता है। यही कारण है कि भाषा समय के साथ निरंतर विकसित होती रहती है।

विदेशी भाषाओं से आए शब्द- हिंदी ने अनेक भाषाओं के शब्दों को अपनाकर स्वयं को समृद्ध बनाया है। जैसे किताब अरबी भाषा से, दरवाजा फ ारसी, कमीज अरबी, साबुन यूरोपीय भाषाओं के माध्यम से प्रचलित हुआ है। इसी तरह अलमारी पुर्तगाली भाषा से, रेल, स्टेशन, टिकट अंग्रेजी से आए और अब हिंदी का हिस्सा बन चुके हैं।

अर्थ बदलने वाले शब्द- कुछ शब्दों का अर्थ समय के साथ बदल गया। जैसे गुरु पहले केवल शिक्षक के लिए प्रयुक्त होता था, आज किसी भी क्षेत्र के विशेषज्ञ के लिए भी बोला जाता है। मोबाइल पहले केवल चलायमान वस्तु का अर्थ देता था, आज यह सीधे मोबाइल फ ोन का पर्याय बन गया है। मित्र अब केवल आमने-सामने के दोस्त तक सीमित नहीं, बल्कि सोशल मीडिया पर जुड़े लोगों के लिए भी प्रयुक्त होता है।

एक ही शब्द, अनेक अर्थ- हिंदी में कई शब्द ऐसे हैं जिनके अलग-अलग संदर्भों में अलग अर्थ होते हैं। जैसे कल, बीता हुआ दिन भी और आने वाला दिन भी। इसी तरह शब्द हार, पराजय भी और गले में पहनने वाला आभूषण भी। पत्र, चिट्ठी भी, पत्ता भी और समाचार-पत्र के लिए भी प्रयुक्त होता है।

डिजिटल युग में नए शब्द - ई-मेल, ब्लॉग, पॉडकास्ट, सेल्फी, हैशटैग, इमोजी जैसे नए शब्द बताते हैं कि भाषा समय के साथ बदलती रहती है और नई आवश्यकताओं के अनुसार नए रूप अपनाती है।

शब्दों का सही अर्थ जानिए

हिंदी के ऐसे शब्द जिन्हें हम अक्सर गलत समझ लेते हैं

हिंदी भाषा शब्दों की समृद्धि और अभिव्यक्ति की गहराई के लिए जानी जाती है। लेकिन कई ऐसे शब्द हैं जिनका हम रोजमर्रा की बातचीत या लेखन में गलत अर्थ लगा देते हैं। कभी-कभी एक छोटी-सी भूल वाक्य का पूरा भाव बदल देती है। इसलिए सही अर्थ और सही प्रयोग जानना न केवल भाषा को शुद्ध बनाता है, बल्कि व्यक्तित्व और अभिव्यक्ति को भी प्रभावशाली बनाता है। आइए, ऐसे ही कुछ शब्दों से परिचित होते हैं जिनका अर्थ अक्सर गलत समझ लिया जाता है।

1. श्रद्धांजलि- सामान्य बोलचाल में, इसका उपयोग किसी व्यक्ति के निधन के बाद उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना करने और उनके महान कार्यों को याद करके सम्मान प्रकट करने के लिए किया जाता है। जबकि सही अर्थ होता है, किसी दिवंगत व्यक्ति के प्रति सम्मान प्रकट करना, जो कभी भी दिया जा सकता है।

2. सहानुभूति- इसका गलत अर्थ समझ लिया जाता है कि केवल दया करना, जबकि सही अर्थ किसी के दुख या पीड़ा को समझना और उसके प्रति संवेदना व्यक्त करना होता है।

3. संवेदना- संवेदना शब्द अक्सर केवल शोक प्रकट करने के लिए प्रयोग किया जाता है, जबकि सही अर्थ होता है किसी भी भावना या अनुभव को महसूस करने की क्षमता।

4. अभिमान- अक्सर इसे गलत समझकर हर स्थिति में नकारात्मक भाव से लिया जाता है, जबकि सही अर्थ गर्व भी हो सकता है, लेकिन अनुचित या अत्यधिक गर्व के अर्थ में यह नकारात्मक हो जाता है।

5. प्रसिद्ध- सामान्य बोलचाल में इसे केवल अच्छी वजह से प्रसिद्ध होने के संदर्भ में बोला जाता है, जबकि प्रसिद्धि अच्छी या बुरी, दोनों कारणों से मिल सकती है।

6. आलोचना- अक्सर आलोचना का अर्थ केवल निंदा करना समझा जाता है, जबकि सही अर्थ होता है किसी विषय का गुण-दोष सहित निष्पक्ष विश्लेषण करना।

फीफा विश्व कप- 2026 : क्वार्टर फाइनल मुकाबला

अर्जेंटीना छठी बार सेमीफाइनल में 100 प्रतिशत रहा है जीत का रिकॉर्ड

कैनसस सिटी

अर्जेंटीना ने अतिरिक्त समय में स्विट्जरलैंड को 3-1 से हराकर फीफा विश्व कप 2026 के सेमीफाइनल में जगह बना ली। अर्जेंटीना के लिए 10वें मिनट में एलेक्सिस मैक एलिस्टर ने लियोनेल मेसी के कॉर्नर पर शानदार हेडर से पहला गोल किया। स्विट्जरलैंड ने 10 खिलाड़ियों के साथ खेलते हुए भी हार नहीं मानी और 72वें मिनट में ब्रील एम्बोलो ने बराबरी का गोल दागकर मुकाबला 1-1 कर दिया। इसके बाद अतिरिक्त समय के 112वें मिनट में जूलियन अल्वारेज ने 18 गज की दूरी से शानदार गोल कर अर्जेंटीना को फिर बढ़त दिलाई। वहीं, मैच के अंतिम क्षणों में लौतारो मार्टिनेज ने तीसरा गोल कर 3-1 की जीत पर मुहर लगा दी। इस जीत के साथ अर्जेंटीना ने लगातार दूसरी बार विश्व कप के सेमीफाइनल में जगह बनाई, जहां उसका सामना इंग्लैंड से होगा।

अर्जेंटीना का दिखा दबदबा

मैच के आंकड़ों में अर्जेंटीना का दबदबा साफ नजर आया। टीम ने 53 प्रतिशत गेंद पर कब्जा रखा, जबकि स्विट्जरलैंड के पास 40 प्रतिशत पजेशन रहा। अर्जेंटीना ने पूरे मैच में 22 शॉट लगाए, जो स्विट्जरलैंड के 11 शॉट से दोगुने थे। निशाने पर भी अर्जेंटीना के 7 शॉट रहे, जबकि स्विट्जरलैंड केवल 5 बार लक्ष्य पर वार कर सका। पासिंग में भी अर्जेंटीना ने बढ़त बनाई। टीम ने 659 पास पूरे किए और 89 प्रतिशत पासिंग सटीकता दर्ज की, जबकि स्विट्जरलैंड ने 461 पास के साथ 84 प्रतिशत पासिंग एक्युरेसी हासिल की। मैच में अल्वारेज को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

स्विट्जरलैंड ने दिखाया जबरदस्त जुझारूपन

स्विट्जरलैंड के लिए यह हार काफी निराशाजनक रही। टीम ने शुरुआती गोल खाने के बाद शानदार वापसी करते हुए डैन डोए के गोल की बदौलत मुकाबला बराबरी पर ला दिया था। हालांकि, 72वें मिनट में ब्रील एम्बोलो को रेड कार्ड मिलने से स्विट्जरलैंड 10 खिलाड़ियों के साथ खेलने को मजबूर हो गया और उसके सामने चुनौती काफी कठिन हो गई। इसके बावजूद स्विस खिलाड़ियों ने अतिरिक्त समय तक अर्जेंटीना को कड़ी टक्कर दी, लेकिन आखिरकार एक खिलाड़ी की कमी भारी पड़ गई। अतिरिक्त समय में अर्जेंटीना ने अपनी संख्यात्मक बढ़त का पूरा फायदा उठाया और दो गोल दागकर 3-1 से जीत दर्ज करते हुए सेमीफाइनल में जगह बना ली।

अर्जेंटीना का छठा सेमीफाइनल

अर्जेंटीना फीफा विश्व कप के इतिहास में कुल छह बार सेमीफाइनल में पहुंची है। खास बात यह है कि अर्जेंटीना की टीम विश्व कप इतिहास में जब भी सेमीफाइनल में पहुंची है, वह कभी नहीं हारी और हर बार फाइनल का टिकट पक्का किया है। बता दें कि 1978 में टूर्नामेंट का प्रारूप अलग था, जहां टीम सीधे दूसरे दौर के ग्रुप स्टेज से शीर्ष पर रहकर फाइनल में पहुंची थी, इसलिए उस वर्ष आधिकारिक सेमीफाइनल मैच नहीं खेला गया था।

अर्जेंटीना जिन वर्षों में आधिकारिक तौर पर सेमीफाइनल में पहुंची है, उनकी सूची इस प्रकार है-

1930: सेमीफाइनल में अर्जेंटीना ने अमेरिका को 6-1 से हराया था।
1986: सेमीफाइनल में बेल्जियम को 2-0 से मात दी थी।
1990: इटली के खिलाफ मैच 1-1 से ड्रा होने के बाद पेनल्टी शूटआउट (4-3) में जीत दर्ज की।
2014: नीदरलैंड्स के खिलाफ मैच 0-0 पर छूटने के बाद पेनल्टी शूटआउट (4-2) में जीत हासिल की।
2022: क्रोएशिया को एकतरफा मुकाबले में 3-0 से करारी शिकस्त दी थी।
2026 (मौजूदा): स्विट्जरलैंड को एक्स्ट्रा टाइम के रोमांचक मैच में 3-1 से हराकर अर्जेंटीना ने छठी बार सेमीफाइनल में प्रवेश किया है, जहां उसका मुकाबला इंग्लैंड से होगा।

वहीं, इंग्लैंड की पुरुष फुटबॉल टीम फीफा विश्व कप के इतिहास में कुल चार बार सेमीफाइनल में पहुंची है।

इंग्लैंड की टीम जिन वर्षों में सेमीफाइनल में पहुंची है, उनका विवरण इस प्रकार है-

1966: पुर्तगाल को 2-1 से हराया था। (इस वर्ष इंग्लैंड अपने घर में फाइनल जीतकर पहली और एकमात्र बार विश्व कप चैंपियन बना था)।

1990: पश्चिम जर्मनी से पेनल्टी शूटआउट में हार का सामना करना पड़ा और टीम चौथे स्थान पर रही।

2018: क्रोएशिया से अतिरिक्त समय में 2-1 से हारकर टीम बाहर हुई और चौथे स्थान पर रही।

2026 (मौजूदा संस्करण): नॉर्वे को हराकर टीम सेमीफाइनल में पहुंची है, जहां अब उसका महामुकाबला अर्जेंटीना से होगा।

अगले विश्वकप में 64 टीमें हो सकती हैं शामिल: इन्फेंटिनो

नई दिल्ली

फीफा अध्यक्ष जियानी इन्फेंटिनो ने संकेत दिए हैं कि 2030 फीफा पुरुष विश्व कप में टीमों की संख्या बढ़ाकर 64 किए जाने के प्रस्ताव पर गंभीरता से विचार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि मौजूदा 2026 विश्व कप के समाप्त होने के बाद फीफा की संबंधित समितियां इस मुद्दे पर चर्चा करेंगी। इन्फेंटिनो का मानना है कि दुनिया के हर देश को विश्व कप खेलने का सपना देखने का अवसर मिलना चाहिए, क्योंकि इससे छोटे देशों को भी बेहतर प्रदर्शन करने और फुटबॉल के स्तर को ऊंचा उठाने की प्रेरणा मिलेगी।

2026 में पहली बार 48 टीमों का विश्व कप

साल 2026 फीफा विश्व कप, जिसकी मेजबानी अमेरिका, कनाडा और मेक्सिको संयुक्त रूप से कर रहे हैं, इतिहास का पहला विश्व कप है जिसमें 48 टीमें हिस्सा ले रही हैं। इससे पहले 1998 से 2022 तक विश्व कप में 32 टीमें खेलती थीं।

दक्षिण अफ्रीका के मिडफील्डर जेडन एडम्स का 25 वर्ष की आयु में निधन

केप टाउन

दक्षिण अफ्रीका की फुटबॉल टीम को विश्व कप के राउंड ऑफ 32 तक पहुंचाने वाले मिडफील्डर जेडन एडम्स का 25 वर्ष की आयु में निधन हो गया है। एडम्स ने दक्षिण अफ्रीका के तीन ग्रुप मैचों में से दो में शुरुआती लाइनअप में जगह बनाई और 24 जून को दक्षिण कोरिया के खिलाफ 1-0 की जीत में बेंच से मैदान पर उतरे, जिसने इतिहास में पहली बार नॉकआउट राउंड में उनकी जगह पक्की कर दी। दक्षिण अफ्रीकी फुटबॉल प्लेयर्स यूनियन ने कहा, जेडेन ने हाल ही में फीफा विश्व कप में दक्षिण अफ्रीका का प्रतिनिधित्व किया था, जहां उन्होंने गर्व, साहस और विशिष्टता के साथ राष्ट्र की उम्मीदों का भार उठाया था। उनका निधन उनके परिवार और पूरे देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

इंग्लैंड ने अतिरिक्त समय में नॉर्वे को हराकर सेमीफाइनल में किया प्रवेश

मियामी गार्डन्स (अमेरिका)

अतिरिक्त समय में जूड बेलिंगहम के किये दूसरे गोल की बदौलत इंग्लैंड ने फीफा विश्वकप के क्वार्टरफाइनल में नॉर्वे को 2-1 से हराकर अंतिम चार में अपनी जगह पक्की की। विश्वकप के इतिहास में यह चौथी बार है जब इंग्लैंड इस टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह बनाई है। हार्ड रॉक स्टेडियम में शनिवार रात इस सदी में अपना पहला विश्वकप खेल रही नॉर्वे की टीम ने 36वें मिनट में बढ़त बनाकर इंग्लैंड को चौंका दिया। एंड्रियास श्जेल्डरुप ने रक्षापंक्ति की गलती का फायदा उठाते हुए स्कैंडिनेवियाई टीम को शानदार शुरुआत के बाद उन्हें सही बढ़त दिलाई। इंग्लैंड ने हाफ-टाइम से ठीक पहले बेलिंगहम के जरिए जवाब दिया। उन्होंने दूसरे हाफ के स्टॉपेज टाइम में शांतचित्त होकर गोल किया और स्कोर बराबर कर दिया, जिससे टीमें 1-1 की बराबरी के साथ ब्रेक पर गईं। दूसरे हाफ में दोनों टीमों ने कई मौके बनाए और मुकाबला दोनों तरफ से चलता रहा। नॉर्वे को लगा कि खेल दोबारा शुरू होने के तुरंत बाद उन्होंने फिर से बढ़त बना ली है, जब लियो ओस्टिगार्ड के क्रॉस से गोल हुआ, लेकिन वीएआर ने इसे खारिज कर दिया क्योंकि एर्लिंग हालैंड ने गोल से पहले फाउल किया था।इंग्लैंड को भी लगा कि उन्हें आगे बढ़ने का सुनहरा मौका मिल गया है, जब अतिरिक्त समय के बीच में जेड स्पेंस को पेनल्टी मिली। हालांकि, वीएआर रिव्यू के बाद रेफरी ने फैसला बदल दिया और कहा कि स्पेंस ने ऑस्कर बॉब के साथ संपर्क की शुरुआत की थी।

मैच अतिरिक्त समय में गया और इंग्लैंड को 93वें मिनट में निर्णायक सफलता मिली। मॉर्गन रोजर्स ने दूर से एक ज़बरदस्त शॉट मारा जिसे नॉर्वे के गोलकीपर ओरजान नाइलैंड ठीक तरह से रोक नहीं पाए, जिससे बेलिंगहम को रिबाउंड पर गोल करने का मौका मिला और उन्होंने रात का अपना दूसरा गोल किया। नॉर्वे ने हार नहीं मानी और बराबरी का गोल करने के लिए अपने खिलाड़ियों को आगे बढ़ाया। एंटोनियो नुसा, पैट्रिक बर्ग और ऑस्कर बॉब सभी गोल के करीब पहुंचे, लेकिन इंग्लैंड के गोलकीपर जॉर्डन पिकफोर्ड ने कई अहम बचाव किए, जबकि जॉन स्टोन्स और मार्क गुएही ने बढ़त बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण डिफेंसिव ब्लॉक किए।

ब्रेंडन मैक्कुलम को इंग्लैंड पुरुष टेस्ट टीम के मुख्य कोच पद से हटाया गया

लंदन

इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड यानी ECB ने टेस्ट टीम को लेकर बड़ा फैसला लिया है। पिछले चार सालों से इंग्लैंड की टेस्ट टीम को नई पहचान देने वाले ब्रेंडन मैक्कुलम अब टेस्ट टीम के हेड कोच नहीं रहेंगे। हालांकि, वह लिमिटेड ओवर्स की टीमों के हेड कोच बने रहेंगे। मैक्कुलम का टेस्ट कोच के तौर पर कार्यकाल ऐसे दौर में खत्म हो रहा है, जब इंग्लैंड की टीम हाल के महीनों में लगातार खराब नतीजों से जूझ रही थी।मैक्कुलम ने 2022 में इंग्लैंड की टेस्ट टीम की कमान संभाली थी। उनकी अगुआई में इंग्लैंड ने शुरुआती 11 टेस्ट में से 10 मुकाबले जीतकर क्रिकेट जगत को चौंका दिया था। लेकिन इसके बाद टीम का प्रदर्शन लगातार गिरता गया। पिछले 9 टेस्ट में से 7 हार में हार मिली।

चार साल के कार्यकाल में मैक्कुलम की कोचिंग में इंग्लैंड ने 49 टेस्ट खेले, जिनमें 27 जीत, 2 ड्रॉ और 20 हार मिली।

यास्तिका भाटिया लॉर्ड्स में टेस्ट सेंचुरी जड़ने वाली पहली महिला बल्लेबाज बनीं

भारतीय महिला टीम ने 341/7 पर की पारी घोषित, इंग्लैंड को जीत के लिए 457 रनों का लक्ष्य मिला,तीसरे दिन बनाए इंग्लैंड ने 6 विकेट पर 130 रन, ऐमी जोंस ने नाबाद अर्धशतकीय पारी खेलकर हार को अंतिम दिन के लिए टाला

लंदन

भारत ने लॉर्ड्स में खेले जा रहे इतिहास के पहले महिला टेस्ट मैच में जीत की ओर मजबूत कदम बढ़ा दिए हैं। यास्तिका भाटिया के शानदार शतक और गेंदबाजों के दमदार प्रदर्शन की बदौलत भारतीय टीम ने इंग्लैंड को 457 रन का विशाल लक्ष्य दिया। जवाब में तीसरे दिन का खेल खत्म होने तक इंग्लैंड ने छह विकेट के नुकसान पर 130 रन बनाए हैं और उसे जीत के लिए अभी 327 रन की जरूरत है, जबकि उसके सिर्फ चार विकेट शेष हैं। भारत ने कल एक विकेट पर 154 रन से आगे खेलना शुरु किया। सुबह के सत्र में दूसरा विकेट स्मृति मंधाना (70) के रूप में गिरा। वह अपने कल के स्कोर में मात्र एक रन जोड़ पाई। जेमिमाह रॉड्रिग्स (तीन), कप्तान हरमनप्रीत कौर (16), दीप्ति शर्मा (10) रन और स्नेह राणा (एक) जल्दी ही आउट हो गई। इस दौरान यास्तिका भाटिया एक छोर थामे रन बनाती रही और उन्होंने अपना शतक पूरा किया। उन्होंने 158 गेंदों में 14 चौके लगाते हुए 113 रनों की पारी खेली। 88वें ओवर की तीसरी गेंद पर ऋचा घोष का अर्धशतक बनने के बाद भारत ने सात विकेट पर 341 रन के स्कोर पर अपनी पारी घोषित कर दी। ऋचा घोष ने तेजी के साथ रन बटोरते हुए नाबाद 50 रनों की पारी खेली और सायली सातघरे (18) रन बनाकर नाबाद रही। इंग्लैंड की महिला टीम के लिए सोफ़ी एकल्सटन ने पांच और लॉरेन बेल ने दो विकेट लिये। इंग्लैंड की देसरी पारी में तेज गेंदबाज क्रांति गौड़ ने पहली ही गेंद पर टैमी ब्यूमोंट को आउट कर भारत को बड़ी सफलता दिलाई। यह ब्यूमोंट के अंतरराष्ट्रीय करियर का आखिरी मैच भी है, इसके बाद सायली सतघरे ने माया बाउचियर को एलबीडब्ल्यू कर इंग्लैंड की मुश्किलें बढ़ा दीं। कप्तान हीदर नाइट भी केवल 13 रन बनाकर क्रांति गौड़ की गेंद पर शॉर्ट लेग पर ऋचा घोष को कैच थमा बैठीं। ऐसे मे एमी जोन्स ने 72 गेंदों में नाबाद 52 रन बनाए। उन्होंने मैडी विलियर्स (26) के साथ 67 रन की साझेदारी कर मैच को चौथे दिन तक पहुंचाया।

आईसीसी ने सौरव,अंजुम और केविन पीटरसन को हॉल ऑफ फेम में शामिल करके सम्मानित किया

दुबई

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) ने क्रिकेट जगत की तीन सबसे मशहूर हस्तियों - सौरव गांगुली, अंजुम चोपड़ा और केविन पीटरसन - को प्रतिष्ठित आईसीसी हॉल ऑफ फेम में शामिल करके सम्मानित किया है। एडिनबर्ग में आयोजित एक शानदार समारोह में ये खिलाड़ी क्रिकेट के दिग्गजों के उस शानदार समूह में शामिल हो गए हैं, जिनकी बेहतरीन उपलब्धियों, लगातार शानदार प्रदर्शन और लंबे समय तक बने रहने वाले प्रभाव ने इस खेल के इतिहास को आकार दिया है। इनके शामिल होने से आईसीसी हॉल ऑफ़ फ़ेम के सदस्यों की कुल संख्या 125 हो गई है। इससे उन पूर्व खिलाड़ियों के सम्मान की सूची और मजबूत हुई है, जिनकी विरासत दुनिया भर के लाखों खिलाड़ियों और प्रशंसकों को प्रेरित करती रहती है।इस अवसर पर आईसीसी के अध्यक्ष जय शाह ने कहा, मुझे आईसीसी हॉल ऑफ फेम में नए सदस्यों का स्वागत करते हुए खुशी हो रही है।

फीफा विश्वकप के इतिहास में पहली बार!

शीर्ष-4 रैंकिंग वाली टीमें सेमीफाइनल में

नई दिल्ली

फीफा विश्व कप 2026 अब अपने सबसे रोमांचक दौर में पहुंच चुका है। टूर्नामेंट के सेमीफाइनल की चारों टीमें तय हो गई हैं और इस बार एक ऐसा रिकॉर्ड बना है, जो पिछले 96 वर्षों के विश्व कप इतिहास में कभी नहीं बना था। पहली बार फीफा रैंकिंग की शीर्ष चार टीमें- फ्रांस (नंबर-1), अर्जेंटीना (नंबर-2), स्पेन (नंबर-3) और इंग्लैंड (नंबर-4) एक साथ अंतिम चार में पहुंची हैं। क्वार्टर फाइनल में फ्रांस ने मोरक्को को 2-0 से, स्पेन ने बेल्जियम को 2-1 से, इंग्लैंड ने अतिरिक्त समय में नॉर्वे को 2-1 से और मौजूदा चैंपियन अर्जेंटीना ने स्विट्जरलैंड को 3-1 से हराकर सेमीफाइनल का टिकट कटाया। अब विश्व फुटबॉल की चार सबसे मजबूत टीमें खिताब के लिए आमने-सामने होंगी। सेमीफाइनल में पहुंची चार टीमों में से तीन टीमें यूरोपीय हैं, जबकि अर्जेंटीना दक्षिण अमेरिकी देश है।

फीफा विश्वकप में पहली बार बना ऐतिहासिक रिकॉर्ड

1930 में विश्व कप की शुरुआत के बाद यह पहली बार है जब फीफा रैंकिंग की शीर्ष चार टीमें एक साथ सेमीफाइनल में पहुंची हैं। आमतौर पर विश्व कप में किसी न किसी दिग्गज टीम को उलटफेर का सामना करना पड़ता है, लेकिन इस बार सभी शीर्ष दावेदारों ने उम्मीदों पर खरा उतरते हुए अंतिम चार में जगह बनाई है।

1992 में रैंकिंग की शुरुआत

फीफा ने आधिकारिक तौर पर मेंस वर्ल्ड रैंकिंग की शुरुआत साल 1992 में की थी। रैंकिंग सिस्टम लागू होने के बाद से पिछले 8 विश्व कप (1994 से 2022) में कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि शीर्ष की चारों टीमें सेमीफाइनल का सफर तय कर सकी हों। हर बार कोई न कोई बड़ी टीम ग्रुप स्टेज या नॉकआउट में उलटफेर का शिकार हो जाती थी (जैसे 2022 में नंबर 2 बेल्जियम ग्रुप स्टेज से बाहर हो गई थी)। उत्तरी अमेरिका में हो रहे इस विश्व कप में फ्रांस (नंबर 1), अर्जेंटीना (नंबर 2), स्पेन (नंबर 3), और इंग्लैंड (नंबर 4) ने अपने-अपने मुकाबले जीतकर यह अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है।

फीफा के नए नियम की वजह से हुआ संभव?

इस बार टॉप-4 टीमों के सेमीफाइनल में पहुंचने के पीछे फीफा द्वारा टूर्नामेंट के ड्रॉ में किया गया एक बड़ा बदलाव भी जिम्मेदार है-

क्वाड्रेंट सेपरेशन: फीफा ने 2026 विश्व कप के लिए नियमों में बदलाव करते हुए शीर्ष 4 सीडेड टीमों को अलग-अलग क्वाड्रेंट (हिस्सों) में रखा था।

शर्त और परिणाम: शर्त यह थी कि इन टीमों को अपने-अपने ग्रुप में टॉप करना होगा। इन चारों दिग्गजों ने अपने ग्रुप जीते, जिसके कारण ये सेमीफाइनल से पहले एक-दूसरे से नहीं टकराईं और सभी ने अंतिम-4 में जगह बना ली।

खेल समीक्षकों का मानना है कि जहां यह विश्व कप शुरुआत में बेहद रोमांचक था, वहीं टॉप-4 टीमों के आ जाने से अब यह टूर्नामेंट अपने इतिहास के सबसे प्रेडिक्टेबल (अनुमानित), लेकिन सबसे हाई-क्वालिटी वाले दौर में पहुंच गया है

सेमीफाइनल का पूरा शेड्यूल (भारतीय समयानुसार)

1- फ्रांस बनाम स्पेन : 15 जुलाई रात 12:30 बजे डलास स्टेडियम, टेक्सास।
2- इंग्लैंड बनाम अर्जेंटीना: 16 जुलाई रात 12:30 बजे अटलांटा स्टेडियम, जॉर्जिया।

स्पोर्ट्स चैनलों पर कवरेज मैच शुरू होने से आधा घंटा पहले उपलब्ध हो जाएगी।

फ्रांस (फीफा रैंकिंग-1): गति और काउंटर-अटैक सबसे बड़ा हथियार

विश्व की नंबर-1 टीम फ्रांस पूरे टूर्नामेंट में बेहद संतुलित नजर आई है। टीम ने अभी तक कोई मुकाबला नहीं गंवाया है और उसकी सबसे बड़ी ताकत तेज काउंटर-अटैक है। किलियन एमबाप्पे इस विश्व कप में आठ गोल कर चुके हैं और गोल्डन बूट की दौड़ में सबसे आगे हैं। उनके साथ ओस्मान डेम्बेले और ओलीसे लगातार विपक्षी डिफेंस पर दबाव बना रहे हैं। मिडफील्ड में ऑरेलियान चुआमेनी और एडुआर्डो कामाविंगा टीम को मजबूती देते हैं, जबकि गोलकीपर माइक मैनन शानदार फॉर्म में हैं।

इन खिलाड़ियों पर रहेंगी नजरें

किलियम एमबाप्पे (कप्तान और मुख्य फॉरवर्ड - इस टूर्नामेंट में अब तक सर्वाधिक आठ गोल दाग चुके हैं)
ओस्मान डेम्बेले (फॉरवर्ड विंगर)
ओलीसे (असिस्ट के मामले में अव्वल, डेम्बेले और एमबाप्पे की पूरी मदद करते हैं)
ऑरेलियान चुआमेनी और एदुआर्डो कामाविंगा (डिफेंसिव मिडफील्ड की रीढ़)
माइक मैनन (गोलकीपर)

अर्जेंटीना (फीफा रैंकिंग-2): बड़े मैचों का अनुभव और मेसी का जादू

मौजूदा विश्व चैंपियन अर्जेंटीना ने एक बार फिर साबित किया है कि दबाव वाले मुकाबलों में उसका अनुभव सबसे बड़ा हथियार है। स्विट्जरलैंड के खिलाफ अतिरिक्त समय तक चले मुकाबले में टीम ने धैर्य नहीं खोया और अंततः जीत हासिल की।कप्तान लियोनल मेसी लगातार टीम की आक्रमण की धुरी बने हुए हैं। जूलियन अल्वारेज और लौटारो मार्टिनेज निर्णायक मौकों पर गोल कर रहे हैं, जबकि एलेक्सिस मैक एलिस्टर मिडफील्ड को संतुलन दे रहे हैं। गोलकीपर एमिलियानो मार्टिनेज का बड़े मैचों में रिकॉर्ड अर्जेंटीना के आत्मविश्वास को और मजबूत बनाता है।

इन खिलाड़ियों पर रहेंगी नजरें

लियोनल मेसी (प्लेमेकर और कप्तान)
जूलियन अल्वारेज और लौटारो मार्टिनेज (क्वार्टर फाइनल के टर्निंग पॉइंट गोल स्कोरर)
एलेक्सिस मैकएलिस्टर (मिडफील्ड के सबसे भरोसेमंद खिलाड़ी)
एमिलियानो मार्टिनेज (गोलकीपर)

स्पेन (फीफा रैंकिंग-3): 36 मैचों से अजेय, पासिंग गेम का उस्ताद

मौजूदा यूरोपीय चैंपियन स्पेन इस समय दुनिया की सबसे आकर्षक फुटबॉल खेलने वाली टीमों में शामिल है। टीम लगातार 36 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों से अजेय है। स्पेन की पहचान उसका टिकी-टाका फुटबॉल है। तेज पासिंग और गेंद पर नियंत्रण के दम पर वह विपक्षी टीम को खेल से बाहर कर देती है। युवा स्टार लामिन यमाल लगातार शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं, जबकि रोड्री पूरे मिडफील्ड को नियंत्रित करते हैं। फाबियन रुइज और मिकेल मेरिनो भी शानदार फॉर्म में हैं। गोलकीपर उनाई सिमोन ने टूर्नामेंट में लगातार 650 मिनट तक गोल नहीं खाकर नया रिकॉर्ड बनाया था। यह रिकॉर्ड बेल्जियम के खिलाफ जाकर टूटा।

इन खिलाड़ियों पर रहेंगी नजरें

लामिन यमाल (युवा विंगर - विपक्षी डिफेंस के लिए सबसे बड़ा सिरदर्द)
रोड्री (मिडफील्ड जनरल - पूरी टीम के गेम को कंट्रोल करने वाले)
फाबियन रुइज और मिकेल मेरिनो (इन-फॉर्म मिडफील्डर)
उनाई सिमोन (गोलकीपर - जिन्होंने टूर्नामेंट में लगातार 650 मिनट तक कोई गोल न खाने का नया रिकॉर्ड बनाया)

इंग्लैंड (फीफा रैंकिंग-4): स्टार जनरेशन के सामने ट्रॉफी घर लाने का मौका

इंग्लैंड ने नॉर्वे को अतिरिक्त समय में हराकर 2018 के बाद पहली बार विश्व कप के सेमीफाइनल में जगह बनाई है। टीम की सबसे बड़ी ताकत उसका अटैकिंग मिडफील्ड है। जूड बेलिंगहम शानदार फॉर्म में हैं और क्वार्टर फाइनल में दो गोल कर टीम को जीत दिला चुके हैं। हैरी केन की कप्तानी और अनुभव इंग्लैंड की सबसे बड़ी पूंजी है। एजे, नोनी और बुकायो साका विपक्षी डिफेंस को लगातार चुनौती देते हैं, जबकि जॉर्डन पिकफोर्ड गोलपोस्ट के सामने भरोसेमंद साबित हुए हैं। इंग्लैंड की नजर अब 1966 के बाद पहली बार विश्व कप ट्रॉफी जीतने पर है।

इन खिलाड़ियों पर रहेंगी नजरें

जूड बेलिंगहम (क्वार्टर फाइनल में दो गोल दागकर टीम को जिताने वाले स्टार मिडफील्डर अब तक कुल 7 गोल दाग चुके)
हैरी केन (कप्तान और वर्ल्ड-क्लास स्ट्राइकर और अब तक 6 गोल दाग चुके)
डेक्लान राइस और बुकायो साका (बेहतरीन मिडफील्डर और क्रिएटिव विंगर)
जॉर्डन पिकफोर्ड (गोलकीपर)

कैसे होंगे मुकाबलें?

पहले सेमीफाइनल में फ्रांस और स्पेन आमने-सामने होंगे। एक ओर एमबाप्पे की रफ्तार होगी तो दूसरी ओर स्पेन का बॉल पजेशन और पासिंग गेम। यह मुकाबला रणनीति और कौशल की कड़ी परीक्षा माना जा रहा है। दूसरे सेमीफाइनल में अर्जेंटीना और इंग्लैंड के बीच रोमांच चरम पर रहने की उम्मीद है। मेसी का अनुभव और अर्जेंटीना का बड़े मैचों का रिकॉर्ड इंग्लैंड की युवा टीम के सामने बड़ी चुनौती होगा।वहीं जूड बेलिंगहम और हैरी केन की जोड़ी अर्जेंटीना के डिफेंस की परीक्षा लेगी। अर्जेंटीना के लिए यही काम मेसी, अल्वारेज और लिसांद्रो मार्टिनेज करते दिखेंगे।

कौन बनाएगा फाइनल में जगह?

चारों टीमों ने शानदार प्रदर्शन किया है और हर टीम के पास विश्व कप जीतने का दम है। अब छोटी-सी गलती भी भारी पड़ सकती है। सेमीफाइनल में मानसिक मजबूती, रणनीति और बड़े खिलाड़ियों का प्रदर्शन ही तय करेगा कि विश्व कप फाइनल में कौन-सी दो टीमें आमने-सामने होंगी।

मध्यप्रदेश में बिल्डिंग परमिशन लेना हुआ आसान

तीन विभागों की एनओसी खत्म

भोपाल। मध्यप्रदेश सरकार ने भवन निर्माण अनुमति (बिल्डिंग परमिशन) की प्रक्रिया को सरल और समयबद्ध बनाने की दिशा में बड़ा फैसला लिया है। अब घर या व्यावसायिक भवन बनाने के लिए सहकारिता, बिजली और नजूल विभाग से अनापत्ति प्रमाण-पत्र (एनओसी) लेने की अनिवार्यता समाप्त कर दी गई है। इसके साथ ही कई मामलों में स्व-घोषणा (सेल्फ डिक्लेरेशन) और ऑनलाइन सत्यापन की व्यवस्था लागू की जाएगी।

नगरीय विकास एवं आवास विभाग का मानना है कि इस फैसले से नागरिकों, निवेशकों और बिल्डर्स को अनावश्यक विभागीय चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। साथ ही प्रदेश में ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को भी बढ़ावा मिलेगा और भवन अनुमति से जुड़े मामलों का तेजी से निराकरण हो सकेगा। विभाग ने वर्तमान में लागू विभिन्न प्रकार की एनओसी व्यवस्था की समीक्षा के बाद तीन प्रमुख विभागों से एनओसी लेने की अनिवार्यता समाप्त कर दी है। अब भवन निर्माण अनुमति के लिए सहकारिता विभाग/गृह निर्माण सहकारी समिति की एनओसी, बिजली विभाग की एनओसी और नजूल विभाग का अनापत्ति प्रमाण-पत्र की मंजूरी की आवश्यकता नहीं होगी इस निर्णय से भवन निर्माण की प्रक्रिया में लगने वाला समय काफी कम होने की उम्मीद है।

कई मामलों में सेल्फ डिक्लेरेशन होगा पर्याप्त

सरकार ने कुछ अन्य मामलों में एनओसी के स्थान पर स्व-घोषणा और ऑनलाइन सत्यापन की व्यवस्था लागू करने का निर्णय लिया है। यह व्यवस्था मुख्य रूप से रक्षा प्रतिष्ठान (डिफेंस एस्टेब्लिशमेंट), मध्य प्रदेश गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल (एमपी हाउसिंग बोर्ड)और विभिन्न विकास प्राधिकरण से संबंधित मामलों में लागू होगी। इससे आवेदकों को अलग-अलग कार्यालयों से अनुमति लेने की आवश्यकता काफी हद तक समाप्त हो जाएगी।

विशेष मामलों में होगा ऑटोमेटेड सत्यापन

कुछ संवेदनशील मामलों में एनओसी की प्रक्रिया पूरी तरह समाप्त नहीं की गई है, बल्कि उसे डिजिटल और स्वचालित बनाया जाएगा। जरूरत पड़ने पर सिस्टम स्वतः जांच करेगा कि संबंधित अनुमति आवश्यक है या नहीं। यह व्यवस्था एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया, राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण और विरासत एवं धरोहर विभाग से जुड़े मामलों में लागू होगी। केवल आवश्यकता होने पर ही संबंधित विभाग से अनुमति मांगी जाएगी। शेष एनओसी प्रक्रियाओं को भी पहले की तुलना में अधिक स्पष्ट, सरल और व्यवस्थित बनाया गया है ताकि तकनीकी कारणों से फाइलें अनावश्यक रूप से लंबित न रहें। सरकार के अनुसार नई व्यवस्था से कई स्तरों पर फायदा होगा। भवन अनुमति मिलने में कम समय लगेगा। अनावश्यक कागजी कार्रवाई और विभागों के चक्कर खत्म होंगे। रियल एस्टेट और निर्माण क्षेत्र में निवेश को बढ़ावा मिलेगा। ऑनलाइन सत्यापन से पारदर्शिता बढ़ेगी और भ्रष्टाचार की संभावना कम होगी। निर्धारित समय-सीमा में प्रकरणों का निपटारा हो सकेगा। नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने स्पष्ट किया है कि अब केवल उन्हीं विभागों से एनओसी ली जाएगी, जिनका प्रावधान संबंधित कानून, नियम या शासन के स्पष्ट निर्देशों में होगा।

मध्यप्रदेश में देश का पहला डिजिटल प्रॉपर्टी प्लेटफॉर्म

भोपाल (नगर संवाददाता)

हर संपत्ति को मिलेगी यूनिक डिजिटल आईडी

भोपाल। मध्यप्रदेश शहरी संपत्तियों के डिजिटलीकरण की दिशा में देश का पहला बड़ा प्रयोग करने जा रहा है। राज्य सरकार ऐसा एकीकृत डिजिटल प्रॉपर्टी रजिस्ट्री प्लेटफॉर्म तैयार कर रही है, जहां किसी भी संपत्ति से जुड़ी लगभग सभी सरकारी जानकारियां और सेवाएं एक ही पोर्टल पर उपलब्ध होंगी। हर संपत्ति को आधार या समग्र आईडी से लिंक कर यूनिक डिजिटल प्रॉपर्टी आईडी दी जाएगी।

नगरीय प्रशासन एवं आवास विभाग द्वारा विकसित किए जा रहे इस यूनिफाइड डिजिटल प्रॉपर्टी रजिस्ट्री ट्रैकिंग पोर्टल का उद्देश्य संपत्तियों का पारदर्शी डिजिटल रिकॉर्ड तैयार करना, अवैध कॉलोनियों पर निगरानी रखना और शहरी विकास से जुड़ी प्रक्रियाओं को पूरी तरह ऑनलाइन बनाना है। पोर्टल का विकास मध्यप्रदेश स्टेट इलेक्ट्रॉनिक्स डेवलपमेंट कॉरपोरेशन कर रहा है।

नई व्यवस्था लागू होने के बाद नागरिक अपनी यूनिक प्रॉपर्टी आईडी के माध्यम से संपत्ति से जुड़ी सभी जानकारी एक ही प्लेटफॉर्म पर देख सकेंगे। इसमें संपत्ति का स्वामित्व, भवन अनुमति, कॉलोनी की वैधता, संपत्ति कर, रजिस्ट्री, भूमि उपयोग, बैंक ऋण और अन्य आवश्यक रिकॉर्ड उपलब्ध रहेंगे। सरकार का मानना है कि इससे फर्जीवाड़े पर अंकुश लगेगा, संपत्ति संबंधी विवाद कम होंगे और विभिन्न विभागों में बिखरी जानकारी एक स्थान पर उपलब्ध हो सकेगी।

कॉलोनाइजरों की भी बनेगी आईडी

पोर्टल में केवल संपत्तियां ही नहीं, बल्कि कॉलोनाइजरों की भी यूनिक डिजिटल आईडी बनाई जाएगी। कॉलोनाइजर पंजीयन, कॉलोनी विकास की अनुमति, भवन निर्माण स्वीकृति और कॉलोनी सेल की मंजूरी जैसी पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन होगी। इस व्यवस्था के बाद कॉलोनाइजर ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे, आवेदन की स्थिति ट्रैक कर पाएंगे।

इन सेवाओं का होगा एकीकरण

एक ही पोर्टल पर कई विभागों और प्रणालियों को जोड़ा जाएगा, जिनमें प्रमुख रूप से-रेरा, टाउन एंड कंट्री प्लानिंग, भवन निर्माण अनुमति प्रणाली, ई-नगरपालिका, संपदा 2.0 के रजिस्ट्री रिकॉर्ड, संपत्ति कर, स्वामित्व रिकॉर्ड, भूमि उपयोग संबंधी जानकारी और बैंक ऋण से जुड़ी जानकारी शामिल है।

इंदौर-ग्वालियर से होगी शुरुआत

विभाग के अनुसार अगले एक-दो महीने में पोर्टल तैयार होने की संभावना है। इसके बाद भोपाल, इंदौर और ग्वालियर नगर निगम में इसे पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू किया जाएगा। इन शहरों का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि यहां ऑनलाइन भवन अनुमति प्रणाली पहले से संचालित है या लागू होने की प्रक्रिया में है। यदि पायलट सफल रहा तो इसे प्रदेश के सभी 413 शहरी निकायों में चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाएगा। शहरी प्रशासन विभाग के अनुसार वर्ष 2016 में प्रदेश में लगभग 9,891 अवैध कॉलोनियां चिन्हित थीं। विभाग का अनुमान है कि वर्तमान में इनकी संख्या बढ़कर 30 हजार से अधिक हो चुकी है। केवल भोपाल में ही 900 से ज्यादा अवैध कॉलोनियां होने का अनुमान है, जबकि करीब एक दशक पहले इनकी संख्या लगभग 320 थी। सरकार का मानना है कि नई डिजिटल प्रणाली के जरिए अवैध कॉलोनियों की पहचान, निगरानी और कार्रवाई पहले की तुलना में अधिक प्रभावी ढंग से की जा सकेगी।

सांसी गैंग से जुड़ा है आरोपी

शातिर चोर 11 साल बाद गिरफ्तार

भोपाल (नगर संवाददाता)

ट्रेनों और रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों के बैग काटकर चोरी करने वाले कुख्यात सांसी गैंग के एक फरार बदमाश को भोपाल रेल पुलिस ने 11 साल बाद गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी सत्यभान सांसी उर्फ सत्यभान महेंद्र सांसी (40), निवासी भिवानी (हरियाणा), पर 15 स्थायी और गिरफ्तारी वारंट लंबित थे। पुलिस ने उसकी गिरफ्तारी पर 54 हजार रुपये का इनाम घोषित किया था। पुलिस के अनुसार आरोपी सांसी गैंग का सक्रिय सदस्य है। यह गिरोह ट्रेनों

के जनरल और स्लीपर कोच में यात्रियों के बैग को ब्लेड या चाकू से काटकर नकदी, जेवर और कीमती सामान चोरी करता था। गिरोह ने मध्यप्रदेश सहित राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और असम में कई वारदातों को अंजाम दिया। भोपाल जीआरपी ने पुराने मामलों में फरार आरोपियों की धरपकड़ के लिए अभियान चलाया था। इसी दौरान साइबर सेल की मदद से आरोपी की मोबाइल लोकेशन ट्रेस की गई। जांच में पता चला कि वह असम के गुवाहाटी में एक अपराध के मामले में जेल में बंद है। इसके बाद न्यायालय से प्रोडक्शन वारंट लेकर उसे भोपाल लाया गया। जीआरपी के मुताबिक सत्यभान पर चोरी, आदतन अपराध और साक्ष्य छिपाने सहित कई गंभीर धाराओं में मामले दर्ज हैं। उसकी गिरफ्तारी को पुलिस ने बड़ी सफलता बताया है।

लाखों रुपए का माल समेट ले गए चोर

भोपाल। बीते चौबीस घंटों के दौरान दो स्थानों पर चोरी की घटनाएं हुई हैं। इस संबंध में शाहपुरा और अशोका गार्डन पुलिस मामले की जांच कर रही है। चोर घर से सोने-चांदी के जेवरात और स्टेशनरी गोदाम से लाखों रुपए का माल ले गए हैं। शाहपुरा पुलिस के अनुसार 28 वर्षीय रोहित नगर निवासी चंदन कुशवाहा जानकी अस्पताल के सामने होटल का संचालन करते हैं। चोरी की वारदात शनिवार सुबह हुई थी। उनकी पत्नी सुबह साढ़े नौ बजे ताला लगाकर बच्चे के स्कूल में आयोजित बैठक में शामिल होने गई थी।

संतान सुख का झांसा देकर चार महिलाओं ने जेवरात उतरवाए

जेवरात बरामद कई अन्य वारदात में चल रही पूछताछ

■ घेराबंदी कर आरोपी महिलाओं को पुलिस ने दबोचा

भोपाल (नगर संवाददाता)

दंपति को संतान सुख का झांसा देकर उनसे जेवरात ऐंठ लिए गए। घटना परवलिया सड़क थाना क्षेत्र में हुई। जिसमें प्रकरण दर्ज करके पुलिस ने जालसाजी करने वाली चार महिलाओं को हिरासत में ले लिया है। पुलिस उनसे पूर्व में हुई घटनाओं के संबंध में भी पूछताछ कर रही है।

पुलिस के अनुसार 32 वर्षीय बबीता बाई गौड़ की दस साल पहले शादी हुई थी। शादी के बाद उसे अभी तक कोई बच्चा नहीं हुआ है। वह ग्राम झिरनिया के नई बस्ती में रहती हैं। घटना शनिवार दोपहर हुई थी। उनके घर दो महिलाएं आई। उन्होंने जड़ी-बूटी बेचने का झांसा दिया। उसे बताया गया कि वह कमजोर है और वह उसे दवा देकर ठीक कर सकती हैं। उन्होंने संतान सुख समेत अन्य परेशानी से हल निकालने अनुष्ठान कराने प्रस्ताव रखा। जिसके लिए आरोपी महिलाओं ने 1100 रुपए की मांग रखी। रकम लेकर उन्हें दो पुड़िया जड़ी-बूटी की बताकर थमा दी। इसके बाद जालसाज महिलाओं ने कहा कि विश्राम घाट में तंत्र विद्या के नाम पर पहना हुआ चांदी का मंगलसूत्र, पायल और बिछिया उतरवा ली। उनका कहना था कि यह जेवरात उसे अनुष्ठान संपन्न होने के बाद वापस मिल जाएंगे।

पति शाम को जब घर लौटा तो उसने पूरी कहानी बताई। जिसके बाद पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर मामले में संदेही दो महिलाओं को हिरासत में लिया। जिन्होंने घटना में शामिल दो अन्य महिलाओं की भूमिका का भी खुलासा किया।

आरोपियों की पहचान गांधी नगर गौड़ बस्ती निवासी बीना बाई गौड़, चिकला बाई गौड़, निकरा बाई और शीला बाई गौड़ के रूप में हुई। आरोपी महिलाएं फेरी लगाकर जड़ी-बूटी बेचती है। इसी धंधे की आड़ में वह अपने शिकार की जानकारी जुटाकर ठगी की वारदातों को अंजाम देती हैं।

ट्विशा मौत केस : एक महीने तक चले वैज्ञानिक परीक्षण के बाद तैयार हुई रिपोर्ट

भोपाल (नगर संवाददाता)

ट्विशा शर्मा मौत मामले में कथित तौर पर फांसी में इस्तेमाल की गई जिम बेल्ट पर स्किन टिश्यू मिलने की पुष्टि हुई है। साथ ही बेल्ट पर मौजूद निशानों और ट्विशा की गर्दन पर मिले लिगेचर मार्क के बीच वैज्ञानिक समानता भी पाई गई है। हालांकि रिपोर्ट फिलहाल सार्वजनिक नहीं की गई है और इसे केवल जांच एजेंसी के उपयोग के लिए सुरक्षित रखा गया है। जानकारी के अनुसार मेडिकल बोर्ड ने 24 मई को दोबारा पोस्टमॉर्टम करने के साथ घटनास्थल का निरीक्षण भी किया था। इसके बाद हिस्टोपैथोलॉजिकल, फॉरेंसिक और अन्य लैब परीक्षणों सहित विभिन्न वैज्ञानिक जांच करीब एक महीने तक चलीं। सभी निष्कर्षों को संकलित कर 10 जुलाई को अंतिम रिपोर्ट सीबीआई को सौंपी गई। इसकी अनुपालन प्रति मध्यप्रदेश हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार जनरल को भी भेजी गई है।

जांच में साबित होगी भूमिका

दिल्ली एम्स के फॉरेंसिक मेडिसिन विभागाध्यक्ष डॉ. सुधीर गुप्ता ने रिपोर्ट की सामग्री पर कोई टिप्पणी करने से इनकार किया है। उनका कहना है कि मेडिकल बोर्ड ने उपलब्ध सभी साक्ष्यों और वैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर निष्कर्ष तैयार किए हैं। चूंकि मामला न्यायालय के निर्देशों के तहत विचाराधीन है, इसलिए रिपोर्ट सार्वजनिक नहीं हो सकती। यह रिपोर्ट सीबीआई की आगे की जांच में महत्वपूर्ण वैज्ञानिक साक्ष्य साबित होगी।

उच्च न्यायालय के आदेश पर हुआ था दूसरा पोस्टमॉर्टम

12 मई की रात भोपाल के कटारा हिल्स स्थित रिटायर्ड जज गिरिबाला सिंह के घर में ट्विशा शर्मा मृत अवस्था में मिली थीं। ससुराल पक्ष ने इसे आत्महत्या बताया था, जबकि मायके पक्ष ने हत्या का आरोप लगाते हुए शुरुआती जांच और पहले पोस्टमॉर्टम पर गंभीर सवाल उठाए थे। इसके बाद परिजनों ने मध्यप्रदेश हाईकोर्ट का रुख किया। कोर्ट ने मामले की निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करने के लिए दिल्ली एम्स से दूसरा पोस्टमॉर्टम कराने और बाद में जांच सीबीआई को सौंपने के निर्देश दिए थे।

ऐशबाग दोहरे हत्याकांड में सत्रह दिन बाद भी पुलिस के खाली हाथ

मृतक हेमंत फिलेमोन और पत्नी शकुंतला बारीक

ऐशबाग स्थित डॉ. भीमराव अंबेडकर कॉलोनी में हुए हेमंत फिलेमोन और उनकी पत्नी शकुंतला बारीक के दोहरे हत्याकांड की जांच 17 दिन बाद भी किसी ठोस नतीजे तक नहीं पहुंच पाई है। पुलिस संपत्ति विवाद को हत्या की वजह मानकर जांच कर रही थी, लेकिन अब तक कोई पुख्ता साक्ष्य सामने नहीं आया है। मामले की जांच के लिए गठित एसआईटी में कई अधिकारी शामिल हैं, फिर भी कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर सवाल उठ रहे हैं। जांच में सामने आया है कि हत्या से करीब दो सप्ताह पहले 10 जून को शकुंतला बारीक का मोबाइल चोरी हुआ था। यह मोबाइल सुभाष नगर अंडरब्रिज के पास एसबीआई एटीएम क्षेत्र से चोरी हुआ था। बताया जा रहा है कि मोबाइल का डेटा भी मिटा दिया गया था। वहीं, हेमंत फिलेमोन का मोबाइल भी हत्या के बाद कजलीखेड़ा क्षेत्र में फेंका गया था और उसका डेटा डिलीट किया गया था। पुलिस अब इन तकनीकी पहलुओं की जांच कर रही है।

पति-पत्नी के रिश्तों में भी थे मतभेद- जांच में यह भी सामने आया है कि हेमंत और शकुंतला के रिश्तों में पहले तनाव रहा था। वर्ष 2001 में मामला महिला थाने तक पहुंचा था।

परिजनों से पूछताछ, लेकिन नहीं मिले ठोस सबूत

विनोद बारीक और उनकी पत्नी शिबानी बारीक

पुलिस की जांच शकुंतला के भाई विनोद बारीक और उनकी पत्नी शिबानी बारीक तक भी पहुंची है। दोनों से कई बार पूछताछ की जा चुकी है। उनका कहना है कि पुलिस के पास हत्या से जुड़े कोई ठोस प्रमाण नहीं हैं और केवल आर्थिक स्थिति के आधार पर संदेह किया जा रहा है। परिजनों के अनुसार, परिवार पर कर्ज जरूर था, लेकिन इसकी वजह बेटे की बीमारी और उसके इलाज व करियर से जुड़ा खर्च था। उन्होंने हत्या में अपनी भूमिका से इनकार किया है।

भोपाल। बीएचईएल खेल-कूद परिसर की हरियाली में स्वच्छंद विचरण करता राष्ट्रीय पक्षी मोर, जो परिसर की समृद्ध जैव विविधता और प्राकृतिक सौंदर्य की खूबसूरत तस्वीर पेश करता है।

उच्च शिक्षा 2.61 लाख खाली सीटें भरने कॉलेजों में लगे प्रवेश मेले, अब विद्यार्थियों को फोन कर बुला रहे प्राचार्य

6.53 लाख पंजीयन, 2.52 लाख ने प्रवेश में नहीं दिखाया रुझान

भोपाल (नगर संवाददाता)

प्रदेश में उच्च शिक्षा विभाग की प्रवेश प्रक्रिया अंतिम चरण में पहुंच गई है, लेकिन विद्यार्थियों का अपेक्षित रुझान अब-तक नहीं दिखा है। प्रवेश प्रक्रिया शुरू होने से लेकर अभी जारी अतिरिक्त सीएलसी राउंड के तहत 11 जुलाई तक करीब 6. 53 लाख विद्यार्थियों ने ई-प्रवेश पोर्टल पर पंजीयन कराया, लेकिन इनमें से लगभग 4 लाख विद्यार्थियों ने ही प्रवेश लिया। यानी 2 . 52 लाख से अधिक पंजीकृत विद्यार्थियों ने प्रवेश नहीं लिया। इसका नतीजा यह है कि प्रदेश के महाविद्यालयों में उपलब्ध 6 लाख 61 हजार 341 सीटों में से 2 लाख 61 हजार 135 सीटें अभी भी खाली हैं। इन रिक्त सीटों को भरने के लिए उच्च शिक्षा विभाग द्वारा इस माह 8 से 15 जुलाई तक सभी शासकीय, अशासकीय और निजी महाविद्यालयों में प्रवेश मेला आयोजित कराया जा रहा है।

इस अतिरिक्त कॉलेज लेवल काउंसिलिंग (ष्टष्ट) राउंड के लिए विभाग ने प्राचार्यों से कहा है कि जिन विद्यार्थियों का पंजीयन, दस्तावेज सत्यापन अथवा शुल्क भुगतान लंबित है, उनसे दूरभाष (मोबाइल) पर संपर्क कर प्रवेश मेले में बुलाया जाए। विद्यार्थी के कॉलेज पहुंचते ही उसी दिन पंजीयन, चॉइस फिलिंग, दस्तावेज सत्यापन, सीट आवंटन और शुल्क भुगतान की प्रक्रिया पूरी कर प्रवेश सुनिश्चित कराया जाए।

जिला नोडल अधिकारी की निगरानी में प्रवेश की प्रगति रिपोर्ट

विभाग ने महाविद्यालयों को स्थानीय विद्यालयों, पालकों, जनप्रतिनिधियों और पूर्व विद्यार्थियों के माध्यम से भी अधिक से अधिक अभ्यर्थियों तक प्रवेश मेले की जानकारी पहुंचाने के निर्देश दिए हैं। साथ ही विषयवार एवं श्रेणीवार रिक्त सीटों की जानकारी प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित करने, पर्याप्त अधिकारियों-कर्मचारियों की ड्यूटी लगाने तथा प्रतिदिन की प्रगति रिपोर्ट जिला नोडल अधिकारी को भेजने के निर्देश भी जारी किए गए हैं। अधिक रिक्त सीट वाले महाविद्यालयों की अलग से मॉनिटरिंग की जाएगी, ताकि 15 जुलाई तक अधिकतम सीटों पर प्रवेश सुनिश्चित हो सके। विभागीय आंकड़ों के अनुसार11 जुलाई तक 5 लाख 65 हजार 576 आवेदनों का सत्यापन पूरा हो चुका है। इनमें से यूजी के 2,87,564, पीजी के 85,909 और एनसीटीई पाठ्यक्रमों के 26,733 विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है।

ई-प्रवेश की स्थिति (11 जुलाई 2026 तक)

	यूजी	पीजी	एनसीटीई	कुल
कुल सीटें	4,55,773	1,42,231	63,337	6,61,341
कुल पंजीयन	4,01,967	1,36,650	1,14,486	6,53,103
दस्तावेज सत्यापन	3,58,210	1,17,106	90,260	5,65,576
कुल प्रवेश	2,87,564	85,909	26,733	4,00,206

प्रवेश मेले के लिए प्राचार्यों को दिए गए निर्देश

- 8 से 15 जुलाई तक सुबह 10 से शाम 5 बजे तक प्रवेश मेला आयोजित करें।
- विद्यार्थियों का उसी दिन पंजीयन, चॉइस फिलिंग, दस्तावेज सत्यापन, सीट आवंटन और शुल्क भुगतान सुनिश्चित करें।
- पंजीयन, सत्यापन या शुल्क भुगतान लंबित विद्यार्थियों को मोबाइल/दूरभाष पर संपर्क कर कॉलेज बुलाएं।
- स्थानीय विद्यालयों, पालकों, जनप्रतिनिधियों एवं पूर्व विद्यार्थियों के माध्यम से अधिकाधिक अभ्यर्थियों तक जानकारी पहुंचाएं।
- विषयवार एवं श्रेणीवार रिक्त सीटों की जानकारी प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित करें।
- प्रत्येक दिन की प्रगति रिपोर्ट जिला नोडल अधिकारी को भेजें।
- अधिक रिक्त सीट वाले महाविद्यालयों की विशेष मॉनिटरिंग कर ''अधिकतम प्रवेश, उसी दिन प्रवेश'' सुनिश्चित करें।

प्रवेश प्रक्रिया में शामिल प्रदेश भर के महाविद्यालय

श्रेणी	संख्या
शासकीय	566
निजी	614
अनुदान प्राप्त	65
अन्य (TD, RSK, CRC)	28
सहित कुल महाविद्यालय	1,249
एनसीटीई महाविद्यालय	752

साइक्लिंग कर दिया फिटनेस का संदेश

भोपाल (नगर संवाददाता)

आमतौर पर फाइलों, बैलेंस शीट, टैक्स ऑडिट और वित्तीय दस्तावेजों में व्यस्त रहने वाले चार्टर्ड अकाउंटेंट्स रविवार को फिटनेस का संदेश लेकर सड़क पर उतरे। द इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (आईसीएआई) की भोपाल शाखा ने स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (साई) के सहयोग से साइक्लिंग रैली आयोजित की, जिसमें करीब 100 चार्टर्ड अकाउंटेंट्स, सीए विद्यार्थियों और उनके परिवारों ने भाग लिया।

साई परिसर से शुरू हुई रैली शूटिंग अकादमी तक पहुंची और वापस साई परिसर लौटकर संपन्न हुई। रैली के माध्यम से प्रतिभागियों ने लोगों से नियमित व्यायाम अपनाने और फिट इंडिया, हेल्दी इंडिया अभियान से जुड़ने का आह्वान किया। आईसीएआई भोपाल शाखा के अध्यक्ष सीए आदित्य पी. श्रीवास्तव ने कहा कि नियमित व्यायाम और शारीरिक सक्रियता स्वस्थ जीवन की सबसे बड़ी जरूरत है।

स्वामी, मुद्रण, प्रकाशक एवं संपादक **आशीष दुबे** द्वारा सांई प्रिंटर्स, म. नं. 91, शाप नं. 3, जिन्सी पुलिस चौकी के पास जहांगीराबाद, भोपाल से मुद्रित एवं टी-2, बालाजी टावर, मधुवन बिहार कालोनी मिसरोद भोपाल से प्रकाशित। समस्त विवादों का न्यायालय भोपाल रहेगा।